Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु गोबिन्द सिंह जी
जीवन एवं दर्शन

ज्ञान सिंह [illegible]न

Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु गोबिन्द सिंह जी

जीवन एवं दर्शन

ज्ञान सिंह [illegible]न

[illegible]blic Dom[illegible] Funding by [illegible]S-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी

जीवन एवं दर्शन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

at- 27600
2-02-13

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

197
A152

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी

जीवन एवं दर्शन

سری گورو گوبند سنگھ جی
جیون اور درشن

डॉ॰ ज्ञान सिंह मान
पूर्व प्रिंसिपल सरकारी कॉलेज,
लुधियाना

گیان سنگھ مان

کلاسیکل پبلیکیشن

क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
नई दिल्ली– 110 015

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो शब्द

दशमेश पिता, सन्त सिपाही गुरु गाबिन्द सिंह जी मानवता नारी मूल्यों के संरक्षक तथा खालसा पंथ के संस्थापक, महान योद्धा एवं युग–स्रष्टा थे। इन्होंने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। देश के प्राचीन गौरव तथा धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने जिस अदम्य साहस, अद्‌भुत वीरता और त्याग का प्रकटीकरण किया वह समूचे विश्व इतिहास में अपना नहीं रखता। राजनीतिक दमन और बर्बर अत्याचार के युग में उन्होंने सामान्य जन–जीवन में नव चेतना, दैवी शक्ति तथा अलौकिक संकल्प का संचार करने के लिए अपने सर्व वंश को लोक कल्याण के लिए अर्पित कर दिया। वे सच्चे अर्थों में अकाल पुरुष के सन्देश वाहक भक्ति–शक्ति और साहित्य साधना के संगम तथा 'सरबंस दानी' थे।

ऐसी दिव्य विभूति के जीवन और दर्शन पर प्रस्तुत यह रचना हमारी ओर से मात्र एक श्रद्धा पुष्प है। हम अत्यन्त विनम्रता और ह्रदय से उन समस्त ग्रन्थकारों विद्वानों तथा दार्शनिकों के आभारी है जिनकी प्रेरणादायक सामग्री का विधिवत सद्उपयोग इस ग्रन्थ में किया गया है। हम विशेष रूप से अभारी और ऋणि हैं :

(i) गुरु गोबिंद सिंह विशेष अंक – पंजाब सौरभ 1987 भाषा विभाग पंजाब।
(ii) सिक्ख इतिहास प्रो॰ करतार सिंह एम॰ ए॰ शि॰ गु॰ प्र॰ कमेटी अमृतसर।
(iii) गुरु गोबिन्द सिंह – जे॰ एस॰ ग्रेवाल तथा एस॰ एस॰ बल–पंजाब वि॰ वि॰ चण्डीगढ़ 1967।
(iv) ए॰ ब्रीफ अकाउंट ऑफ दी सिक्खस्‌ डॉ॰ गण्डा सिंह–शि॰ गु॰ प्र॰ कमेटी।
(v) सिक्ख गुरुओं की शैक्षणिक देन (यूनीस्टार)।
(vi) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब–एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण–डॉ॰ मनमोहन सहगल भाषा विभाग पंजाब।
(vii) गुरु ग्रन्थ साहिब–सम्पादन युक्ति डॉ॰ सरबजिंदर सिंह–व॰ वि॰ पटियाला।

लेखक अपने उन समस्त सम्यक सूत्रों का ऋणि और धन्यवादी है जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय और प्रेरणादायक सहयोग से मेरा उत्साह वर्धन किया। मैं विशेष रूप से अभारी हूँ अपने चिर सहयोगी एवं अन्तरंग सुभाकाक्षी प्रो॰ यशपाल सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जी का जिनके विशिष्ट स्पर्श के अभाव में मेरी कोई कृति अपने अंतिम आकार को ग्रहण नहीं करती। मैं हृदय से शुक्रगुजार हूँ अपनी धर्मपत्नी डॉ॰ वीणा ज्ञान सिंह (पी॰ एच॰ डी॰ डी॰ लिट्) का जो मेरी साहित्यिक सर्जना में समय–समय मूल्यावान संकेत देती है तथा हर अवसर पर प्रत्येक सुख सुविधा प्रदान करती हैं, जो किसी भी लेखन की निरन्तरता के लिए अपेक्षित है। मैं अपने सात्त्वि कर्त्तव्य से विमुख हो रहा हूँ यदि मैं इस अवसर पर अस्मीय शिष्या कु॰ जगजीत कौर तथा कु॰ वंदना धीर को स्मरण नहीं करता जिन की पूर्ण निष्ठा और सहयोग के अभाव में इस कृति की कल्पना मेरे लिए आकाश–पुण्य जैसा था।

अन्त में अत्यन्त श्रद्धा भाव से मैं क्लांसिकल पब्लिशिंग कम्पनी के प्रबंधक श्री॰ बी॰ के॰ तनेजा जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी निरन्तर प्रेरणा, उत्साह सद्भावना और सहयोग से यह रचना सहृदय पाठकों तक पहुँच पाई है, अस्तु

डॉ॰ ज्ञान सिंह मान
पूर्व प्रिंसिपल सरकारी
कालेज लुधियाना
पूर्व सदस्य
हिन्दी सलाहकार समिति
भारत सरकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुक्रमणिका

दो शब्द .... (v)

पहला अध्याय

जन्म एवं स्थान, ... 9

दूसरा अध्याय

गुरुता 14

तीसरा अध्याय

खालसा पंथ सजाने का निर्णय 29

चौथा अध्याय

प्रमुख युद्ध एवं संघर्ष 27

पाँचवा अध्याय

पहाड़ी राजाओं का विरोध 49

छठा अध्याय

त्यागी–अद्वितीय भेंट 53

सातवाँ अध्याय

होला महल्ला का महत्त्व 64

आठवाँ अध्याय

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के शिक्षा संबधी विचार 69

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाँ अध्याय

गुरु जी का हिन्दी साहित्य 90

दसवाँ अध्याय

श्री गुरु गाबिन्द सिंह जी–विद्वानों की दृष्टि में...............107

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहला अध्याय

जन्म एवं स्थान

पंथ के रक्षक, श्री कलगीधर, दशमेश पिता, श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का अवतार श्री हरिमन्दिर साहिब, पटना, बिहार में पौष शुक्ल 7(23 पौष) सम्वत् 1723, तद्नुसार 22दिसम्बर सन् 1666 को माता गुजरी जी की कोख से हुआ। उस समय आपके पिता–गुरुदेव, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब ढाका(पूर्वी बंगाल, बंगला देश) में थे। गुरुजी ने वहाँ से पटना साहिब की संगत के नाम हुक्मनामा (पत्र) भेजा। जिसमें परिवार की सेवा संभाल के बारे में उनको आशीर्वाद दिया और आज्ञा दी कि साहबजादे का नाम श्री गोबिन्द राय रखा जाये। तत्पश्चात् सम्वत् 1756 को वैसाखी वाले दिन आपने पाँच प्यारों को अमृत पान कराया और स्वयं उनसे अमृतपान करके गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह बन गये। इसी कारण जहाँ भी आप जी का नाम लेने की आवश्यकता पड़ेगी, 'श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी' ही लिखा जायेगा।

विद्या और बाल जीवन

श्री गुरु तेग बहादुर सहिब के आसाम से पंजाब में वापिस आ जाने के पश्चात् भी आपका परिवार कुछ समय पटना साहिब में रहा। श्री दशमेश जी के बचपन के पहले पाँच साल पटना साहिब में व्यतीत किये। संस्कार विधि अनुसार आप जी की पढ़ाई–लिखाई का कार्य वहीं शुरु किया गया। गुरुमुखी और गुरुवाणी की पढ़ाई के साथ–साथ आपको शस्त्रों का प्रयोग ,घुड़सवारी, तैरना आदि की सिखलाई भी दी गई। छोटी आयु से ही योद्धाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जरनैलों वाली रुचियाँ प्रकट होने लगीं। आप अपने बालपन के मित्रों के साथ दो गुट बनाकर, आपस में उनका युद्ध करवाते, उनको आपस में मुकाबला करने का अभ्यास सिखलाते और सबको आज्ञा देकर अपनी जरनैली योग्यता की निशानी प्रकट करते। तीर कमान और गुलेल से बेहतरीन निशाने लगाते। एक व्यापारी श्रृद्धालु ने आपको एक छोटी सी बेड़ी(नाव) प्रदान की, आप इसको गंगा में चप्पुओं के सहारे बड़ी होशियारी के साथ चलाकर अत्यन्त प्रसन्न होते।

पटना में बहुत सारे हिन्दु और मुसलमान श्री गुरु तेग़ बहादुर के श्रृद्धालु थे। इसी कारण वे सब श्री दशमेश जी का अत्यन्त सत्कार करते थे। परंतु आप के निजी गुण भी प्रत्येक को मोहित कर लेते थे। सूझ–बूझ वाले धर्मी व्यक्तियों को बाल गोबिन्द सिंह छोटी आयु से ही ईश्वरीय नूर से भरपूर दिखाई देते थे। पटना का शिवदत्त पण्डित आपको श्री कृष्ण का रुप मानकर सत्कार देता और प्रेम करता था। नबाब रहीम बख्श और नबाब करीम बख्श श्री गुरु तेग बहादुर जी के प्रेमी, श्रृद्धावान थे। वे दोनों ही दशमेश जी के दशर्न से मोहित हो गये। उन्होंने एक गाँव और दो बाग गुरु जी को भेंट किये, वह अब तक तख्त पटना साहिब की जागीरें माने जाते हैं।

आन के उन मुसलमान श्रृद्धालुओं में से एक पीर शाह भीख जी सैयद् भी थे। यह ठसका जिला करनाल के रहने वाले थे। श्री दशमेश जी का जन्म और जन्म स्थान मालूम करके और आपके प्रेमी श्रृद्धालु बनकर यह पंजाब से पटना साहिब पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने रब्बी नूर के साथ भरपूर बालक के दर्शनों के लिये विनती की। उन्हें मुसलमान जानकर मामा जी झिझक गयीं परंतु वह हठ करके बैठ गये कि वह इतने दूर से आये हैं और दर्शन करके ही जायेंगे। उनकी श्रृद्धा को देखकर दशमेश जी को बाहर लाया गया। पीर जी दर्शन करके निहाल हो गये। उन्होंने नम्रता से उनके दर्शन किये और निहाल(धन्य) हुए और गोबिन्द जी के चरणों को स्पर्श किया। फिर उन्होंने बाल गुरु जी के आगे मिठाइयों की दो टोकरियाँ 343 लाकर रखीं।एक हिन्दू 'हलवाई की दुकान से और दूसरी मुसलमान हलवाई की दुकान से मँगवाकर दशमेश जी ने एक–एक हाथ दोनों पर रख दिया।पीर जी ने फिर शीश झुकाया।मुरीद के पूछने पर पीर जी ने बताया कि मैं यह मालूम करना चाहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था कि यह गुरु मुसलमानों का पक्ष लेगा या हिन्दूओं का। इन्होंने मेरे दिल की जानकर दोनों के ऊपर हाथ रखे हैं ओर मुझे यह विश्वास दिलाया है कि आप दोनों की ही रक्षा सम्भाल करेंगे। और दोनों ही आप को एक सम्मान प्रिय होंगे।जब पंजाब से जाते हुए श्री दशमेश जी अम्बाले के पास लखनौर नगर ठहरे हुए थे तो फिर पीर शाह ने ठसके से आकर फिर आप के दर्शन किए।

एक बार की बात है कि किसी प्रेमी सिक्ख ने री दशमेश जी के लिये सोने के दो कड़े भेंट किये। वे कड़े आपके हाथों में पहनाये गयें। शाम के समय आप गंगा किनारे खेल रहे थे।आपने एक कड़ा उतारकर गंगा जी में फेंक दिया। इसे प्श्चात मामा किरपाल जी ने पूछा कि कड़ा कहाँ फेंका है। आप मामा जी को गंगा के किनारे उस स्थान पर ले गये जहाँ खड़े होकर अपना कड़ा दरियां में फैंका था। वहाँ खड़े होकर भोली–भाली सूरत बनाकर आप ने धीरे से कहा,"बताऊँ मामा जी ? यह कहकर आपने दूसरा कड़ा भी दरियां में फेंक दिया ओर कहां,"यहाँ फेंका था।" उस स्थान पर अब गुरुद्वारा गोबिन्द घाट है।

एक दिन दशमेश जी अपने साथियों के साथ खेल रहे थे कि पटने के नबाब की सवारी आ गई चौबेदार ने कहा , बच्चों चुप करके खड़े हो जाओ, नबाब साहब को सलाम करो और उनके आगे शीश झुकाओ।बच्चों के अगुआ श्री दशमेश जी ने कहा, वाह जी!भई मित्र!हमारी सलाम कोई नहीं। अगर करनी है, शीश नहीं झुकाना, बल्कि मुँह चिढ़ाना 345।"जब नबाब पास आया तो समस्त बच्चे उसे मुँह चिड़ाते हुए भाग गए। इस छोटी सी घटना से ही पता चलता है कि आप शुरु से ही कितने बहादुर और निर्भय थे और आप में औरों को अपने साथ लगाने की, अपनी बात मनवाने और अगुवा बनने की कितनी योग्यता थी।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब ने आसाम से वापिस आते ही परिवार को पंजाब की ओर भेजा। आपका आदेश पहुँचने पर माता गुजरी ने परिवार सहित पटना साहिब से चलने की तैयारी की।

दानापुर ,बक्सर, आरा, छोटा मिर्जापुर, बनारस़, प्रयाग, लखनऊ, मथुरा, थानेसर, सहारनपुर आदि स्थानों ओर तीर्थें से होते हुए भादों सम्वत्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

1729 में समस्त परिवार लखनौर नगर पहुँचा, जो अम्बाले के पास है।बाकी परिवार को यहीं उतारकर, श्री दशमेश जी के मामा (श्री किरपाल जी) आगे आनन्दपुर साहिब गए ताकि बाकी के सफर के लिये सबके लिये योग्य सवारी का प्रबन्ध किया जा सके।यहाँ रुकने पर गुरु गोबिन्द सिंह जी का मनपसंद खेल बालपन में झूठे युद्ध करना हुआ करता था।नगर के बालकों की दो टोलियों को आपस में बाँटकर उनको झूठ–मूठ की लड़ाई करने को लगा देते।और फौजी चालों और कसरतों का अभ्यास करवाया करते थे।

आनन्दपुरी जीवन–पहला परित्यागः–

कुछ समय लखनौर में रहते हो गया, तो मामा किरपाल जी घोड़े, रथ आदि सवारियाँ लेकर आ पहुँचे ।समस्त परिवार लखनौर से विदा हुआ।कुछ रातें मार्ग में काटकर आप कीरतपुर पहुँचे।यहाँ आपके स्वर्गवासी ताया जी, श्री सूरजमल जी, के दोनों पौत्र,श्री गुलाब राय और श्री श्यामदास जी ने आपका अत्यन्त आदरपूर्वक स्वागत किया और अपने घर में स्थान दिया। कीरतपुर में आपने बाबा मुरदिता जी, श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब और श्री गुरु हरराय साहिब के पास पहुँचे तो सब नगरीय निवासी पुरुष स्त्रियाँ और बच्चे आप के स्वागत ओर दर्शनों के लिये आये। बहुत भारी जलसे की शक्ल में समस्त जन श्री आनन्दपुर साहिब में दाखिल हुए। समस्त नगर में घर–घर खुसी मनायी गई बौर रात को दीपमाला की गई और आतिशबाजी की। चारों ओर से लोग दर्शनों के लिये इस प्रकार आये जैसे सावन भादों में बादल की घटायें चढ़ आती है।

आनन्दपुर में इस समय श्री दशमेश जी खुशी और सुख से भरपूर, चिन्तारहित जीवन व्यतीत कर रहे थे। माता जी, गुरुदेव पिता जी और मामा जी का हाथ इनके सिर पर था। हजारों सिक्ख इनको देखकर जीते ओर मन लगाकर सेवा करते थे।

श्री गुरु तेगबहादुर जी ने अपने साहिबजादे की शिक्षा– दीक्षा और पालने–सम्भालने के लिये विशेष प्रबंध किये। गुरुमुखी तो आपने माता जी के पास से पहले ही पढ़ ली थी और गुरुवाणी भी अधिकतम पढ़कर कंठस्थ कर ली थी।अब ओर पढ़ाई का प्रबंध किया गया। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाठ विचार और गुरुघर की और विद्या प्राप्ति के लिये आपको मुंशी साहिब चंद्र के पास बैठाया गया।इसके अतिरिक्त संस्कृत और फारसी की पढ़ाई का भी प्रबंध किया गया।फारसी आपने 'मुंशी पीर मुहम्मद सलोह' के पास से पढ़ी। आपकी फारसी में कमाल की विद्वत्ता और निपुणता आनके बादशाह औरंगजेब को लिखे खत, जफरनामा से स्पष्ट प्रकट होती है।शास्त्र विद्या के साथ–साथ आपको प्रत्येक प्रकार की शस्त्र विद्या देने का भी प्रबंध किया गया।तलवार, बंदूक आदि का प्रयोग तीरंदाजी, सवारी, कुश्ती, आदि की अच्छी शिक्षा दी गयी।इस सख्त पढाई सिखलाई के पश्चात जो समय बचता था, वो आप खेलों में व्यतीत करते थे। उनके खेल अक्सर वैसे ही हुआ करते थे, जैसे पटना साहिब में खेला करते थे।वह अपने साथियों को दो टोलियों में बाँट देते थे। एक के अगुवा स्वयं बनते थे और झूठी लड़ाईयाँ करते थे।

इस विषय में दशमेश जी ने बाद में अपनी जीवनी–विचित्र 349 नाटक में इस प्रकार लिखा है–

"मदर देश हमको ले आए
भांत–भांत दाईयन दुलराएं
कीनी अनक भांत तन रच्छा
छीनी भांत भांत की सिच्छा।"

पहली कुर्बानी–श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन का हाल बताते समय यह बताया गया था कि कश्मारी पण्डितों ने कैसे आनन्दपुर पहुँचकर पुकार की थी ओर कैसे दशमेश पिताजी ने अपने पिता गुरुदेव, श्री गुरु तेग बहादुर जी को उन दुखियों के धर्म की रक्षा की खातिर शहीद होने केलिये भेजा था। इसप्रकार आपने इस सिलसिले में ,देश और देश वासियों की सेवा, सहायता की खतिर पहली कुर्बानी अपने पिताजी की दी। हम आगे चलकर देखेंगे कि कैसे आपने लोकभलाई, राष्ट्रीय प्रगति ओर देश के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा अध्याय

गुरुता

श्री गुरु तेग बहादुर जी दिल्ली में शहीद होने से पहले यह आदेश कर गये थे कि हमारे पश्चात गुरुगद्दी की जिम्मेदारियाँ हमारा साहिबजादा संभालेगा।इस आदेश का पालन करते हुए कुछ समय के पश्चात् मघॅर सम्वत् 1732 में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को गुरुगद्दी पर बैठाने की रस्म अदा की गयी।वैसे आपकी गुरुता का समय तो नौवी पातशाही के शहीदी वाले दिन मघर सुदी–5(11मॅघर) सम्वत 1732 से ही शुरु हुआ। बाबा बुड्ढा जी के अंश बाबा राजकंवर(कौर) जी ने मर्यादानुसार आप जी को कलगी सजाकर ,श्री साहिब (तलवार) कृपाण पहनकर और गुरुगद्दी का तिलक देकर गुरुता की रस्म अदा की।

दशमेश जी की समस्यायें:–

श्री कलगीधर दशमेश जी की आयु इस समय केवल नौ वर्ष की थी,परंतु आपका मुकाबला ऐसी ताकतों के साथ पड़ा था और आपका मार्ग ऐसी मुसीबतों के साथ भरा पड़ा था,जिसको देखकर बड़े–बड़े बलवान भी संकल्प से डोल जाते। क्या थी वो विरोधी ताकतें ? क्या थी वो मार्ग में विघ्न डालने वाली मुसीबतें ?

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के मुकाबले में दो ताकतें जबरदस्त थी, एक थी मुगलराज की ताकत , जिस की बागडोर थी उस पत्थर दिल निर्दयी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कट्टर मुसलमान के हाथ में,जिसने तख्तोताज की प्राप्ति के लिये अपने भाईयों के साथ धोखा किया,जिसने अपने पिता शाहजहाँ को बन्दी बना दिया और उसे भूख प्यास में तड़पाया, जिसने अपने पुत्र मुअ़जम के साथ, जो बाद में बादशाह बना,बेहरमी वाला व्यवहार किया, जिसने अपने देश में केवल एक दीन–धर्म इस्लाम रहने देने और अन्य धर्मों को मिटानें की कसम खाई हुई थी। मुगल हुकुमत की एकजुट जबरदस्त ताकत ओर साधनों के अतिरिक्त औरंगजेब के सहायक थे 'लाखों' मुसलमान जो काफिरों को लूटना–मारना पुण्य समझते थे और शाही फौज के साथ मिलकर गुरुजी के विरुद्ध आने को सदा तैयार वर तैयार रहते थे।

श्री दशमेश जी के मुकाबले में दृढ़तर दूसरी ताकत थी, उन उच्च जातीय हिंन्दु ब्राह्मणों , क्षत्रिय राजाओं और राजपूतों आदि की जो गुरु जी के मिशन को न समझते हुए, यह विचार बना बैठे थे कि यदि सिक्ख फैल गये तो हमारी पदवी, हमारे अधिकार सब जाते रहेंगें।इन लोगों को मुगल हुकुमत ने अपने विश्वास में लिया हुआ था। वे लोग समझते थे कि परदेशी मुगल हुकुमत चाहे कहीं–कहीं जबर–जुल्म करती है फिर भी वह हमारे लिये हानिकारक नहीं, जितनी हमारे आस–पड़ोस में और हमारे घरों में बढ़ रही सिक्खी हो सकती है।

हिन्दू पहाड़ी राजाओ ने गुरु जी को अनेक कष्ट दियें। समस्त ताकत को गुरु जी के विरुद्ध मैदान में आकर मुकाबला करने के लिये प्रेरणा बहुत बार यह पहाड़ी राजा ही देते रहे हैं।

श्री दशमेश जी के आगे बड़ी और दिल को हिलाने वाली मुसीबत थी–साधन और साथियों की कमी उनके पास फौज नाम मात्र थी। इसलिये आपको फौज की तैयारी करनी पड़ी।आपके दादा गुरु हरगोबिन्द साहिब ने जो शूरवीरता सिक्खों में भरी और चमकाई थी, वो बहुत समय तक प्रयोग में न आने के कारण लगभग सो चुकी थी।सिक्खों में नये ढ़ग से वीर रस जगाने की आवश्यकता थी। औरंगजेब का फौलाद जैसा सख्त हाथ समस्त खलकत को भयभीत कर चुका था।यदि गुरु जी इस समय अपने लोगों को मुगल राज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और इन ताकतों का मुकाबला करने के लिये मैदान में उतरने के लिये ललकारते , तो वे आगे से डर कर इधर–उधर देखने की बजाय शायद कुछ और नहीं कर पाते।

एक और मुसीबत यह थी कि गुरु जी के सगे रिश्तेदार गुरुता के झगड़ें के कारण आपसे नाराज थे और आपके विरोधी बन बैठे थे।

दशमेश जी का प्रणः–

नौ साल की आयु के फकीर के सामने यह थी ताकत और यह थी मुसीबत।इनके सामने आप तनिक भी डरे नहीं और न ही वचन से डोले। आपने प्रण कर लिया कि जिस राज सिलसिले में धर्म के नाम पर सबके सांझे पिता को खुश करने के निश्चय से ऐसे अत्याचार हो सकते हैं, जैसे मुसलमान बादशाह सदियों से इधर करते आये थे और अब कर रहे थे, जिसमें शांत सरोवर श्री गुरु अर्जुन देव, भाई मती दास,भाई दियाला और श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जैसे पवित्र, निर्दोष,निरवैर, धर्मी महापुरुष इतनी निर्दयता से शहीद किये जा सकते थे ,उस राज को जड़ से समाप्त करना है और इस कार्य की सफलता के लिये योग्य साधन ओर साथी तैयार करने हैं आपने निर्णय किया इस मनोरथ की पूर्ति के लिये ऐसे संत–सूरमाओ (बहादुरों) की एक कौम तैयार करनी और सजानी है जिनके मन में विश्वास ,हृदय में ईश्वर का डर ,दिलों में ईश्वर के बनाये इन्सानों के लिये तरस,दया, प्यार, और हाथें में तेज तलवार हो। जो देश में प्रत्येक प्रकार के जुल्म अत्याचार,गुलामी और अन्याय दूर करने के लिये अपनी जान की बाजी लगा दें। मुसीबतों के पहाड़ों के आगे निभर्यता और स्वविश्वास के साथ अपना सीना तानकर डट जाए ओर अपना तन, मन, धन, सबकुछ अर्पण कर देश को आजाद और खुशहाल बनायें।

गुरुजी को दिल्ली से आई संगत के पास से यह बात सुनकर अत्यन्त दुखः हुआ और क्रोध आया कि नौवें गुरु जी के शहीद किए जाने पर दिल्ली के समस्त सिक्ख इतना भयभीत हुए कि किसी को महाराज का सिंर और धड़ उठाने का हौंसला न हुआ।एक रंगरेटे सिक्ख ने महाराज का शीश उठाकर श्री आनन्दपुर साहिब लाने का साहस किया और एक लुबान सिक्ख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु जी का सिर बैलगाड़ी में रखकर लुका–छिपाकर उठा लाया ओर अपने घर को आग लगाकर उस शीश का संस्कार किया'बड़ी' या'उच्च' जाति का कोई सिक्ख आगे नहीं आया। इधर ही बस नहीं।जब मुगल हाकिमों ने उनसे पूछा किक्या तुम सिक्ख हो तो गुरु साहिब के करीबियों के अतिरिक्तसमस्त कृतघ्न हो गये । यह सुनकर श्री दशमेश जी ने यह अनुमान लगा लिया कि इस तरह हो सकता है कि किसी दिन समस्त ही सिक्ख पहले जैसे ही हो जायें जैसे वे सिक्खी धारण करने से पहले थे। जिस गहरे कुएँ में से यत्न पूर्वक निकाले गये हैं,उसमें ही गिर जायें इसलिये यह विचार सुनकर आपने बताया कि हमें इस कमजोरी और आभोसित हो रहे खतरे का कोई न कोई उपाय ढूँढना ही होगा ।उस समय जो वचन आपने उच्चरित किये ,उनको भाई संताख सिंह जी इस प्रकार लिखते हैं–355

"श्री गोबिन्द सिंह सुनकर ऐसैं
गर्जत बोले घनघर व जैसे
इस विधि को अब पंथ बनावो
सकल– सकल जगत में बहु बिदतावों3
लाखहुं नर जग के इक थाहिं
तिन में तिले एक सिख जाई
सब महि प्रथक व पछानयो परै
रलै न कोयोहूँ को सहुँ करै
जथा बकन– बकन महि हंस न छपै
गिरी अनड़ तिखै मोरजिम4 दियै 5
जयों खरगन 6 माहि बली तरंग 7
जथा मृगन माहि के डर8 अंग
तिम नाना भेखन के माहि
मम सिख को सगले परखहि।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़े शब्दों में आपका वचन यह था कि हम सिक्खों को ऐसा रुप

,ऐसी शक्ल ऐसी वर्दी देंगे जो कि अकेला सिक्ख लाखों औरों में मिला हुआ भी जल्दी ही पहचाना जा सके। उसके विषय में कुछ भी पूछने की आवश्यकता ही न पडे।

नौ वर्ष की आयु में दशमेश जी के उच्च वाक्य बताते हैं कि महाबलि श्री कलगीधर जी का इरादा कितना उच्च और दृढ़ था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसरा अध्याय

खालसा पंथ सजाने का निर्णय

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक सब गुरुओं ने अपने सम्मुख विशेष आदर्श यही रखा था कि हिन्दुओं को धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक बन्धनों से आजाद करवाकर उनको एक जानकरके उन्नति के लिये प्रेरित किया जाये।सभी गुरुसाहिबान ने ऐसी कौम प्रगति के लिये समय–समय की आवश्यकता और हालात के मुताबिक कार्य किया।और श्री गुरु नानक देव जी के दिखाए और चलाये हुए मार्ग पर निश्चित किये हुए आदर्शों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न किए। उन्होंने हिन्दी जनता में राष्ट्रीय एकता के भाव पैदा करने और उन्हें पक्का करने के लिये उपाय किए गए।समाज में जाति–पाँति के भेद–भाव और फोक्ट धर्म के चलाये अर्थहीन रसमों –रिवाजों और वहमों –भ्रमों को धीरे –धीरे समाप्त किया।परिणाम यह हुआ कि 'निम्न जाति वाले गर्दन ऊँची करके चलने योग्य हो गये और ऊँची जाति का जाति–अभिमान काफी हद तक दूर हो गया।जाति–पाति की दरारें मिटने लगीं।

सफलता मिली तो बहुत परंतु अभी और बहुत कुछ करने की आवश्यकता थी। तभी हिन्दुओं में राष्ट्रीय एकता के भाव ,आजादी की लालसा, आजादी की प्राप्ति के लिये अत्यन्त संघर्ष करने और कुर्बानी करने की हिम्मत पैदा की जा सकती थीं अधिकतर लोग ऐसे भी थे जो निज लाभ प्राप्ति के लिये अपन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाई बन्धुओं के विरुद्ध परदेशी अत्याचारी हुकुमत का साथ देने से भी संकोच नही करते थे श्री दशमेश जी ने पहाड़ी राजाओं और उनके दिलों में राष्ट्रीय एकता के भाव जगाने के प्रयत्न किये, परंतु वे सब वहमों–भ्रमों और पुरातन धर्म के प्राचीन विचारों में ऐसे फँसे हुए थे कि जाति– पाँति, नस्ल, गोत्र कुल और वंश से सम्बंधित तंग दिली वाले ख्यालों का त्याग करने योग्य नहीं थे। वे तो दुश्मनों के साथ मिलकर अपने आजादी दाता के विरुद्ध लड़ाई करने की मूर्खता से बाज नहीं आते थे। इसीलिये गुरु जी को यह यकीन हो गया कि राजसी क्षेत्र में और उन्नति तभी हो सकेगी यदि पहले जनता में आम जाग्रति पैदा की जाये और समाज के धार्मिक बन्धन तोड़े जाये इसीलिये आपने राष्ट्रीय उन्नति के प्रोग्राम की पूर्ति करने के लिये और इस प्रकार सजाई कौम में देश की राजसी आजादी के लिये तन, मन, धन कुर्बान कर देने की शक्ति पैदा करने के लिये कोई तगड़ा इन्कलाबी कदम उठाने का फैसला किया।

श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी के पश्चात् दिल्ली के सिक्ख भयभीत हो गये थे और सिक्ख होने से मुकर गये। यह बात सुनकर दशमेश जी ने यह ऐलान कर दिया कि अब हम सिक्खों का ऐसा रुप कायम कर देंगे कि एक सिक्ख लाखों औरों में मिला हुआ भी झट पहचाना जा सके। गुरु जी ने यह देखा था कि वहमों भ्रमों की जंजीरें ढीली हो चुकी थी परंतु अभी टूटी नहीं थी। लोग गुरु उपदेश को मुहँ जबानी मानते हुए भी प्रयोग में लाने पर कमजोरी दिखाते थे। जैसा कि आगे बताया जा चुका है, श्री गुरु नानक देव जी से लेकर समस्त गुरु साहिबान एक ऐसी कौम की सर्जना करते और निर्माण करते आए थे, जो रहन–सहन, प्रयोग–व्यवहार ,धार्मिक विश्वास और जीवन आदर्शों में ओंरों से अलग हो ,जिसके हृदय में देश और देश के दुखियों के लिये दर्द और उनकी सेवा उन्नति के लिये वीर रस। यह क़ौम तैयार हो रही थी और अपनी अलग हस्ती और विद्यमान होने के सबूत भी दे चुकी थी।परंतु श्री दशमेश जी ने अनुभव किया कि इतने समय से तैयार हो रही कौम को पूर्णता तक पहुँचाने की खातिर अलग शकल और अलग रुप देना अत्यन्त आवश्यक है नहीं तो दिन प्रतिदिन खतरा ही बना रहेगा कि फिर उसी समुद्र में डूबकर गायब हो जायें जिसमें से उसको निकालने और अलग करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के प्रयत्न अब तक होते रहे थे, साथ में ऊँचा रहन–सहन, संतो के जितनी पवित्रता और बहादुर शूरवीरों जैसी वीरता के मालिक का'पहरावा' भी अलग और झट–पट पहचाना जाने वाला होगा। इस'पहरावे' की लज्जा रखने की खातिर उनको अपने उच्च उसूलों के ऊपर चलना पड़ेगा यदि वे ऐसा नही करेगें तो देखने वाले कह उठेंगे,"भाई सिक्ख होकर यह काम !क्यों पहरावे का अपमान करते हो ?"

इन विचारों के पश्चात गुरु जी ने खालसा पंथ सजाने और इस प्रकार गुरु नानक देव जी के शुरु किए और अन्य गुरु साहिबान के चलाये कार्यक्रम को पूर्ण करने का निर्णय कर लिया।

कुछ विद्वान पण्डितों ने आपको यह सलाह दी कि दुर्गा देवी को प्रसन्न करने के लिये हवन किया जाये और जब वह प्रकट हो, तब उससे वर माँगा जाये , उसका वर प्रत्येक मुसीबत दूर करेगा और प्रत्येक मैदान में जीत प्रदान करेगा।गुरु जी देवी–देवाताओं की पूजा के कट्टर विरोधी थे।आपकी रचित वाणी में अनेक स्थानों पर ईश्वर के बिना और सबकी पूजा की मनाही की हुई मिलती हैं। पहले नौ गुरु ज़ी देवी– देवताओं की पूजा के विरोधी थे और लोगों को उस पूजा से हटाकर केवल करतार (ईश्वर) की पूजा में लगाने के प्रयत्न करते आये थे । परंतु पण्डितों के दावों को झूठा करने और लोगों को ऐसे भ्रमों से छुड़वाने की खतिर गुरु जी ने बनारस से पण्डित केशोराम को बुलाया कि वह आकर नैणा देवी की पहाड़ी के ऊपर आकर हवन करके देवी को प्रकट करने का प्रयत्न करके देखो ।पण्डित ने अधिकतर सामग्री जलाकर और हजारों लाखों मन्त्र पढ़कर देवी के आगे अनेकों प्रार्थनायें कीं।परंतु वह प्रकट नहीं हुई।पण्डित केशोराम खिसक गया। गुरु जी ने बची हुई सामग्री भी हवन में फेंक दी तलवार हाथ में पकड़कर अपनी बाजू हिलाते हुए ललकारते हुए कहा–" ताकत की सच्ची देवी यह है। यह करामात दिखायेगी। यह तुम्हारी मुसीबतें दूर करेगी ,यह तुम्हें तुम्हारें देश में आजादी देगी, घर में अमन– चैन, सुख देगी, आओ इसके उपासक बनो ।

खालसा पंथ को सजाने का फैसला करके गुरु जी ने इस कार्य के लिये सम्वत्1756 वैसाखी का दिन निश्चित किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खालसा पंथ की साजनाः–

पाँच प्यारों का चुनाव –सम्वत्1756 की वैसाखी (30 मार्च सन् 1699) वाले दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ सजाया। इस कार्य के लिये यह दिन बहुत पहले की निश्चित किया गया था।गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए हजारों सिक्ख आनन्दपुर साहिब में आकर एकत्रित हुए।वैसाखी वाले दिन केशगढ़ जी वाले स्थान पर दीवान सजाया गया। तम्बू लगाया गया। कीर्तन हो रहा था।श्री दशमेश जी किसी विशेष रंग और मस्ती में डूबे दिखाई दे रहे थे। कीर्तन की समाप्ति हुई श्री दशमेश जी खड़े हो गये, आपने कृपाण हाथों में ली और जोश भरी लाल़ दग–दग करती आँखों से संगत की ओर देखकर कृपाण ऊपर करके हवा में हिलाकर ललकार लगाकर संगत को कहा ,एक शीश की आवश्यकता है। यह कृपाण एक सिक्ख का लहू चाटना चाहती है। कौन आयेगा इसकी प्यास बुझाने के लिये। कोई है जो शीश भेंट करे?

यह दृश्य देखकर और यह ललकार सुनकर संगत के नीचे की साँस नीचे और ऊपर की साँस ऊपर रह गयी। दीवान में चुप्पी छा गयी। सभी अपनी गर्दन नीचे करके बैठ गये ।गुरु जी ने फिर तलवार हिलाकर ललकार कर शीश की माँग की। फिर भी कोई नहीं उठा।गुरु जी ने तीसरी बार फिर कहा–"शीश की आवश्यकता है सिक्खों! कोई आयेगा ?" इस बार भाई दयाराम जी लाहौर निवासी खत्री उठे और हाथ जोड़कर कहने लगे'सच्चे पादशाह'मेरा शीश हाजिर है इसको स्वीकार कीजिये ।" गुरु जी ने उसे बाजू से पकड़ा और खींच कर पास के तम्बू में अन्दर ले गये।तम्बू के अन्दर तलवार चलने और धड़ के गिरने की आवाज आई और लहु की धारा तम्बू से निकलकर बाहर की ओर बहने लगी।

खून से लहुलुहान तलवार हिलाते हुए गुरु जी तम्बू से बाहर आ गये और एक और शीश की माँग करने लगे। दीवान में बैठे सिक्ख घबरा गये तो गुरु जी ने तीसरी बार फिर दूसरे सिर क़ी माँग की, तो भाई धर्म दास जी दिल्ली के जाट ने अपना शीश पेश किया। गुरु जी ने उसे बाजू से पकड़कर तम्बू के अन्दर ले गये। अन्दर से फिर तलवार की चोट और मृतक धड़ के गिरने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आवाज आई तथा और अधिक लहू की धारा बह निकली।

गुरु जी फिर तम्बू से बाहर आये आपने अपनी तलवार को फिर से हवा में लहराया और उसी प्रकार गर्जती आवाज में तीसरे सिर की माँग की। संगत भयभीत हो गयी। कई गर्दन नीचे करके भागने लगे। अनेकों ने माता गुतरी जी के पास जाकर शिकायत की गुरु जी सिक्खों का कत्ल कर रहे हैं, उनको रोकिये। गुरु जी ललकारते हुए तीसरे शीश की माँग कर रहे थे। अन्त में भाई मोहक्कम चंद्र जी द्वारिका के छीवे नें शीश भेंट किया। अनादर से फिर वही तलवार चलने और धड़ गिरने की आवाज आई और लहु का दरियां बहने लगा। इसी प्रकार गुरु जी ने चौथे और पाँचवे शीश की माँग की और भाई साहिब चंद्र जी बीदर शहर के नाई और भाई हिम्मत राय जी द्वारिका के झीर ने बारी–बारी अपने शीश भेंट किये।इनके साथ भी वही व्यवहार हुआ। जो पहले तीनों के साथ हुआ था।अन्दर से उसी प्रकार आवाज आई और उसी प्रकार लहु की धारायें बह निकली।

अब गुरु जी कुछ समय तम्बू के अन्दर रहे। दीवान में बैठे सिक्खों ने कुछ सुख का साँस लिया। उन्होंने सोचा कि गुरु जी का सिक्खों के शीश के साथ मन भर चुका है अब शायद यह और माँग न करे।कुछ समय बाद गुरु जी खुसी के साथ खिले हुए और वीर रस सहित गदगद् कर रहे चेहरे के साथ तम्बू से बाहर निकले । आप के पीछे नई शानदार पोशाक पहने वे पाँच गुरु के लाल थे, जिन्होंने गुरु जी को अपने शीश भेंट किये थे। गुरु जी ने कहा ये पाँच प्यारे हैं।"

पाँच प्यारों का चुनाव कर लेने के पश्चात् श्री कलगीधर दशमेश जी ने लोहे के बर्तन (बाटे) में खंडें का अमृत तैयार किया और पाँच प्यारे ओर दीवान में जुडें और सिक्खों को अपने उसूल, आदर्शों और मिशन के बारे में और खालसे की रहत के विषय में उपदेश दिया। आपने कहा मेरे यह पाँच प्यारे अब सिंह बन गये हैं । ये गुरु और वाहे गुरु के शेर हैं। इनके नाम आज से दया सिंह,धरम सिंह,मोहक्कम सिंह,साहिबसिंह और हिम्मत सिंह हो गये। आप भी अमृत पान करो और सिंह बनो।आज से आप क्षत्रिय शूरवीरों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की नई कौम खालसा सज गयें हैं । आपका जन्म आज से गुरु के घर, मेरे घर हुआ है। आप मेरे पुत्र हो। जनम से जो जातियाँ तुम्हारी थीं, वे सब मिट गयी हैं,आप सब खालसा हो,संत शूरवीरों की कौम हो। खालसा तुम्हारी जाति है और यही तुम्हारी बिरादरी है। सभी जातियाँ मिल जुलकर, एकत्र होकर,खालसा कौम बनी है। तुम्हें संतों जैसे पवित्र, धर्म,भजनीय,परोपकारी और ईश्वरीय भगत बनना है और शूरवीरों जैसे दिलेर,निर्भय, बलवान और योद्धा बनना है। कमंजोर अनाथ दुखियों अत्याचारियों के जुल्म के नीचे दबाये जा रहे आश्रयहीनों की बाँह पकड़न रहत भी जरुरी है। आपके विचार, आपके वचन, आपके काम सभी गुरु सिक्खी के रंग वाले सच्चे धर्मी व्यक्तियों वाले होने जरुरी हैं। सदा ही सच और धर्म का जीवन गुजारना,'सच आचार' धारण करने, परोपकार करने खुशी और जीवन की सफलता अनुभव करनी, परायी स्त्री का साथ नहीं करना, किसी का अधिकार नहीं छींनना,बरे कार्यों से बचना और शुभ कार्य करने के लिये उत्साहित रहना। तम्बाकू, शराब, अफीम, पास्त आदि सभी नशों से उपास करके तम्बाकू से दूर रहना, कुट्ठा नहीं खाना। खालसे के लिये निश्चित रहत मर्यादा को पक्के धारण करने वाला बनना।

औरंगजेब को खबरें लिखने वाले –रिर्पोट देने वाले ने, अमृत प्रचार के विषय में जो रिपोर्ट लिखकर भेजी वह इस प्रकार थीः–

गुरु साहिब ने ऐसा कहा,"मैं चाहता हूँ कि आप सभी एक धर्म धारण करो, एक मार्ग पर चलो , और अन्य धर्मों के भेदभाव सभी मिटा दो। हिन्दुओं की सभी जातियाँ, जिनके लिये शास्त्रों में अलग–अलग नेम हैं (नित्य व्यवहार) संकलित है उन सब नेमों को पूर्ण तौर पर त्याग देने और एक अकाल पुरुख करतार की भक्ति करते हुए एक दूसरे के भाई– भाई बन जायें और आपस में खुला मेल जोल व्यवहार करें। कोई अपने आप को दूसरों से उच्च न गिने, पुराने शास्त्रों को छोड़ दो। गंगा आदि तीर्थों को जिनको हिन्दू धर्म में पवित्र माना गया है, मानना छोड़ दो । राम, कृष्ण, ब्रहमा, दुर्गा आदि अवतारों और देवी, देवताओं को कदाचित न मानों ओर न ही पूजा करो। गुरु नानक देव जी और अन्य गुरुओं के ऊपर पूर्ण विश्वास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखो। चारों जातियों वर्णों के लाग मेरा अमृत पान करें ,एक थाली ,बर्तन में खायें पीयें ओर दूसरे से किसी प्रकार की नफरत और घृणा न करें। सब एक जान हो जायें।

जुड़ी संगत को यह उपदेश देने के पश्चात अमृत के दाता श्री दशमेश जी पाँच प्यारों के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गये और कहने लगे ,"जिस प्रकार मैंने अमृत तैयार किया और आपको अमृतपान कराया है,उसी प्रकार आप अमृत तैयार करो और मुझे अमृतपान करवाओ। वे हैरान हो गयें कि गुरु जी क्या कह रहे हैं। गुरु जी ने कहा संकोच क्यों कर रहे हो मेरे प्यारों ? मैंने आपको, पाँचों एकत्रित हुए को अपना रुप दिया और अपना तेज दिया है। आप मेरा खास रुप खालसा हो। खालसा गुरु है और गुरु खालसा है। मैं आपका गुरु हूँ, आप एकत्रित तौर पर मेरे गुरु हो। आप और मैं सदा के लिये एक हैं। हममें कोई भेद भाव नहीं रहा। मैं तुम्हारा चेला हूँ, मैं अमृत अभिलाशी हूँ, मुझे अमृत की दात दीजिये।

पाँच प्यारों ने गुरु जी के आदेश का पालन करते हुए अमृत तैयार किया गुरु जी ने उन पाँचों की ओर से अमृत पान किया, जैसे उन पाँच प्यारों ने आपके द्वारा किया था। इसीलिये भाई गुरुदास जी ने आपके बारे में लिखा है:—

"वाह वाह गोबिन्द सिंह आपे गुरु चेला।"

अमृत पान करने के पश्चात गुरु जी ने कहा,"आज से मेरा नाम गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह हो गया है।"

फिर नयी सजी हुई खालसा कौम के गुण बताते हुये श्री दशमेश जी ने कहा:—

"जागत जोत जपै निस बासर,
एक बिना मन नैक न आनै।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै,
ब्रत गौर मड़ी मट भूल न मानै।
तीरथ, दान या तप, संगम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बिना नह एक पछानै

पूरन जोत जगै घट में

तब खालसा ताहि नखालस जानै।'' (33 सवैये)

इसके पश्चात अमृत के दाता श्री दशमेश जी ने पाँच प्यारों को कहा कि अमृत तैयार करो और अन्यों को भी अमृतपान करवाओ। संगत में अथाह जोश और उमंग पैदा हो गया सभी अमृत पान करके सिंह सजने और गुरु के शेर बनने के लिये उत्साहित हो गए। थोड़े ही दिनों में 80 हजार सिक्खों ने अमृत पान किया।उच्च जाति कुछ ब्राह्मण और खत्री सेकोच करते रहे और अमृतपान करने से रहित रह गये ।

खालसा पंथ के सृजनहार श्री दशमेश जी ने यह आदेश जारी कर दिये कि कोई भी सिक्ख अमृतपान से हीन न रहे। प्रत्येक सिक्ख अमृतपान करके अमृतधारी बन जाये। आप जी ने फिर विस्तार सहित बताया कि गुरु सिक्खी की रहत क्या होगी, सिक्खों को क्या– क्या कुछ करना है और क्या–क्या नहीं करना है। आपने बताया कि क्या कुछ करना उचित नहीं होगा और उनको करने से सिक्ख किस प्रकार पतित हो जायेगा।

फिर गुरु जी ने यह भी आदेश दिया कि कोई भी पाँच अमृतधारी सिक्ख, चाहें वो किसी भी जाति वर्ग के हों जो रहत मर्यादा में पक्के और सिक्खी उसूलों के पक्के धारणी हों औरों को अमृतपान करवाकर सिंह सजा सकेंगे, बना सकेगें। आप ने अमृतपान करवाने का अधिकार किसी विशेष जाति या श्रेणी के लोगों नहीं, बल्कि सब सिक्खों को एक जैसा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौथा अध्याय

प्रमुख युद्ध एवं संघर्ष

भंगाणी युंद्धः–

श्री कलगीधर जी का नित्य – प्रतिदिन बढ़ रहा तेज– प्रताप और फौजी ठाठ– बाठ(शान ओ शौकत) देखकर पहाड़ी राजाओं के दिल ईर्ष्या और डर से भर गये। हकीकत में ये लोग अपनी गद्दी और पदवी की खातिर मुगल हुकुमत के गुलाम बने हुए थे। साथ ही वे जाति– पाति और ऊँच–नीच के बन्धनों में फँसे हुए थे और गुरु जी के चारों धर्मो को एकत्रित करने की योजना को वे हानिकारक समझते थे।वे आपको हिन्दू धर्म का विरोधी समझ बैठे थे। साथ में जो लहर गुरु जी चला रहे थे उसका यह एक फल प्राप्त होने की सम्भावना थी कि हुकुमत के साथी राजाओं की गद्दी पर खतरा बन आए। कहलूर का राजा भीमचंद्र गुरु जी से ईर्ष्या करता था। उसने अपने मन में यह धारणा बना रखी थी कि या तो गुरु जी को अपने अधीन किया जाये या फिर आनन्दपुर साहिब से निकाल दिया जाए।उसने तगड़ा बहाना ढूढ़कर गुरु जी से छेड़खानी शुरु की और अन्त में युद्ध आरम्भ कर दिया।

गुरु जी का तेज प्रताप देखकर तो भीमचंद्र पहले तो घबराया। उसके सलाहकारों ने भी उसे सलाह दी कि गुरु जी के साथ वैर विरोध नहीं करना चाहिये, बल्कि मित्रता करनी चाहिये। यह सलाह उसने अपने बजीर परपानन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और पुरोहित को गुरु जी के पास भेजा और उनके दर्शनों की इच्छा प्रकट की ।गुरु जी ने उत्तर भेजा कि गुरु नानक जी का द्वार सबके लिये खुला है, इधर कोई जैसी भी नीयत लेकर आता है वैसी ही फल प्राप्त करता है।

राजा भीमचंद्र दर्शनों के लिये आनन्दपुर आया। आसाम के राजा की प्रेम–भेंट भी उसे दिखाई गई।ये सब कीमती वस्तुऐं और ठाठ बाट देखकर भीमचंद्र लोभ में आ गया।उसने ये समस्त वस्तुऐं प्राप्त करने की नीयत बना ली। अपने पुत्र के विवांह के अवसर पर उसने यह वस्तुऐं माँग ली।गुरु जी ने उत्तर दिया कि ये वस्तुऐं सिकखों के द्वारा दी गई प्रेम भेंटें हैं और ये किसी को दी नहीं जा सकतीं। गुरु जी को राजा की नीयत का पता चल गया था। इसपर भीमचंद्र और उसके साथी राजाओं को क्रोध आ गया।उसने फिर संदेश भिजवाया कि आप हमारी प्रजा हो, इसलिये आपको हार माननी ही पड़ेगी। जो वस्तुऐं हमने माँगी हैं वे हमें देनी ही पडेंगी। आप विरोधी बनकर यहाँ नहीं रह सकते।

गुरु दशमेश जी ने उत्तर दिया," प्रजा तो हम केवल करतार की हैं। हम न तो किसी को डराते हैं, न ही किसी से डरते हैं। हम अमन चाहते हैं किसी का कुछ बिगाड़ते नहीं। हार हम किसी से मानते नहीं। यदि आप बिना किसी बात के लड़ना चाहते हैं, तो आपकी इच्छा हम हर प्रकार से तैयार हैं।

यह उत्तर सुनकर राजा भीमचंद्रलड़ाई के लिये तैयार हो गया उसके सलाहकारों ने सलाह दी कि पहले विवाह शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो जाये इसके पश्चात युद्ध किया जाये ।उसने यह सलाह मान ली।

राजा भीमचंद्र के पुत्र का विवाह श्री नगर गढ़वाली के राजा फतेहचंद्र की पुत्री के साथ हुआ। कहलूर की राजधानी बिलासपुर से श्री नगर जाने के लिये पाऊटें के पास से निकलकर जाना पड़ा था। पहाड़ी राजाओं ने बरत के साथ बहुत सारी फौज़ की तैयारी कर ली थी। नीयत ये थी कि गुरु जी को हर हाल में हराना है। गुरु जी उनकी चालों को भलीं भांति समझते थे। गुरु जी ने भी अपनी फौज की तैयारी कर ली।गुरु जी की फौज की तैयारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर पहाड़ी राजा ईर्ष्या से भर गये। उन्होंने सोचा कि गुरु जी तो रास्ता रोककर बैठे हैं,यदि हमने जबरन निकलने का प्रयत्न किया तो कत्ले आम भी हो सकता है। इसलिये यह सलाह दी गई दूल्हा और उसके कुछ साथी पाऊँटे से निकलने की आज्ञा माँगें। अन्य भी बरात द्वारा दूसरे रास्तों से निकल जाऐं। गुरु जी ने दूल्हे और तथाउसके कुछ साथियों को निकलने की आज्ञा प्रदान कर दी।

भीमचंद्र के लड़के का विवाह हो गया फिर भीमचंद्र ने श्री नगर के राजा फतेहशाह को कहा, गुरु जी के साथ हमारा वैर है और आपके साथ मित्रता। यह बात हमें मंजूर नहीं। या तो आप उनके साथ युद्ध करिए या फिर अपनी बेटी को अपने घर रखिये ।

पहले तो फतेहशाह कुछ अकड़ा परंतु जब भीमचंद्र ने डोली के बिना ही जाने की तैयारी कर ली, तो वह मान गया दुल्हा–दुल्हन तो बिलासपुर भेज दिये गये और अन्य राजा जन गुरु जी के साथ लड़ाई करने के लिये तैयार हो गये। उनमें से मुखिया ये थे–राजा भीमचंद्र कहलूरिया, राजा किरपाल चंद्र कटोचियां, राजा हरिश्चंद्र जसवालियां,राजा सुखदियाल जसरोटियां,राजा केशरी चंद्र हंडूरियां,राजा पृथ्वीचंद्र ढलवालिया ओर राजा फतेहशाह गढ़वालिया (या श्री नगरिया)

पहाड़ी राजाओं की तैयारी देखकर गुरु जी ने सिक्खों और पठानों को युद्ध करने की तैयारी का आदेश दिया।उधर पहाड़ी राजाओं ने पठानों को पत्र लिखा कि हमारे साथ आकर मिल जाइये। चार सौ पठान चार सरदारों सहित बहाने बनाकर पाऊँटे चल पड़े और पहाडी राजाओं के साथ जाकर मिल गये।काले खॉ और उसके दो सौ साथी पक्के रहें उन्होंने गद्दारी करने वाले पठानों को भी समझाया कि इस प्रकार तुम्हें नमक–हरामी नहीं करनी चाहिये। परंतु वे नहीं माने।गुरु जी के साथ पाँच सौ उदासी भी थे। लड़ाई छिड़ी देखकर दे भी रातों रात भाग गए,परंतु उनका महंत श्री कृपाण दास, जाक जिला लुधियाना के गाँव हेहर का था न गया। उसने गुरु ज का आदेश मानकर युद्ध में भाग लिया और कमाल की शूरवीरता दिखाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु जी ने सिक्खों को आशवादी रहने ओर अकाल पुरुख के ऊपर विश्वास करके युद्ध करने के लिये ललकारा। सिक्खों ने ऐसा ही करने का प्रण और इकरार किया।उधर सैयद् बुद्ध शाह को पता चला कि जो पाँच सौ पठान हमने गुरु जी के पास दाखिल करवाये थे , उनमें से 400 गद्दारी कर गए हैं तो उसको बड़ा दुख हुआ और स्वयं पर शर्म आई वह झटपट अपने चर पुत्र और 800 मुरीद लेकर पाऊँटे हाजिर हो गया।

गुरु जी ने पाउंटे से लगभग 7 मील पूर्व की ओर भंगाणी गाँव के पास यमुना और गिरी नदी के बीच में दुश्मन का मुकाबला करने का निश्चय किया। गुरु जी अस्त्र–शस्त्र सजा कर घोड़े के उपर सवार होकर अपनी फौज की अगुवाई कर रहे थे। आप जी के साथ आपकी बुआ,बीबी, वीरों जी के पुत्र श्री शागो शाह,श्री जीतमल, श्रीगोपालचंद्र, श्री गंगाराम और श्री मोहरीचंद्र थे। इनके अतिरिकत मामा किरपाल जी ,दीवान नन्द चंद्र श्री साहिब चंद्र ,पुरोहित दयाराम और कई बहादुर शूरवीर अपने –अपने जत्थों की अगुवाई कर रहें थे। सिक्ख सेना करीब 5000 के लगभग थी। विरोध ी दल में ऊपर बताये राजाओं की सेंना के अतिरिक्त गद्दारी करने वाले 4 पठान सरदार–हयात खान,भीखन खान, ऊमरखान ,और नजाबत खान और उनके साथी 400 पठान भी थे। पहाड़ियों की फौज सिक्ख फौज से गिनती में बहुत अधिक थी।

लड़ाई 16 वैसाख सम्वत्1746 (अप्रैल सन्1689) को आरमभ हुई ओर तीन दिन हुई। सिक्ख सेना ने कमाल की शूरवीरता दिखाई। महंत किरपाल दास ने ——373 के साथ हयात खान पठान सरदार का सिर कुचल दिया। श्री लालचंद्र हलवाई ने, जिसने पहले कभी तलवार पकड़कर भी नहीं देखी थी,गुरु जी का आशीर्वाद लेकर अनेंकों को मौत के घाट उतार दिया।धर्मयुद्ध करता–करता यह हलवाई शहीद हो गया। दीवान नंद चंद्र, श्री सागोशाह,श्री जीतमल्ल, सैयद् बुद्ध शाह और उनके पुत्रों ने कमाल की वीरता दिखाई।श्री दशमेश जी के तीरों ने दुश्मनों के सिर बेंध कर रख दिये। अन्त में राजा हरिश्चंद्र गुरु जी से मुकाबला करने के लिये आगे बड़ा। गुरु जी ने उसे तीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बेंधकर धरती पर फेंक दिया। पहाड़ी सेना भय के कारण भाग खड़ी हुई। तीन दिन के युद्ध के पश्चात 18 वेसाख को गुरु जी की जीत हुई। गुरु जी ने भागती जा रही फौज का पीछा न किया। जिन दुश्मनों ने गुरु जी के आगे हथियार डाल दिये गुरु जी ने उनकी जान बख्स दी। इस जीत का गुरु जी ने तनिक भी राजनैतिक लाभ नहीं उठाया, हारे हुए राजाओं के इंच भर के स्थान पर भी अपना कब्जा न किया और न ही उनके इलाके में किसी प्रकार की कोई लूटमार की। आपने धर्मयुद्ध किया था, आप राजा तो नहीं बनना चाहते थे।

इस युद्ध में बीबी वीरों जी के सुपुत्र,श्री सागोशाह जी ,श्री जीत मल जी शहीद हुए। सैयद् बुद्ध शाह के दो पुत्र और अनेक मुरीद भी शहीद हुए। जीत के पश्चात शूरवीरों को गुरु जी ने सिरोपा (सम्मान के प्रतीक का वस्त्र) दिए। सैयद् बुद्ध शाह को आपने दस्तार, कंघा, किरपान और हुक्मनामा दिया

इस युद्धोपरांत शीघ्र ही गुरुजी पाउंटा साहिब से आनन्दपुर साहिब वापिस आ गये।

श्री आनन्दपुर साहिब की जंगः–

हिंद फौज की कितनी बदकिस्मती यह थी कि श्रीगुरु गोबिन्द सिंह को खालसा की अमन सहित उन्नति–वृद्धि का बहुत कम समय मिला। खालसों ने इस देश के इतिहास में जो शानदार भाग दिया है,इससे भलीभाँति अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि गुरु जी को सारे पंजाब और पंजाब से बाहर खालसा सजाने का और पक्का करने का अवसर मिल जाता तो देश की किस्मत कितनी भाग्यशाली होती परंतु आपको यह अवसर नहीं मिला। खालसा सजाते ही अग्रिम वर्ष युद्ध आरंभ हो गया, जिसमें आपको अपना सर्वस्व बलिदान करना पड़ा।

ऊपरी तौर तो पहाड़ी राजा गुरु जी के साथ अमनपूर्वक रहने का दिखावा करते रहे परंतु अंदर से वे सदा इसी अवसर की तलाश में रहते थें कि गुरु जी को पार बुलाये जाये। खुले मैदान में राजा युद्ध करने से संकोच करते थे और छुपकर वार करना उन्हें पसन्द था।जल्दी ही उन्हें गुरु जी पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छुपकर वार करने का मनमर्जी का अवसर मिल गया। एक दिन बहुत थोडी फौज लेकर दशमेश जी शिकार खेल रहे थे। अचानक ही पहाड़ी राजा वहाँ आ गये। पहाड़ी राजाओं का विचार था कि निम्न जातियों और मुट्ठीभर लोग जो गुरु जी के साथ हैं, इनको तो हमारे क्षत्रिय शूरवीरों ने अभी मार गिराना है। उनको पूर्ण विश्वास था कि आज हमने गुरु जी को अवश्य हरा देना है या फिर जीवित को बन्दी बना लेंगे या शहीद कर देंगे।परंतु उनकी सोच गलत निकली।इधर धर्मी योद्धा थे जो हर समय अपने गुरु की खातिर अधिक से अधिक कष्ट झेलने के लिये, बलिदान करने और अपना तन,मन, धन सब कुछ बलिदान करने को धन्य भाग्य समझाकर तैयार रहते थे दूसरी ओर किराये पर लाये गये तनख्वाहदार पहाड़ी थे , जिनके सम्मुख कोई उच्च आदर्श नहीं था। श्री दशमेश जी के शेरों और संत वीर बहादुरों ने उन क्षत्रिय योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिये। एक– एक सिंह ने अनेकों को मौत के घाट उतार दिया।एक राजा मारा गया, दूसरे की बाँह काट दी और वे डर के कारण मैदान छोड़कर भाग निकले । बस फिर क्या''पहाड़ी क्षत्रिय योद्धा'' नीच जाति के संत शूरवीरों से मार खाकर हार गये।

सम्वत् 1758 के आरम्भ में नबाब वजीर खान ने पैंडे खान और दीना बेग की कमान के नीचे दस हजार फौजी भेजे। बीस हजार फौज बाईधार के राजाओं की भी थी गुरु जी के पास सात– आठ हजार शूरवीर थे परंतु वे और ही मिट्टी के बने हुए थे और अपने गुरु और धर्म की खातिर जन बलिदान करने के लिये भी तैयार थे। बाईधार के राजाओं ने आनन्दपुर साहिब पर हमला बोल दिया। काफी समय तक युद्ध चला। साहिबजादे बाबा अजीत सिंह ने आश्चर्यचकित कर देने वाली शूरवीरता दिखाई। प्रत्येक सिक्ख ने अनेंकों वैरियों को धूल चटा दी। फिर पैड़ा खान गुरु जी के सम्मुख आया, आइये हम दोनों दो–दो हाथ करें , जो हार गया उसकी फौज भी हार गई समझिये। गुरु जी मान गये। द्वन्द्व युद्ध शुरु हुआ। गुरु जी ने पैड़ा खान को पहला वार करने का अवसर प्रदान किया उसने पूरा जोर लगाकर तीर चलाया,परंतु वह खाली चला गया। गुरु जी ने कहा एक और चला ले कहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई अरमान न रह जाये , परंतु वह भी खाली चला गया,फिर गुरु जी ने तीर के साथ पैंड़ा खान का सिर बेंध दिया।वह गिर पड़ा।उसको गिरा देखकर पहाड़ी राजा और उनके पहाड़ी बहादुर भाग गए। दीना बेग भी युद्ध में डटा रहा,परंतु जल्दी ही वो भी धायल हो गया ओर भाग गया। बाद में शाही फौज भी इधर उधर भाग गई।

इतनी करारी हार के पश्चात भी राजा अमन–शान्ति से न बैठे बल्कि वे और भी गम्भीरता से योजनायें बनाने लग पड़े। आखिर उन्होंने यह निर्णय

कर लिया कि सब पहाड़ी राजा पहले से भी अधिक तैयारी करके ज्यादा फौज लेकर और आसपास के मुसलमान, गुजरों को जो सिक्खों के कट्टर विरोधी थे, उनको साथ लेकर आनन्दपुर साहिब पर डेरा डालें, अन्दर खाने पीने का सामान जाना बन्द कर दिया जाये। इसी प्रकार वे सब हारमानने को मजबूर हो जायेंगे।

परंतु ऐसा करने से पहले उन्होंने'साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे' वाली नीति पर चलने की खातिर, धमकियाँ, डरावे आदि प्रयोग करने की दलील दी मघर 1758 में राजा भीमचंद्र ने गुरु जी को लम्बी चौड़ी चिट्ठी लिखी, जिसके अंत में उसने यह कहा कि यातो मेरी रियासत में से निकल जाओ नहीं तो मेरी प्रजा बनकर मेरे अधीन रहो। आगे गुरु जी ने उत्तर दिया कि हमें इन दोनों बातों में से कोई भी मंजूर नहीं । हम किसी को डराते नहीं, परंतु यदि कोई जबरन गले पड़े तो हम अपनी रक्षा करने को तैयार हैं।

इस उत्तर के आने और राजा भीमचंद्र और बाईधार के और राजाओं को मुसलमान गुजरों को साथ लेकर श्री आनन्दपुर साहिब पर चड़ाई कर दी, कुछ समय शहर से बाहर लड़ाई हुई । पहाड़ियों और उनके राजाओं की अच्छी खिदमत हुई और वे लड़ना मरना त्यागकर भाग गये।– 494

सिक्खों के गुट किले में से निकलकर कई बार वैरी दल पर छापा मार करते और अनेंकों को मौत के घाट उतारकर और रसद सामान लूटकर फिर किले में वापिस चले जाया करते। घेरा डालने वाले दुश्मन थक गये । एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन उन्होंने किले का दरवाजा तोड़ने की योजना बनाई। उन्होंने शराब पिलाकर मस्त किया हुआ एक बड़ा जोरावर हाथी तैयार किया उसके माथे के ऊपर पक्की ढालें ,बरछियाँ, शस्त्र आदि बाँध दिये। उसको आगे लगाकर पहाडी फौजें किले के दरवाजे की ओर बढ़ी। उनका विचार था कि मस्त हाथी टक्कर मारकर किले का दरवाजा तोड़ देगा और हम किला जीत लेंगे। गुरु जी ने भाई विचित्र सिंह को हाथी का मुकाबला करने को भेजा। उसने गुरु और अकाल पुरुख का नाम लेकर हाथी के माथे में ऐसे जोर का नेजा (एक शस्त्र) मारा कि वह हाथी के माथे में जा घुसा। हाथी चिंघाड़ता हुआ, पहाड़ियों को पैरों तले कुचलता हुआ भाग गया।कुछ समय पश्चात पहाड़ी

राजा भी वहाँ से खिसक गये।

इसके कुछ समय पश्चात् गुरु जी कीरतपुर के नजदीक 'निरमोह' नामक गाँव में चले गये। जहाँ उन्होंने 'निमोहगढ़' नामक किला बनाया हुआ था। एक दिन आप वहाँ दीवान सजा रहे थे। पहाड़ी राजाओं की प्रेरणा से एक मुसलमान तोपची ने गुरु जी के ऊपर तोप का गोला चला दिया। इससे गुरु जी का चौबेदार शहीद हो गया। श्री दशमेश जी ने उसी समय तोपची को मौत के घाट उतार दिया

इसके कुछ समय पश्चात पहाड़ी राजाओं ने संरहिन्द के नबाब को फिर गुरु जी के विरुद्ध करने का प्रयत्न किया। वह अपनी फौज लेकर शाही फौज के साथ आ मिले। काफी समय तक युद्ध हुआ। सिक्ख काफी बहादुरीके साथ लड़े। कुछ बनता न देखकर नबाब ने वापिस जाने का निर्णय किया। उसके पीछे पहाड़ी राजा भी चले गए। इस युद्ध के पश्चात गुरु जी कुछ समय बसौली आकर टिके।

पहाड़ी राजा हर समय गुरु जी के विरुद्ध योजनायें बनाते रहे। कुछ समय पश्चात उन्होंने सैयद् बेगम और अलफ खान दोनों जनरलों को बुला भेजा। इनमें से सैयद् बेगम तो गुरु जी का सेवक बन गया और उनकी फौज में आ मिला। अलफ खान मुँह की खाकर भाग गया। इस प्रकार बार–बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हारने के पश्चात पहाड़ी राजााओं को विश्वास हो गया कि हम गुरु जी को हरा नहीं सकेंगे। इसलिये उन्होंने निर्णय किया बादशाह औरंगजेब को गुरु जी के विरुद्ध प्रेरणा की जाये और शाही फौज भेजने के लिये मनाया जाये। उन्होंने बादशाह को लम्बी–चौड़ी चिट्ठी लिखी। इसमें उन्होंने अपने आप को मुगलराज के नमक हलाल , वफादार और आज्ञाकारी बताया और गुरु जी को मुगलराज का, मुगलराज के हितैषियों का ,इस्लाम का ,हिन्दू धर्म का कट्टर विरोधी बताया। उसने यह भी कहा कि हम सब ने मिलकर अकेले भी और सरहिन्द के नबाब की सहायता से भी ,सारा बल लगाया है परंतु हम सफल नहीं हो सके। बादशाही ताकत ही इस सांझे खतरनाक वैरी का अन्त कर सकती है।

औरंगजेब उस समय दक्षिण में था उसने सूबा लाहौर और सूबा सरहिंद

को आज्ञा दी कि पहाड़ी राजाओं के साथ मिलकर गुरु जी पर तुरन्त हमला किया जाये और उनको हराए बिना युद्ध बंद न किया जाये । इस आदेशानुसार लाहौर और सरहिन्द की शाही फौजें आनन्दपुर की ओर चल पड़ी। पहाड़ी राजा भी अपनी फौज को शाही फौज के साथ मिलकर चल पड़े। इस प्रकार आनन्दपुर साहिब की अन्तिम लड़ाई शुरु हुई।

सिक्ख फौज की गिनती दस हजार के लगभग थी। विरोधी सेना की गिनती लाखों में थी। बहुत भयानक युद्ध आरम्भ हुआ। हिन्दुओं और मुसलमानों की मिली जुली फौज का खालसा फौज ने बेमिसाल ,वीरता और दृढ़ता के साथ मुकाबला किया और प्रत्येक हमले का मुँह तोड़ जबाब दिया। लड़ाई चलती रही,परंतु हार– जीत का निर्णय न होता दिखाई दिया।

जंग के कारण और विशेषकर शाही फौज के द्वारा किये जा रहे उजाड़ के कारण, पहाड़ी इलाका बर्बाद हो रहा था। लोगों की नाक मे दम हो गया। जंग में सफलता होती न दिखाई दे रही थी। राजाओं और मुगलों ने जनरलों ने गुरु जी को किले में से निकालने की योजना अनायी। उन्होंने गुरु जी को धर्म और गायमाता की सौगंध भरी चिटृठी लिखी और एक चिट्ठी बादशाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से भी मँगवा कर भेजी, इन पत्रों में कहा गया कि यदि गुरु जी किला खाली करके चले जाये तो उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया जायेगा।

गुरु जी की फौज के अनेंकों सिक्ख शहीद हो चुके थे बाकि भूख–प्यास से व्याकुल थे क्योंकि वैरियों ने अन्दर खाने पीने का सामान आने से रोक रखा था साथ ही सालों की लगातार लड़ाई ने उनको बेहद थका दिया था इसलिये जब बाहर से कसमों और इकरार के पत्र आये तो सिक्खों ने किला खाली कर जाने की इच्छा प्रकट की। गुरु जी ने सिक्खों को समझाया कि उन पहाड़ियों और तुर्कों की कसमों का ऐतबार नहीं करना चाहिये । उनके दिलों में खोट है। परंतु सिक्ख घबराये जाने की की जिद्द करने लगे। गुरु जी ने कहा जब सालों तक मुसीबतों का सामना किया, वहाँ एक महीना और सहन करें परंतु तीन सालों से तकरीबन लगातार युद्ध के कष्टों , भूख प्यास से सिक्ख व्याकुल हो रहे थे। वे कहने लगे कि जब हार मानने के बिना जानें बचाई जा सकती है तो क्यों न बचायें और धर्म के विरोधियों के विरुद्ध फिर अवसर आने पर प्रयोग में लाई जाये। उन्होंने दलील गुरु जी के आगे रखी।इसपर गुरु जी ने कहा ठीक है जो हमारी इच्छा के विरुद्ध जाना चाहते हैं वे बेढ़ावा लिखकर जाऐं और चले जायें। कुछ सिक्खों ने गुरु सिक्खी और गुरु से भी अधिक जान को प्यारा माना। उन्होंने लिख दिया कि न तो आप हमारे गुरु हो और न हम आपके सिक्ख।" यह बेढ़ावा लिखकर वे चले गयें।

घेरा जारी रहा और लड़ाई होती रही। कुछ दिनों के पश्चात किले के बीच में सारे सिक्खों की राय किला खाली कर देने के हक में हो गई।पहाड़ी राजाओं और शाही फौजदारों ने फिर विश्वास दिलाया और कसमें खाई कि गुरु जी और उनके साथियों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होगी। उनको जहाँ मन करे जाने की पूरी छूट होगी। इसीलिये गुरु जी 7 पाह सम्वत् 1761(20 दिसम्बर सन् 1704 ईसवी) को भाई गुरु बख्स उदासी को गुरु स्थानों की सेवा संभाल सौपकर, आधीरात रहते किला खाली कर दिया और रोपड़ की ओर चले गए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चमकौर युद्ध ; उच्च के पीरः–

पहाड़ी राजाओं और मुगल फौजदारों के विषय में गुरु जी की राय बिल्कुल उचित निकली कि इन पर किसी भी हालत में विश्वास नहीं करना। गुरु जी का किले में से निकलने का पता लगते ही दुश्मनों ने अपनी कसमें भुलाकर गुरु जी के ऊपर पीछे से हमला कर दिया। रात के अंधेरे में सरसा नदी के किनारे घमासान युद्ध हुआ। अनेकों सिंह शूरवीर वैरियों को मारते मारते स्वयं शहीद हो गये। बहुत कत्ले आम हुआ परंतु श्री दशमेश जी तनिक भी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। उधर तोपें चल रही थी सांय–सांय वाणों की वर्षा हो रही थी। इधर गुरु जी अपनी दैनिक दिनचर्यानुसार सुबह का दीवान लगाकर वाणी का पाठ कीर्तन कर रहे थे। फिर सरसा नदी पार करने की तैयारी की गई। बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंह ने कुछ सिक्खों को साथ लेकर वैरियों को रोके रखा तो अन्य फौज नदी पार करने लगी जब बाकी फौज नदी पार कर गई तो बाबा अजीत सिंह और उनके साथी भी नदी पार करके उनसे जा मिले। इस समय बहुत गड़बड़ मच गई। बारिश के कारण नदी भी जारों पर थी गुरु जी का बहुत सारा सामान नदी में बह गया और साथ ही वर्षों भर की मेहनत से तैयार किए गए बहुत सारे काव्य ग्रन्थ भी बह गए। गुरु जी की माता जी और छोटे दो साहिबजादे संगी साथियों के साथ बिछुड़ गए। गुरु जी रोपड़ की ओर चले गये। उधर आपने माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी को भाईमणि सिंह के साथ दिल्ली की ओर भेज दिया।

रोपड़ से चलकर गुरु जी चमकौर की ओर गए। वैरी दल उनका पीछा करता हुआ आया। लड़ते– भिड़ते गुरु जी 7 पोह(21 दिसम्बर) को सायंकाल चमकौर पहुँचें उस समय आपके साथ दोंनों बड़े साहिबजादे –बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह जी और चालीस सिक्ख थे। चमकौर के पास पहुँचक़र गुरु जी ने एक बाग में ड़ेरा लगाया। उधर से चलक़र आप चमकौर की एक कच्ची गाड़ी में गये और उनका पीछा कर रही शाही फौज का मुकाबला करने के लिये तैयार हुए। प्रत्येक छत पर आठ–आठ सिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निश्चित किये गए और शाही फौज की प्रतीक्षा होने लग पड़ी। वह फौज भी मार–धाड़ करती आ पहुँची। इस फौज की गिनती गुरु जी ने जफरनामें में लाख के लगभग बताई थी। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि गुरु जी के साथ साहबिजादे के अतिरिक्त चालीस सिक्ख भी थे और वे भी लगातार साल तक युद्ध करने के पश्चात थके हुए थे। गढ़ी की दीवारें कच्चे गारे की थी। परंतु इन मुटठी भर सिक्खों ने दुश्मनों के टिड्डी दल का मुकाबला ऐसी शूरवीरता के साथ डटकर किया कि आफिर साँस तक उन्हें गढ़ी पर विजय प्राप्त न करने दी। श्री दशमेश जी के दोनों बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह जी और पाँच प्यारों से तीन प्यारे– बाबा हुक्कम जी, भाई साहिब सिंह और भाई हिम्मत सिंह जी– दिल्ली से श्री गुरु तेग बहादुर जी का शीश आनन्दपुर पहुँचाने वाला रंघरेटा सिक्ख भाई जीवन सिंह जी और अन्य सिक्ख एक–एक करके अनेको दुश्मनों को मारते हुए शहीद हो गए। केवल पाँच सिक्ख शेष रह गये ।

उन पाँचों ने गुरु जी के आगे निवेदन किया कि अब आप चले जाइये। उन पाँच सिक्खों ने कहा, आपकी आज्ञा है कि पाँच सिक्ख मिलकर गुरु जी का सहारा लेकर जो फैसला करेंगे वह पाँच प्यारों का फैसला होगा और आप उसे पंथ का हुकम मानकर स्वीकार करेंगे।हम पाँच प्यारो की हैसियत से, आपके दिये हुए अधिकारानुसार आप को आज्ञा करते हैं, यह पंथ की आज्ञा है जिसको आप सदा ही सिर माथे मानते आये हैं। आपके जीवन के साथ पंथ जीता है आप पंथ को चढ़ती(आशावादी) कला में ले जाकर प्रफुल्लित कर सकोगे।

गुरु जी ने यह सलाह मान ली पाँच सिक्खों को गढ़ी की अटारी के बीच वाले अपने आसन पर बैठाया। आपने अपनी कलगी उतारकर भाई संत सिंह को पहनाई।

फिर आपने पाँचों सिक्खों की परिक्रमा की और उनके आगे माथा टेका। इस प्रकार आपने गुरुता पंथ को सौंप दी।फिर आप रात को गढ़ी में से निकलकर चल पड़े। गढ़ी में से दो प्यारे भाई दया सिंह और धर्म सिंह जी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और भाई मान सिंह जी आप जी के साथ निकले । परंतु अंधेरा होने के कारण तीनों आप से बिछुड़ गए।

सुबह होने के समय गुरु दशमेश जी किड़ी गाँव के पास पहुँचे। वहाँ के गुजरों–अलफू और गामू ने आपको पहचान लिया और उनको पकड़वाना चाहा। गुरु जी ने उन दोनों को झटका दिया। उधर से चलकर रात भर सफर करके गुरु जी माछीवाडें पहुँचे। उधर आप एक बाग में जो कस्बे से मील की दूरी पर पूर्वकी ओर था,सो गए। उस समय सर्दी की ऋतु थी।आप कई दिन, कई रातें, भूखे रहकर,नंगे पाँव उस जंगली इलाके से सफर करते आये थे। थकान के कारण ओर आहार न मिलने के कारण आपका शरीर अत्यन्त निर्बल हो चुका था।बहुधा सफर आप रात के समय ही करते थे। इसी कारण झाड़ियों से उलझकर आपके वस्त्र तारतार हो गये थे। आपके पाँव काटों से जख्मी हो गये और आपके छाले जख्मों से भर गए। कई दिन आपने आक के पत्ते खाकर अपना निर्वाह किया ताकि शरीर में रक्त का दौरा कायम रह सके। पत्थरें को अपना तकिया बनाकर जंगलों में सदियों की ठंडी रातें नंगे सिर काटी,पीछा कर रहे दुश्मनों की खातिर आपने कई झााड़ियों में गुजारे ,परंतु आप इतनी कठिनाईयाँ सहन करने के पश्चात भी उसी प्रकार अपने प्रण पर दृढ़ रहे। आप जब सोते भी थे तो आपके हाथ में नंगी तलवार होती थी। इन कठिन कष्टों के समय इस संकोचहीन व्यक्ति ने निम्नलिखित शब्द की रचना की ,जिसमें आपका दृढ़ चित, उच्चख्याली और प्रभुनमित सब कुछ सहन करने का दृढ़ इरादा प्रगट होता हैः–423

"मित्र प्यारे नू हाल मुरीदा दा कहना
तुद बिन रोग रजाईयॉ दा ओढन
नाग निपासा दे रहना
सूर सुराही खंजर प्याला
बिंग कसाईयाँ दा सहना
यारड़े दा सानू सथ्थर चंगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भठ खेड़िया दा रहना।''

आप माछीवाड़े के बाग में पत्थर–424 का तकिया बनाकर टिके हुए थे कि भाई दयासिंह जी ,भाई धरम सिंह जी ,भाई मानसिंह जी आपको आकर मिले। उन्होंने बताया कि दुश्मनों की फौज आ रही है और विनती की किसी उचित स्थान पर जाना चाहिए। परंतु पैरों के जख्मों और छालो के कारण गुरु जी चल नहीं सकते थे। भाई मान सिंह जी आपको उठाकर पास के कुएँ पर ले गए।उधर आप ने जल पिया और कई दिनों के पश्चात स्नान किया,इस स्थान पर गुरुद्वारा 'चरण कंवल' बना।

यह बाग गुलाबे मसंद का था, जो माछीवाडें का निवासी था, वह अपने घर ले गया और निवास कराया उसने आपकी अत्यन्त प्रेमपूर्वक सेवा की । गुरु जी कुछ दिन वहाँ ठहरे । मुगल फौज आपकी खोज करती धूम रही थी। इसलिये यहाँ अधिक समय तक रहना ठीक नहीं था।

माछीवाडें के दो पठान भाई गनी खान और नबी खान, कुछ समय नौकर रहे थे । वे आप जी के श्रृद्धालू थे ।उनको गुरु जी के साथ घटित प्रत्येक घटना का और आप जी के माछीवाड़े में होने का पता लगा वे तुरंत संवा में हाजिर हो गए। उन्होंने विनती की कि हमें यह सेवा दान दीजिये कि हम आपको वैरी दल के खतरे में से निकालकर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें। उनकी विनती मानकर गुरु जी ने नीले रंग के वस्त्र पहन लिये और अपने केश(बाल) खोलकर पीछे की ओर कर लिए। इस पकार वेश बदलकर आप एक पालकी में बैठ गए।गनी खान, नबी खान और भाई धरम सिंह जी ने ,भाई मान सिंह जी ने कन्धों के ऊपर पालकी उठा ली और भाई दयासिंह जी पीछे–पीछे 'चौर साहिब' करने लगे। इस प्रकार आप माछीवाड़े से विदा हुए। मार्ग में जो कोई पूछता तो गनी खान कह देते कि हम अपने 'उच्च के पीर' को ले जा रहे हैं। मार्ग में गुरु जी की तलास करती फौज मिल गई। पठान भाईयों ने फौज की संतुष्टी करवा दी। परंतु अधिक सशक्त तौर पर पता करने के लिये फौज के अफसर ने काजी पीर मुहम्मद वाले को बुलवाया, उसने गुरु जी से कभी फारसी पढ़ी थी। उसको कहा गया कि देखकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बताओ कि यह गुरु गोबिन्द सिंह तो नहीं ,काजी ने कह दिया इन महापुरुषों को मत रोको, कोई कष्ट न दो, यह सच्चे पीर हैं, पहुँचे हुए पीर हैं। फौज यह सुनकर वापिस चली गई।

इस प्रकार पालकी में बैठे गुरु हेहर, जिला लुधियाना पहुँचे ,वहाँ महंत किरपाल दास ने आपकी अत्यन्त प्रेम भाव से सेवा की। यहाँ पहुँकर गुरु जी ने गनी खान, नबी खान को विदा किया। उन दोनों भाईयों को अपने सोने के कंगन की जोड़ी और हुक्मनामा सौंपा।उस हुक्मनामे में लिखा है कि गनी खान ,नबी खान हमें हमारे पुत्रों से भी अधिक प्रिय हैं। महंत किरपाल दास गुरु जी से प्रेम तो अत्यन्त करता था और आपकी सेवा धन्य भाग्य समझकर करने का चाहवान था,परंतु वह मुसलमानों की ओर से डरता था इसीलिये गुरु जी ने उसके घर अधिक देर तक रुकना ठीक (उचित) नहीं समझा, आप उधर से विदा हुए। विदाईगी के समय महंत किरपाल दास कई कोस तक आप जी की पालकी उठाये रहें।

माछीवाड़े से विदा होकर गुरु जी उच्च पीर के वेश में जटपुर पहुँचे। वहाँ रायकोट का मुसलमान राय कलंला आप के दर्शनों के लिये उपस्थित हुआ। वह इस इलाके का चौधरी था। उसने अत्यन्त आदर भाव के साथ गुरु जी का अपने मकान में ठहराया और गुरु जी की मुसीबतों और कष्टों का हाल सुनकर राय कलां की आँखें आसुँओं से भर आई और वह अत्याचारियों को फटकारने और भला बुरा कहने लग पड़ा। उसने विनती कि मैं हर प्रकार की सेवा के लिये उपस्थित हूँ ,कोई सेवा सौंपिये। गुरु जी के कहने पर उसने अपने चरवाहे नूरा को सरहिंद भेजा ताकि छोटे सहिबजादों और माता गुजरी के साथ आप बीती का कुछ पता चले।

साहिबजादों की शहीदी–जफरनामा

राकल्ला का भेजा हुआ नूरा माही सरहिंद से सारा हाल पता करके बहुत जल्दी वापिस जट्टपुर आ गया। उसपे आकर आँसू बहाते हुए नेत्रों और काँपती आवाज में जो कुछ बताया उसका संक्षेप इस प्रकार है–

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'सरसा नदी पार करते समय माता गुजरी जी अपने दो छोटे पौत्रों – बाबा जोरावर सिंह जी औरबाबा फतेह सिंह जी –सहित अन्य लोगों से बिछुड़ गये। शीघ्र ही उनको गुरु घर का नौकर और रसोइयां गंगू ब्राह्मण मिल गया यह उनको अपने गाँव खेड़ी(सहेड़ी) में अपने घर ले गया'। वह दिल का खोटा और नमकहराम निकला। उसने रात्रि के समय माता जी का समस्त धन चुरा लिया। अगली सुबह वह मोरिन्डे के थानेदार को बुला लाया, जिसने तीनों को गिरफतार करके 10 पोह को सरहिन्द पहुँचा दिया। सरहिन्द के नबाब ने उनको बुरज (किले) में कैद कर दिया।

अगले दिन 11 पोह को साहिबजादों को वजीर खान की कचहरी (अदालत) में पेश किया गया। कचहरी में दाखिल होने पर दोनों साहिबजादों ने ऊँची गर्जती आवाज में 'वाहे गुरु जी की फतेह' बुलाई और अपनी गर्दन ऊँची करके खड़े हो गये। नबाब वजीर खान ने उनको कहा,'तुम्हारे पिता और दोनों भाई कत्ल किये जा चुके हैं।तुम अपनी जान बचा सकते हो तुम्हें बहुत सुख और आराम से पाला पोसा जाएगा, पढ़ाया–लिखाया जाएगा और उच्च स्तर की जमीन–जायदाद दी जायेगी, तुम लोग कलमां पढ़कर मुसलमान बन जाओ। यदि नहीं मानागे तो बुरी तरह कत्ल कर दिये जाओगे। '

आगे साहिबजादों ने बड़ी वीरता के साथ कहा,'हम श्री गुरु अर्जुन देव की सन्तान हैं और श्री गुरु तेग बहादुर जी के पोते हैं। हम श्री दशमेश जी के सुपुत्र हैं। हमें धर्म की खातिर सुख त्यागकर दुख सहना आता है। हम धर्म छोड़कर जीने के लिये तैयार नही। आपका जो मन करे कर लो।'

'वजीर खान के दरबार में स्थित औरों ने भी लालच और अनेक डरावे दिये। परंतु साहिबजादे अपने प्रण से नहीं चूके।नबाब के पेशकार सच्चानन्द ब्राह्मण ने कहा,'ये साँप के बच्चे हैं, ये तरस–रहम के लायक नहीं,इन्हें कत्ल करना ही चाहिये ' नबाब मलेरकोटले ने कहा कि इन मासूम निर्दोषों को कत्ल करना ठीक नहीं। पर उनकी किसी ने नहीं सुनी। 11 और 12 पाह को दो दिन लगातार उनको कचहरी में बुलाया गया ओर डरावे दिये जाते रहे,परंतु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे अपने धर्म से नहीं चूके। नबाब ने आदेश दिया कि साहिबजादों को दीवार में जिन्दा चिनवाकर कत्ल कर दिया जाये। यह आदेश 11 पोह वाले दिन दिया। उन्होंने आपके पुत्रों को जिन्दा ही दीवारों में दफना दिया, बार–बार उन्हें मुसलमान बनकर जान बचाने के लिये कहा गया, परंतु वे वाहे गुरु का जाप करते बिना डोले ख़ड़े रहे। जब दीवार कन्धों से ऊपर हो गई तो उनके शीश उतारे गये। अपने पातों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने भी उनके पीछे–पीछे सचरखंड(परमात्मा के चरणों में) निवास किया।

आँखों से आँसू गिराता,हिचकिया लेता नूर माही छोटे साहिबजादों की शहीदी ओर नबाब वजीरखान के जुल्म की वार्ता सुनाता गया। राकल्ला और अन्य सुनने वाले जारो जार रोने लगे। परंतु पंथ के सर्जक बिना डोले बैठे रहे। माही ने वार्ता समाप्त की तो गुरु जी ने कहा,"मेरे वीर सुपुत्र मृत नहीं वे अमर हो गये हैं और वे करतार की गोद में विराजमान हुए हैं। अपने जीवन का कण वे इस मुर्दा कौम को दे गये हैं। जुल्मों, अत्याचारों के नीचे दबी हुई, मर चुकी इस कौम को वे जीवित कर गये हैं,यह अब जीवित हो जायेगी और जुल्मों का विनाश करेगी। हाँ मेरे सुपुत्र अमर हैं।,

इन मुगलों की जड़ खोखली हो गई है। सरहिन्द की ईंट से ईंट बजेगी। खालसा की जीत होगी।

कुछ समय और राय कल्ला के पास रहकर गुरु जी वहाँ से विदा हुए। विदा के समय आपने उसे एक तलवार दी जट्टपुर से चलकर गुरु जी दीना पहुँचे। वहाँ चौधरी समीर, लखमीर और तख्तमल तीनो भाईयों ने आपका स्वागत किया और आपको अपने घर में निवास स्थान दिया जैसे–जैसे सिक्खों को गुरु जी का पता लगता गया, वे रोज दर्शनों के लिये आने लग पड़े। सरहिन्द के नबाब को भी पता लग गया कि गुरु जी दीने में हैं उसने तुरंत चौधरी शमीर के नाम आदेश भेजा कि गुरु साहिब को तुरंत ग़िरफतार करके उसके सम्मुख पेश किया जाये। पर चौधरी शमीर और उसके भाई अडिग रहे। उन्होंने नबाब को इस प्रकार संदेश दिया कि हम अपने दीन–पैगम्बर, अपने गुरु की सेवा करते हैं ,यह पाप नहीं, जुल्म नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो सकता। हमारी जान निःसन्देह चली जाये ,परंतु हम अपने गुरु पिता को आपको सौंपने केलिये तैयार नहीं।इसके पश्चात उन्होंने अपना एक समझदार विश्वनीय व्यक्ति सरहिंद भेजा उन्होंने उसको हिदायत दी कि खबरदार होकर इस बात की खबर रखनी कि नबाब का इरादा क्या है और हमें जानकारी देते रहनां। उस व्यक्ति ने रिपार्ट भेजी कि चौधरी का उत्तर सुनकर नबाब ने फौज को तैयारी का आदेश दे दिया है,परंतु कूच करने का आदेश नहीं दिया।

गुरु जी काफी समय चौधरी समीर के पास ठहरे यहाँ बहुत सारी सिक्ख संगत आकर जुड़ी। गुरु जी ने कुछ व्यक्ति तनख्वाह पर रख भर्ती कर लिये और कुछ वक्त वे वक्त के लिये तैयार रहें।

जफरनामा–चौधरी शमीर के पास रहते हुए ही श्री कलगीधर जी ने औरंगजेब बादशाह को फारसी में एक पत्र लिखा जिसका नाम आपने 'जफरनामा' (फतेह या जीत की चिट्ठी) रखा। औरंगजेब के दो पत्र श्री आनन्दपुर धेराव के समय आये थे उसमें बादशाह ने लिखा था कि हमें आकर मिलो। साथ ही उसने यकीन दिलवाया था कि यदि आप किला छोड़ दो, तो आपको कोई दुःख नहीं दिया जायेगा। तत्पश्चात वे सब कसमें और वादे–इकरार तोड़े गये थे।उन पत्रों का उत्तर देने का अभी तक मौका नहीं बना था। अब एक और पत्र आया था। इसमें वही पुराना निमन्त्रण था। गुरु जी ने एकांत में बैठकर इन पत्रों का जबाब बढ़िया फारसी कविता में रचित किया और उसका नाम 'जफरनामा' रखा। इसमें आपने औरंगजेब को जो कुछ कहा,उसका कुछ सार अंश यहाँ प्रस्तुत है– ''मैं तुम्हारा इतबार नहीं कर सकता जो कसमें तूने खूदा और हजरत को साक्षी रखकर खाई थी वे सब तोड़ी गई। इससे साफ सिद्ध होता है कि तुम्हें खुदा का पता ही नहीं और हजरत साहिब का तुझे डर, भय ही नहीं। तू दगेबाज और झूठा निकला है तू बादशाहों का भी बादशाह है,तु मशहूर जनरल भी है, पर दीन–ईमान तेरे नजदीक भी नहीं गया। तेरे दिल में कुछ और है जुबान पर कुछ और। यह तो बदनीति की अति है। तू प्रजा को बिना किसी दोष कसूर के बेरहमी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रौंद रहा है। याद रखना कि यदि तुम खुदा को भूलकर इसी प्रकार जुल्म और अत्याचार करते रहोगे तो जरुर ही ऊपर से एक तलवार तुम्हारे सिर पर चलेगी। दीन–दुखियों की रक्षा और जुल्म अत्याचारों का नाश करने वाला खुदा तुझे तेरी की हुई बदी(बुराई) का फल देगा और जरुर देगा। तू अपने राज की जड़े काट रहा है।— तेरी और अपनी कसमें तोड़कर तेरे लाखें फौजी मेरे पदे पढ़ गये हैं। मेरे चालीस सिक्खों ने तेरे लाखों फौजियों का कच्ची दीवार के पीछे से डटकर मुकाबला किया और अनेको को कत्ल किया। मैं उन लाखों फौजियों के बीच में से भी निकल आया। ठीक है तेरे व्यक्तियों ने मेरे चार पुत्र शहीद कर दिये पर क्या हुआ? मेरा खालसा तो अभी जीवित है वह लेगा बदले गिन–गिन कर——।"

यह पत्र भाई दयासिंह जी और भाई धरम सिंह जी के हवाले किया गया और उनको औरंगजेब की ओर रवाना किया गया, जो उस समय दक्षिण में था। उन्होंने अहमदनगर (दक्षिण) पहुँचकर'जफरनामा' औरंगजेब के हाथ में पकड़वाया। उसको पड़कर औरंगजेबके दिल पर बड़ा गहरा असर हुआ। उसको गुरु जी के विरुद्ध की गई सख्ती के विषय में बड़ा पछतावा हुआ। उसने भाई दया सिंह और भाई धरम सिंह जी को सही–सलामत बिना किसी रोक–टोक के जाने का आदेश दिया साथ ही उसने अपने सलाहकारों को ये आदेश जारी किये कि गुरु जी के साथ कोई युद्ध न करे, उनको कोई दुख तकलीफ न दें, वो जहाँ चाहे ,उनको वहाँ रहने और जाने की पूरी आजादी दी जाएं।

परंतु इस आदेश के पहुँचने से पहले ही सरहिंद के नबाब वजीर खान ने गुरु जी के विरुद्ध जाल बिछाये हुए थे।

मुक्तसर का युद्धः–

जब गुरु जी चौधरी शमीर के पास रह रहे थे ,तब आप को इस गरमागरम हवाले'का पता लगा कि वजीर खान फौज लेकर हमारे पीछे आ रहा है और उसके फौजी दस्ते स्थान–स्थान पर हमारी खोज कर रहे हैं। गुरु जी ने सोचा कि यदि आबादी वाले स्थानपर युद्ध हुआ तो एक तो लोगों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिक कष्ट पहुँचेगा, अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा दूसरा मुग़ल फौज के विरुद्ध डटकर मुकाबला करना कठिन हो जायेगा। इसीलिये आपने आगे जंगल में आने और किसी उचित स्थान पर युद्ध करने का निर्णय किया। आप दीने गाँव से चल पड़े।गुरु जी के साथ इस समय अनेको सिक्ख शूरवीर थे जो अपने आपको आप जी के हवाले कर चुके थे और आपकी खातिर किसी भी प्रकार की कुर्बानी करने को तैयार थे। इनके अतिरिक्त अनेकों बहादुर सिपाही आप ने तनख्वाहदार भी भर्ती किये थे ओर युद्ध सामग्री तथा शस्त्र भी इकट्ठे कर लिये थे।

जलाल, भगत आदि गाँवों में से होकर गुरु जी कोटकपुरा पहुँचे। यह स्थान ऊँचाई पर था और वैरी–दल का आक्रमण रोकने के लिये अत्यन्त उचित थी। गुरु जी ने इसके मालिक कपूर को कहा कि हमें इस गढ़ी में मोर्चा लगाकर तुर्कों के साथ युद्ध करने की इजाजत दे दी जाये परंतु कपूर डरता था उसने न कर दी और कहा'तुर्क मुझे मार डालेंगे। 'गुरु जी ने हँस कर कहा,''कपूर तुझे तुर्कों ने फिर भी नहीं छोड़ना''।

गुरु जी आगे चले गये और कुछ समय पश्चात'ढिलवां कला पहुँचे। उधर सोढ़ी के पास, जो पृथ्वी की औलाद में से था घोड़े और सफेद वस्त्र लेकर उपस्थित हुआ। उसकी विनती मानकर श्री दशमेश जी ने माछीवाड़े वाला नीला चोला (वस्त्र) उतार कर सफेद वस्त्र पहन लिये । गुरु जी ने नीले वस्त्र तार–तार करके आग में फेंक दिये और वचन किया:–'नील वस्त्र लै कपड़े फाड़े तुरक पठानी अमल गया।'

ढ़िलवा कलां से विदा होकर गुरु जी 'जैतों' पहुँचे । इधर खबर मिली की सरहिंद का सूबा नबाब वजीर खान फौज लेकर तुरंत आ रहा है और चार पाँच दिनों तक यहाँ पहुँच जाएगा।गुरु जी जैतों से 'सुनीआर' और रामयाणे होते हुए खिदराणाकी ओर चल पड़े अभी आप इन दोनों स्थानों के बीच में ही थे कि माझे के सिक्खों का एक जत्था उधर आ पहुँचा। इस जत्थे में वे सिक्ख थे जो मालवे, दुआवे आदि इलाकों के सैकड़ों और सिक्खों की तरह आनन्दपुर साहिब के युंद्ध के आखिरी दिनों में गुरु जी को बेढ़ावा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखकर दे गये थे। इनके इधर आने का कारण इस प्रकार बना थाः जब माझे के सिक्खें को साहिबजादों की सहीदी और गुरु कलगीधर जी के साथ बीते शारीरिक कष्टों का पता चला, तो सभी लोगों ने बेढ़ा वाला लिखने वालों को फटकारा। तब इन सिक्खों को अपनी कमजोरी पर पछतावा होने लगा। इन्होंने गुरु जी के चरणों में पुनः वापिस होने ,अन्त में उनकी सेवा करने और आवश्यकता पड़ें पर शहीद होने का निर्णय कर लिया। तब ये सब जत्था बनाकर भाई भागो जी, सुरसिंह और महासिंह जी की अगुवाई में यह जत्था गुरु जी की ओर चल पड़ा और पूछते–पूछते इधर आ पहुँचा।

इतने में पता लगा कि वजीर खान उनके दो कोस की दूरी पर हैः ।गुरु जी खिदराणे की ओर चल पड़े और नजदीक ही एक टीले पर जा डटे। आपने वजीर खान के साथ दो–दो हाथ करने के लिये पहले से ही इस स्थान का चुनाव किया हुआ था।

माझे से आये चालीस सिक्ख ढाव के चढ़त की ओर डट गए। उन्होंने वहाँ– 435 पर चादरें डाल दी, ताकि वजीर खान इनको गुरु जी के तम्बू समझे और सीधा इधर को ही आ जाए। साथ ही उसको यह भ्रम पड़ जाए कि खालसे की बहुत सारी फौज तम्बुओं में उतरी हुई है। शीघ्र ही शाही फौज भी वहाँ आ पहुँची ।बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। सिक्ख सदैव हैरान कर देने वाली बहादुरी के साथ लड़े। उधर टीले से दशमेश जी ने शत्रुओं पर तीरों की बरसात कर दी और अनेको शत्रुओं को अपने तीरों से बेंधकर निश्चेष्ट कर दिया। तुर्कों की बहुत बुरी हालत हो गयी। शीघ्र ही वजीर खान की फौज के पॉव उखड़ गए और वे मैदान छोड़कर भाग गए।

शाही फौज के भाग जाने के पश्चात गुरु जी रण भूमि का चक्कर लगाने लगे। कुछ समय पश्चात आप उधर पहुँचे ,जहाँ मझैलों ने खालसा सेना के आगे मोर्चा लगाये थे। आप ने देखा कि वे सभी धायल या शहीद होकर धरती पर पड़े हुए थे। आपने बारी–बारी से इन शूरवीरों के मुहँ पौंछे, प्यार किया और वरदान दिये। जब आप भाई महो सिंह के पास पहुँचे तो आप ने देखा कि अभी उनमें प्राण शेष हैं। गुरु जी ने उनका शीश गोद में लिया ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनका मुहँ पौंछा भाईसाहिब ने आँखें खोली, अपना शीश श्री दशमेश पिता की गोद में टिका देखकर उनका रोम–रोम महाआनन्द से भर गया। गुरु जी ने अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहा,'महासिंह माँगो जो इस समय माँगना है। आगे से भाई महासिंह जी ने कहा, 'आपका दर्शन करके माँगने की कोई इच्छा ही नहीं रही मुझे सब कुछ मिल गया, जब मंरा शीश आपकी गोद में टिक गया। 'गुरु जी ने फिर कहा,'महा सिंह! कुछ अवश्य माँगो हमारी यह खुशी है।'

भाई महासिंह ने कहा,'यदि आप देना ही चाहते हैं तो जो बेढ़ा मैं और मेरे जैसे अन्य सिक्ख लिख कर दे आये थे फाड़ दीजिए।'

श्री कलगीधर जी ने ,'धन्यसिक्खी,धन्य सिक्खी' कहते कहते अपनी कमर पर पहने कपड़े (कमरकस्सा) में से कागज निकाला, टुकड़े–टुकड़े करके फेंक दिया ओर कहा,'महा सिंह बेटा, तुमने माझे की सिक्खी रख ली। तुमने गुरु से अलग हुए ओर अन्य सभी सिक्खो को भी बख्शवा लिया। धन्य सिक्खी! धन्य खालसा!' भाई महा सिंह की आत्मा शान्त हो गईं उनके नेत्रों मं खुशी के आँसू आ गए फिर उन्होंने लम्बा साँस लिया और सच्चखंड (परमात्मा का निवास स्थान) मे प्रवेश कर गए।

भाई साहब का शीश बड़े आराम से जमीन पर टिका कर गुरु जी भाई भागो जी के पास पहुँचे। आप उनको होश में लाए और भाई महासिंह जी का समस्त वृतांत सुनाया। भाई का रोम–रोम प्रसन्नता से भर गया। गुरु जी ने प्रसन्न होकर भाई भागों जी को नाम–दान दिया और नित्य उपस्थिति में रहने की आज्ञा दी।

ठसके प्श्चात गुरु जी ने शहीदों का संस्कार किया। संस्कार वाला स्थान गुरुद्वारा शहीद गंज है। आपने वचन किया,'यह चालीस ही मुक्त हुए, जन्म--मरण से रहित हुए। युद्ध स्थान का नाम आपने मुक्तसर रखा। यह अब सिक्खों का ऐतिहासिक गुरुद्वारा है। संस्कार के समय जहाँ गुरु जी विराजमान थे, वहाँ गुरुद्वारा 'टुट्टीगंड' है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाँचवा अध्याय

पहाड़ी राजाओं का विरोध

दशमेश इच्छा – जैसाकि आगे बताया गया है कि श्री दशमेश जी की आशा यही थी देश की सभी जातियों के लोगों के मन को धर्म केनाम पर पैदा किए वहमों–भ्रमों से मुक्त करवाकर ओर उनमें धर्म और निज स्वाभिमान की इच्छा जगाकर, उनके शरीरों को बलवान बनाकर ,उनके दिलों में आजादी और स्वाभिमान की खतिर अधिक से अधिक प्रयत्न कर कुर्बानी करने की हिम्मत भरकर,उनकी सामाजिक बुराईयों और बंदिशों को दूर करके, उन सबका एक एंसा संगठन कायम किया जाए जो धर्म और समाज की सभी कमजोरियों से पवित्र, साफ हो, जो शुद्ध, नये संत–शूरवीरों की कौम हो, जो देश मेंसे सभी बंदिशों और गुलामी को दूर करके स्वदेशी, न्यायकारीराज और आजाद एवं नवीन समाज कायम कर सके।

परंतु उच्च जाति के ब्राह्मण,खत्री, राजपूत आदि आपके के इन इन्कलाबी सुधारों के विपरीत थे। परंतु गुरु जी उन सबको समझा–बुझाकर देश भलाई और कौम सुधार के अपने कार्यक्रम में शामिल करने के चाहवान थे। आप के पड़ोसी पहाड़ी राजा आधे–अधूरे आजाद थें। मुगल हुकुमत इनकी ओर कभी–कभी ध्यान करती थी।आम तोर पर ये अपनी मन मर्जी के मुताबिक ही राज करते थे। गुरु जी ने सोचा कि यदि पहाड़ी राजा खालसा पंथ में शामिल हो जाएं तो उनकी प्रजा भी आसानी से सिक्ख धर्म में आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जायेगीं। इस प्रकार खालसा का एक ताकत़वर केंद्र कायम हो जाएगा। यहाँ से उठकर देश के अन्य भागो में भी जहाँ सिक्खी पहले से ही चौगुनी प्रफुल्लित थी।लोग शीघ्रता से सिक्ख बनाये जा रहे थे। इस प्रकार एक ऐसी ताकत कायम हो जाएगी, जो देश भर में फैल जाएगी। देश को हर प्रकार की गुलामी से मुक्त करवाकर इसको सभी पक्षों से उन्नति और खुशहाली की ओर ले जाएगी।

पहाड़ी राजाओं को उपदेश——यह सन् था दशमेश जी की इच्छाओं और योजनाओं का, इनकी पूर्ति हेतु आप जी सम्वत् 1752 की वैसाखी के मेले के अवसर पर रियासत मण्डी के बीच के प्रसिद्ध तीर्थ रवालसर गए।वहाँ पहाड़ी राजा भी पहुँचे हुए थे। गुरु जी ने उनके एकत्र को बुलावा भेजा। इकट्ठे हुए। पहाड़ी राजाओं को गुरु जी ने अपने आदर्शों ,आशाओं ,मनसूबों से परिचित किया और कहा, आओं, हम मिलकर देश में से परदेशी राज को और इसके चलाये जुल्म ,अत्याचार ,अन्याय लूटमार के दौरे को समाप्त करें ,देश ओर समाज का कायाकल्प करके आजादी ,बराबरी और इन्साफ वाला सिलसिला कायम करें। आओं देश और धर्म के शत्रुओं का मिलकर मुकाबला करें और खात्मा करें। आओं अमृत पान करें,सिंह सजें ,खलसा के अगुवा बनकर देश और धर्म की सेवा करें और इधर धर्म वाला समाज और आजादी और समानता वाला राज कायम करने की इस मुहिम के अगुवा बनें। इस प्रकार करने से आप अपना लोक और परलोक दोनों ही सँवार लेंगे ।

परंतु राजाओ के मन पिता पुरुखी धर्मके डाले हुए वहमों –भ्रमों में जकड़े हुए थे उनके दिलों में मुसलमानों की ताकत छाप लगी हुई थी।उनके तन और मन में इन जंजीरों को तोड़ने की शक्ति थी ही नही। वे जैसे भी हो जिन्दगी के दिन व्यतीत करने औरं जो मिल सके वो भोग भोगने की नीति अपनाये बैठे थे ।उन्होंने उत्तर दिया कि आप तो हमारे धर्म को नाश कर रहे है ,आप निम्न जाति को हमारे बराबर करना चाहते हैं ,उन्हें समानता का अधि ।कार देना चाहते हैं। हम इन निम्न जाति वालों के साथ किस प्रकार मिलकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहें ? हम इनके साथ एक बाटे(बर्तन) में से किस प्रकार अमृतपान करलें ? हमारा तो धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।साथ में हमें मुगलों की ताकत का भी ज्ञान है,आप उनके संबंध में भ्रम के शिकार हैं।मुगल बादशाह और मुस्लिम कौम के साथ मुकाबला करने की बात सोचना भी मूर्खता है, मौत को आवाज मारने के बराबर है।आपके और हमारे लिये मुगल पठानों का मुकाबला करना ऐसे है जैसे भेंड–बकरियों का मिलकर शेर भेड़ियों पर हमला करना।हम इस मार्ग पर चलकर जानबूझकर मौत और तबाही को अपनाने को तैयार नहीं ।आप उनके सम्मुख फकीर है और उनसे मुकाबला करने के सपने ले रहे हैं? हमें तो यह भी नहीं मालूम कि आप क्या सोच रहे हैं और क्या तैयारियाँ कर रहे हैं? बल्कि आप हमारा कहना मानकर निर्भय होकर दिन व्यतीत करो ।'

पहाड़ी राजाओं की यह बात सुनकर गुरु जी ने गर्जती आवाज में कहा,'राजाजन! लम्बे समय की पराधीनता और सांसारिक भोग–पदार्थों की भूख ने आपका मन मार दिया है।आपका मन मुर्दा हो चुका है, तुम्हारे शरीर मिट्टी के ढेर बन गये हैं, आपकी हालत दया के योग्य है,आप में स्वविश्वास और स्वाभिमान नहीं रहा ,पत्थरों की पूजा कर–कर के आप भी पत्थर के बन गये हैं।आपको सर्व–शक्तिमान और सर्वकला–सामर्थ्यवान परमात्मा की कला और शक्ति का ज्ञान भी नहीं और उस पर विश्वास भी नहीं।राजाजन! विश्वास कीजिए यदि इन्साान परम[illegible] सहारा लेकर तन–मन से एक होकर, मेहनत करे, प्रयत्न करे , तो संसार की कोई भी शक्ति, कोई भी ताकत उसकी आशा पूर्ति में विघ्न नहीं डाल सकती ।परमात्मा का सहारा लेकर सत्य, धर्म के मार्ग पर चलने वाले वे चमत्कार करके दिखा सकते हैं, जो कमजोर व्यकित को असंभव प्रतीत होते हैं।हमारे इस अमृत में बड़ी चमत्कारी ताकतें हैं , राजाजन !परखकर देख लीजिए।इसके द्वारा मैं असंभव को संभव करके दिख सकता हूँ। सच समझकर जानिए–––

"भेंड़ों को मैं शेर बनाऊँ
राठन के संग रंक लड़ाऊं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूप गरीबन को कहाऊं
चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं
सवा लाख से एक लड़ाऊं
तबै गोबिन्द सिंह नाम कहाऊं।''

उठिये मर्द बनिये !गुरु और वाहे गुरु के शेर बनिये।गिरती कलाओं में से निकलकर चढ़ती कलाओं में आइए।मैं तो राज नहीं चाहता ,राज आपका होगा, आपके पुत्र,पौत्र आजाद होकर राज करेंगे।आओं मेरे सपनों को पूरा करने मैं मेरे साथी, सहायक बनो ।परंतु राजाजन गर्दनें नीची करके बैठे रहे और वहाँ से उठ चले ।वे गुरु जी की बातों को समझने में असमर्थ थे ।उनको तो यह विश्वास नहीं आ रहा था कि गुरु गोबिन्द सिंह जी अपना राज कायम करने के चाहवान नहीं, आप केवल देश को आजाद और खुशहाल बनाने के इच्छुक हैं और न ही उनके मन यह मानते थे कि मुगल ताकत को तोड़ा या समाप्त किया जा सकता है।उन्होंने भला–बुरा देख लिया था कि भंगाड़ी आदि युद्धों में विजय प्राप्त करके भी गुरु जी ने वहाँ के इंच भर इलाके पर कब्जा नहीं किया और किसी को अधीन नहीं किया और हार भी नही थी मनवाई परंतु अभी भी वे युद्ध समझकर बैठे थे कि गुरु जी हमें समाप्त करके हमारे इलाकों पर अपना अधिकार करना चाहते हैं ।

अन्तिम बात यह थी कि पहाड़ी राजा गुरु जी की चलाई लहर और उनके द्वारा किये गये कार्यों को अपने राज–भाग और धर्म के लिये खतरनाक समझाते थे।इसीलिये उन्होंने न केवल गुरु जी के साथ न मिलने बल्कि गुरु जी की ताकत और उनके द्वारा चलाई लहर को भी समाप्त करने का निश्चय किया।वे इस मूर्खता भरे और तंग नजरिये वाले अपवित्र इरादे को पूरा करने के विचार में लगे हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छटा अध्याय

त्यागी– अद्वितीय भेंट

तैयारी– श्री दशमेश जी ने हिन्दुओं की काया–कल्प करने का प्रण किया था वे चाहते थे कि हजारों वर्षों की धार्मिक सामाजिक, गुलामी और अत्याचार, तथा सदियों की परदेशी हुकूमत के नीचे ,राजसी गुलामी से उत्पन्न होकर पक चुकी मानसिक अवस्था ,स्वभाव, प्रयोग करने की क्रिया को बदल दिया जाए ताकि लोग इन जंजीरों को तोड़कर फेंक दें आजाद कौम के , जाति के स्वभाव और विचार ग्रहण कर लें और देश को आजाद और समाज को नया तथा न्यायकारी बनाने की इस मुहिम में बढ़–चढ़ कर भाग लेने के योग्य बन जाऐं। सदियों से पक चुके स्वभाव को बदलना इक लम्बा और कठिन कार्य होता है।यहाँ यह कार्य श्री गुरु नानक देव जी ने आरम्भ किया तथा गुरु साहिबान ने समय की आवश्यकतानुसार इसको चलाया और निभाया था, इस मैदान में बहुत कुछ हो चुका था,परंतु अभी बहुत कुछ करने योग्य है था।श्री दशमेश जी ने वर्षों से आरम्भ किये गये इस कौम सुधार के कार्य को अन्तिम लक्ष्य तक पूरा करने की योजना बनाई और इस मुहिम को आरम्भ किया।

आप जानते थे कि देश के लोगों के मन, स्वभाव,, रुचियों और आचरण को बनाने और सच्चाई के साँचे में ढ़ालने के कार्य को साहित्य विशेषकर कविता के रुप के बीच का साहित्य, बहुत गुणकारी होता है।इसके लिये देश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुधार के कार्यक्रम में आपने प्रथम नम्बर साहित्य की रचना को दिया ।आप ने संस्कृत के पुरातन ग्रन्थ पढ़े और विचार किया।फिर आपने पुराणों –रामायण, महाभारत आदि के शूरवीरों की कथाओं को उलटना, पलटना आरम्भ किया।इस महान कार्य में सफलता प्राप्त करने की खातिर आपने देश भर के कवियों को निमंत्रण दिया और अपने दरबार में रखा।इनमें से उच्च कवियों की गिनती 52 थी,इस सिलसिले में आपने अधिक से अधिक कवितायें रचीं।

कुछ चयनित विद्वानों को आपने बनारस भेजा कि वो वहाँ के पण्डितों से संस्कृत पढ़कर ,सीखकर आयें।इन विद्वानों ने भी वापिस आकर गुरु जी के साहित्य रचना और धर्म प्रसार के कार्यक्रम में बहुत सहायता की।

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि इस साहित्य रचना का मनोरथ यह था कि हिन्दुओं में विशेषकर सिक्खों में नयी जान, नया जोश, नयी तरंग, नयी इच्छा, नये और उच्च विचार भरे जायें ।उनके दिलों में वीर रस भरकर उनको जुल्म,अत्याचार, नाइन्साफी के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार किया जाए।यह जुलम और अत्याचार केवल राजनैतिक ही नहीं था बल्कि धार्मिक और सामाजिक भी था एक ओर तो राजनीतिज्ञ और उनके चेले बेइन्साफी और धक्केशाही करते ओर प्रजा का लहु निचोड़ते थे, दूसरी ओर ब्राह्मण और काजी मुल्ला आदि भी लाखों इन्सानों को एक प्रकार की धार्मिक गुलामी में जकड़े बैठे थे, एक ओर मुसलमान हुकूमत का अत्याचार था,दूसरी ओर पुराने सामाजिक भ्रमों में बँधी हुई जाति पर अभिमान करने वाले ब्राह्मण,खत्री आदि जातियों द्वारा निर्दोष लोगों के साथ किया जा रहा धक्का था। राजसी अत्याचार तो कभी–कभी,निश्चित किये हुये लोगों पर ही हमला करता था,परंतु सामाजिक और धार्मिक अत्याचार , लाखों ही निम्न जातियों के जीवन के प्रत्येक पक्ष और प्रत्येक अंग के ऊपर हमला करता था,बार बार करता था–लंगरें में कुओं, तालाबों पर , मन्दिरों पर , मेलों पर और अनेक स्थानों और अवसरों पर जहाँ–जहाँ लोग एकत्रित होते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दशमेश जी ने इन सभी जुल्मों अत्याचारों और बेइन्साफी को समाप्त करने का प्रण किया था।यह साहित्य रचना इस मनोरथ की सिद्धि के मार्ग का प्रथम कदम था।यह लोगों के दिलों में कमजोरियों और गिरती कलाओं वाली रुचियाँ निकालकर उनमें कुछ कर दिखाने की वीरता ओर वीर रस भरने औरउनको धर्म युद्ध के लिये तैयार करने का एक साधन था।

गुरु जी स्वंय सवारी, शिकार,तीरंदाजी, तलवार चलाने ,बन्दूकों,पिस्तौलों आदिके साथ निशाने लगाने आदि योद्धाओं,शूरवीरों वाले कार्य का अभ्यास किया करते थे। फौजी ठाठ–बाट को संपूर्ण करने के लिये आपने रणजीत नगाड़ा तैयार करवाया। जब आप शिकार पर निकलते थे तो झण्डा झुलाया जाता था और रणजीत नगाड़ा बजाया जाता था।

आपने फौज की तैयारी की और प्रत्येक प्रकार के फौजी सामान की ओर विशेष ध्यान दिया।इस उद्देश्य को मुख्य रखकर आपने सभी स्थानों की संगत को ये आदेश जारी किये कि शस्त्र, घोड़े, बम युद्ध संबंधी सामान तथा अन्य फौजी सामान बतौर भेंट लाया जाए , सभी सिक्ख अपने अपने स्थान पर स्थान पर शस्त्रो का प्रयोग करें ,घुड़सवारी का अभ्यास करें और जो देश और धर्म के लिये अपने जीवन का बलिदान देने को तैयार हैं वे श्री आनन्दपुर साहिब पहुँचकर संत–शूरवीरों की सेना में भर्ती हो जायें।इस आज्ञा की पालना करते हुए अधिक से अधिक श्रद्धालु शूरवीर,गुरु जी की फौज में आकर भर्ती हुए।वे स्वयं को गुरु जी को अर्पित कर देते थे तथा कोई वेतन भी नहीं लेते थे ।इसके अतिरिक्त जैसे–जैसे हालात ने आज्ञा दी,वेतन पर भी फौजी भर्ती किये गए।इनमें सिक्ख भी थे, हिन्दू भी थे, मुसलमान भी थे।महापुरुष सैयद् बुद्ध शाह की सिफारिश पर आपने पाँच सौ पठान अपनी फौज रख लिये थे ।ये शाही फौज में से निकाले गये थे और बेरोजगार थे।इनके पाँच सरदार थे –काले खान,भीखन खान, हयात खान, ऊमर खान, नजाबत खान।पाँच सौ उदासी भी पास आकर टिक गए।राजपूत और जाट भी भर्ती हो गए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्वितीय प्रेम भेंटः–

सन् 1679(सम्वत्1736) की वैसाखी को काबुल, कान्धार, बलख, बुखारा, गजनी आदि देशों की बहुत सारी संगत श्री दशमेश जी के दर्शनों के लिये आई उन प्रेमियों ने गलीचे चादरें आदि ऊन की सौगातें भेंट की।

जब नौंवे गुरु आसाम गये थे,उधर का राजा राम राय आप का श्रद्धालु बना हुआ था। उसके विनती करने पर गुरु जी ने उसको वर दिया कि

परमात्मा आपको पुत्र प्रदान करेंगे। गुरु जी का वरदान फलित हुआ। राजा ने उस राजकुमार का नाम रत्न राय रखा।जब रत्न राय सात साल का हुआ,तब उसके पिता की मृत्यु हो गई। जब वह बारह वर्ष का हुआ तो वह सम्वत् 1737(सन्1680) में अपनी माता सहित श्री गुरु कलगीधर जी के दर्शनों के लिये आया।वह गुरु जी के लिये अत्यन्त अद्वितीय,बहुमूल्य कीमती उपहार लाया।उनमें से विशेष यह था : परसादी हाथी,जिसके सूँड के सिरे से लेकर पूँछ की नोंक तक सफेद लकीर थी और जो अनेक प्रकार की सेवा करने के लिये सिखाया हुआ था,पाँच कलाओं का शस्त्र, जिसकी कला को नापने के लिये बरछी, गुरज, तलवार, पिस्तौल और नेजा, पाँच शस्त्र बन जाते हैं, मोतियों की माला, कलगी, चाँदी का कीमती कटोरा। गुरु जी ने राजा रत्न राय को सिक्खी दान और नाम दान दिया। वह पाँच महीने गुरु जी के दर्शनों और संगत का आनन्द प्राप्त करते रहे।

पाऊँटे की रचनाः–

श्री आनन्दपुर का नगर रियासत कहलूर में था।श्री गुरु तेग बहादुर जी ने यह नगर बसाया था।इस रियासत की राजधानी बिलासपुर थी और इसका राजा भीमचंद्र था।श्री दशमेश जी का नित्य प्रति बढ़ रहा तेज–प्रताप और फौजी ठाठ–बाट देखकर भीमचंद्र के मन में ईर्ष्या जार्गत हो गई, वैर भाव भी उत्पन्न हो गया।

गुरु जी अमन–शान्ति के चाहवान थे। कौम सुधार के कार्य की जो जिम्मेदारी आपने उठाई थीउसकी सफलता के लिये अमन सहित उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रयत्नों की आवश्यकता थी।अपने देश को जुल्म अत्याचार और गुलामी से बचाने के लिये और दुश्मनों को जड़ सहित मिटाने के लिये आपने जो प्रण किया था, उसकी पूर्तिके लिये हालांकि अमन और एकान्त की आवश्यकता थी।आप भीमचंद्र या किसी और के साथ युद्ध में फँसना नहीं चाहते थे ,पर भीमचंद्र अमन भंग करने पर आतुर था। गुरु जी उसके साथ युद्ध करना नहीं चाहते थे, परंतु उससे हार मानकर बैठने को तैयार नहीं थे।इसलिये एक ओर तो राजा भीमचंद्र पड़ोसी राज्यों को गुरु जी के विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न करने लगा और दूसरी ओर गुरु जी ने फौजी तैयारी का कार्य अधिक तेजी और जोश के साथ आरम्भ किया।

पहाड़ी रियासत नाहन या सरमौर का राजा मेदनी प्रकाश गुरु घर का श्रद्धालू था।उसको पता लगा कि भीमचंद्र और उसके साथी गुरु जी के साथ युद्ध करने को तैयार हैं ।उसने सोचा कि यदि गुरु जी को नाहन रियासत में बुला लिया जाये तो साथ ही वह सुन्दर पहाड़ी स्थान में अमन और एकान्त में रह सकेंगे और साथ ही युद्ध भी टल जायेगा। उसका श्रीनगर के राजा फतेह चंद्र के साथ भी कोई विरोध नहीं था।उसका यह विचार था कि यदि गुरु जी मेरी ओर होंगे तो मेरा पक्ष भारी हो जायेगा।यह सोचकर उसने गुरु जी के पास विनती की कुछ समय मेरे पास आकर रहें।

पाऊँटे की रचनाः—

गुरु जी तो एकान्त के चाहवान थे। साहित्यिक रचना का जो कार्यक्रम आपने बनाया था। उसकी पूर्ति के लिये एकान्त वाले ठिकाने और शान्त अमन की आवश्यकता थी।'नाहन' जाने पर वह सबकुछ मिल सकता था। इसी कारण आपने राजा मेदनी प्रकाश का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। आपने वैशाख सम्वत् 1742(अप्रैल सन्1685) में परिवार और पाँच सौ सेना सहित श्री आनन्दपुर साहिब से कूच किया ।मेदनी प्रकाश ने बड़े आदर भाव के साथ आपका स्वागत किया और आपको अपने महलों में ठहराया।

'नाहन' रहते हुए गुरु जी ने पर्वतों की सैर की और शेर, रीछ आदि जंगली जानवरों का शिकार किया। एकदिन गुरु जी और राजा मेदनी प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिकार खेल रहे थे कि राजा ने विनती की जैसे नवम् पादशाह ने आनन्दपुर में नगर बसाया था,उसी प्रकार आप भी मेरी रियासत में कोई स्थान कायम करें। उस समय वे दोनों यमुना नदी के किनारे खड़े थे। स्थान बड़ा रमणीय और सुन्दर था। राजा ने कहा कि श्रीनगर (गढ़वाल) का राजा फतेह चंद्र इस स्थान पर जबरन अपना अधिकांर जमाना चाहता है यदि इधर किला बन जाये तो बड़ा अच्छा हो और यदि वह किला आप ही बनवायें और बसाये तो और भी अच्छी बात होगी। राजा की यह विनती मानकर श्री कलगीधर जी ने सम्वत्1742(सन् 1685) में एक किला बनवाया,जिसका नाम आपने पाऊंटा(पावंटा) रखा।

पाऊंटे टिककर आपने साहित्य रचना का कार्य बड़ी गर्मजोशी के साथ

जारी रखा। आपके यहाँ रहते हुए ही श्रीनगर (गढ़वाल) का राजा फतेह शाह दर्शनों के लिये आया। गुरु जी ने दोनों को उपदेश देकर दोनों के बीच का वैरभाव मिटाया और मित्रता कायम करवाई। जो इलाका राजा फतेह शाह ने राजा मेदनी प्रकाश का अपने अधीन किया हुआ था,उसने वह वापिस कर दिया।

गुरु जी के पाऊंटे रहते समय ही रामराय ने आपके साथ मुलाकात की। पाठकों को यह मालूम ही होगा कि वह गुरु हर राय जी का बड़ा पुत्र था।वह पाऊंटे के नजदीक देहरादून में रहता था। गुरु जी का तेज प्रताप और फौजी तैयारी देखकर उसको डर लगा कि गुरु जी उस पर ही वार न कर दें।उसके मसन्द भी उससे ऊब चुके थे।सोचकर उसने गुरु जी के साथ मुलाकात करने का निर्णय किया,परंतु वह स्वयं ही गुरु बना बैठा था। यदि वह गुरु जी को मिलने आता तो उसके चेले उससे नाराज होते ।उसे यह भी ठीक नहीं लगा कि गुरु जी उसे दर्शन देने उसके घर स्वयं आयें।इसलिये उसने यमुना में बेड़ी में ही उनसे मुलाकात की। रामराय ने विनती की कि मैं वृद्ध हूँ ,मेरे पश्चात् आप मेरी पत्नी के सिर पर हाथ रखना। गुरु जी ने विनती स्वीकार कर ली ।कुछ दिनों पश्चात एक दिन राम राय समाधि में लीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था।मसन्दों ने उसे मुर्दा समझकर उसे जला दिया। गुरु जी देहरादून गये।आपने उसकी पत्नी माई पंजाब कौर को धैर्य बँधाया और बिगडैल मसन्दों को सुधारा।

गुरु जी के पाऊंटे में रहते समय ही सैयद् बुद्ध शाह सदौर वाले आपके दर्शनों केलिये आया और उपदेश सुनकर सिक्ख बना ।इधर ही उसकी सिफारिश पर गुरु जी ने पाँच सौ पठान फौज में भर्ती किये।

पाऊंटे में बहुत रौनक लगी।यह स्थान धर्मप्रचार,साहित्य रचना, विद्या और फौजी शिक्षण का केंद्र बन गया।दूर–दूर से सिक्ख संगत ,साधु,विद्वान,शूरवीर आते जाते रहे और निवास करते थे।पाँच सौ उदासी सिक्ख भी गुरु जी के पास आकर टिके।

इस प्रकार पाऊंटे में निवास करते समय गुरु जी अपने मनोरथ की पूर्ति के प्रयत्न, साधनों की ओर टिक कर ध्यान दे सके।

अमृत का रहस्य,खालसा का अर्थ

अमृत का चमत्कारी प्रभावः–

ऊँच–नीच के भेदभाव को मिटाकर ,जाति–वर्ण, भेंदों के अलगाव को हटाकर, मिटाकर अनेक इष्ट देवों की पूजा के स्थान पर एक ही अकाल पुरुख की रीति चलाकर ,जिस नयी कौम की तैयारी श्री गुरु नानक देव जी ने आरम्भ की थी, उसकी तैयारी पूरी हुई। श्री दशमेश जी के अमृत ने इस रचना के ऊपर पूर्णता की मोहर लगा दी। चारों धर्मों को ढ़ग से मिलाकर एकसार करके पंथ के सृजनहार ने खालसा पंथ को सजाया। जहाँ आपने उच्च जातियों को जाति अभिमान छोड़कर और नम्रताशील बनकर परमात्मा के प्यार और सभी इन्सानों के दुख–दर्द बाँटने की शिक्षा दी, वहीं आपने निम्न जातियों वालों को नीचता और हीनता के सभी ख्याल ,वहम् और रुचियाँ छोड़कर अपने आप को औरों की तरह समझने और, पूरे मान सम्मान के साथ रहने का ढ़ग सिखलाया। एक अंग्रेज इतिहासकार लिखता है–

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो लोग उनके (श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी) के नियमों और शिक्षा उपदेशों को मानते थे, वे सब एक स्तर के थे जो ब्राह्मण उनके पंथ में शामिल हो जाता था, वह उस सिक्ख शूद्र से किसी भी तरह उच्च या पवित्र नहीं था। मिना भी जो उसके घर का कूड़ा उठ़ाता था। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का उद्‌देश्य यह था कि सभी सिक्खों को बराबर का अधिकार दिया जाये और उनकी उन्नति, प्रगति और उच्चता उनके अपने परिश्रम और कार्य के मुताबिक हो गुरु जी जानते थे कि निम्न जातियों और भयभीत मन वाले लोगों को स्वाभिमान और स्वयं पर विश्वास रखना सिखाना अत्यन्त आवश्यक था इसीलिये उन्होंने अपने सिक्खों के नाम बदलकर 'सिंह' अर्थात शेर रख दिये। इस प्रकार उन्होंने सभी सिक्खों को वह खिताब दिया जो उससे पहले हिन्दुस्तान की सबसे जबरदस्त शूरवीरों की कौम,राजपूतों ने अपना अधिकार किया हुआ था। नाम परिवर्तन के कारण सिक्ख स्वयं को सर्वोच्च समझने लग पड़ा।

खंडे का अमृतपान करने और सिंह बनने से छोटी और बड़ी सभी जातियों के सिक्खों की कायाकल्प हो गई। उनके तन–मन में इन्कलाब जागृत हो गया। निम्न से निम्न जातियों के लोग , जिनको किसी भी गिनती में नहीं माना जाता था और जो अपने आप को निर्बल समझकर उच्च जाति वालों के बराबर होकर चलने यां सामने होकर गर्दन ऊँची करके खड़े होने के योग्य़ नहीं यमझे जाते थे , वे अमृतपान करके उच्च और बलवान बन गये ,निर्भय और निडर होकर सीना तानकर च़लने के योग्य बन गये। नाई, लोहार, तरखान, चमार, मेहनती–मजदूर लोग ,जो निम्न जातियों में गिने जाते थे, जो किसी भी कार्य के योग्य नहीं थे, अमृतपान करके वे निर्भय और बलवान योद्धा बन गये , उनके सम्मुख बड़े–बड़े योद्धा ,बलवान भी न टिक सके। उनकी बहादुरी के करनामे सुनकर दुनियाँ हैरत में पड़ जाती थी।

यह परिवर्तन केवल पुरुषों में ही नहीं बल्कि स्त्रियों में भी आया, क्योंकि सिक्ख समाज में स्त्री–पुरुष में बराबरी की जो रीति श्री गुरु नानक देव जी ने चलाई थी और अन्य गुरु साहिबान ने परिपक्व की थी ,उसको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुख्य रखकर श्री दशमेश जी ने स्त्रियों को पुरुषों के बराबर ही अमृत का हकदार बना दिया था। अमृतपान करके वे भी शेरनियाँ बन गई। वे अमृतपान करके बलहीन नहीं रह जाती थीं। बल्कि बलशाली बन जाती थीं।सिक्ख इतिहास में अनेक स्त्रियों ने ,दिलेरी, निर्भयता और शूरवीरता के वे कारनामें दिखाये , जो पुरुषों के कारनामें को भी परे करते थे।ये परिवर्तन श्री दशमेश जी के समय से ही आरम्भ हो गया।

खालसा की महिमाः–

जैसे सफल कलाकार अपनी बढ़िया रचना को देखकर प्रसन्न होता और उसकी खूबियों (गुणों) को एक मस्ती में आकर वर्णित करता है, वैसे ही खालसा पंथ के सजृनहार श्री दशमेश जी अपनी इस पूर्ण हुई, खालसा कौम को देखकर गदगद हो उठते और बड़े चाव और मान के साथ इसकी प्रशंसा करते थे ।खालसा की महिमा करते एक बार आपने इस प्रकार फरमायाः–

युद्ध जीते इन ही के प्रसाद
इन ही के प्रसाद सू दान करें।
अघ–अघ अऊगण तरे इन ही के प्रसाद
इन ही की कृपा फुन1धाम 2 भरे
इन ही के प्रसाद सू बिदिआ लाई
इन ही की कृपा सब सतु 3 मरे
इन ही की कृपा के सजे हम हैं,
नहीं मो सो गरीब करोर परे।
सेव करि इन ही की मन भावत
आऊर की सेव सुहात न जी को
मो ग्रही मैं तन ते मन ते,
सिर लऊ धन है सभहिईन ही करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वीरता जागृति के साधन :-

श्री दशमेश जी हर ढ़ग से , हर अवसर पर ,खालसा में वीर रस भरना और उनमें धर्मयुद्ध के लिये चाव , उत्साह भरना चाहते थे ।इसी उद्देश्य की चूर्ति के लिये आप ऊँची , गम्भीर आवाज में निम्नलिखित प्रार्थना रोज पढ़ते थे और अपने साथ–साथ सिक्ख संगत को भी पढ़ाते थे

देहि, शिवा बर मोहि इहै
सुभ करमन ते कबहु न टरो ।
न डरौं अरि सो जब जाये लरौं
निसचै कर अपनी जीत करौं।
अर सिक्ख हो अपने ही मन को
इह लालच हउ गुण तो ऊचरो
जब आव की अऊध निधान बनै
अत ही रण मैं तब जूझ मरो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री दशमेश जी समय–समय पर सिक्खों को बताया करते थे

कि हम अकाल पुरुख की आज्ञा का पालन करते हुए जिस कार्य सिद्धि के लिये जगत में आए हैं और उनको ललकार कर कहते थे कि यह महान और उत्तम कार्य आपकी सहायता से ही पूर्ण होगा। आप सदैव कहते थेः–

"हम इह काज जगत मो आए।।

धरम हेत गुरुदेव पठाए6।।

जहां तहां तुम धरम बिथारो 7।।

दुस्ट दोखीअन 8 पकर पछारो 9।।

याही काज धरा हम जनम ।।

समझ लेहु साणु सब मनम ।।

धरम चलावन संत उबारन ।।

दुस्ट सभन को भूल उपारन।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सातवाँ अध्याय

होला महल्ला का महत्व

प्रत्येक देश अपने–अपने ढ़ग से ठंड के निकल जाने और खुली बहार आने की खुशी मनाता है।इस देश में इन्हीं दिनों में होली का त्यौहार मनाया जाता है। जब यह देश अपनी शान, सभ्यता, सभ्याचार में कायम था,तब होली अत्यन्त खुशियों ,जश्नों और रीतियों के साथ मनायी जाती थी।जब इस देश की इधर के समाज की हालत बुरी हो गई,तब होली के त्यौहार की वह बुरी हालत हो गई, जो हम आजकल भी देखते हैं।सत्य यह कि किसी कौम का अपने त्यौहार मनाने का ढ़ंग उसकी गिरी हुई ऊँची हालत की निशानी भी होता है और नतीजा भी।देश की गिरावट और निम्न अवस्था के कारण तब भी होली मनाने का ढ़ग गंदा हो चुका था। यह खुशियों भरा त्यौहार कूड़े और गन्दगी के साथ मनाया जाता था।

श्री दशमेश जी ने यह त्यौहार मनाने का नया तरीका आरम्भ किया , जो ऊँची सच्ची आजाद और शूरवीर कौम के लिये शोभाजनक थां।होली के दिनों में सुबह के दीवान के पश्चात कई दरबार लगते थे और राग सभायें होती थीं।चयनित कवि ,कीर्तन करने वाले और रागी अपने–अपने जौहर दिखाते थे।सारा दिन खुशियों और उत्साह में व्यतीत हो जाता, दिलों में नई उमंगें, नयी जान , नयी आत्मा, हिल्लोरें लेती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होली से अगला दिन विशेष उत्साह शानो–शौकत के साथ मनाया जाता था।इसका नाम गुरु जी ने होला–महल्ला रखा।गुरु जी अपनी फौज को दो हिस्सों में बाँट देते थे।दोनों की वर्दी अलग–अलग होती थी।एक जत्था एक हवेली में डेरा लगा देता था, जिसको किला समझा जाता था।दूसरा जत्था गुरु जी की अगुाई तले उस किले को जीतने के लिये ,पूरी शानो–शौकत के साथ चढ़ाई करने आता था खूब डटे रहने वाली झूठी लड़ाई होती। दोनों जत्थों को आदेश होता था कि किसी की जान न ली जाये न हीं किसी को जख्मी किया जाये ।दोनों ओर के छोटे– बडे मुखिया अपनी– अपनी फौजी योग्यता का प्रयोग करते थे अन्त में किला जीत लिया जाता था।इस जीत को मनाने का अनोखा ढ़ग भी गुरु जी ने आरम्भ किया बहुत सारा देर का प्रसाद(कड़ाह प्रसाद) साफ–सुथरे स्थान पर और साफ–सुथरी चादर पर रख जाता था।सिक्खों को आदेश होता था कि सभी शोर मचाकर ,जितना जिसकी किस्मत में हो, दांव लगाकर खालो।साथ ही यह भी कड़ी चेतावनी होती थी कि प्रसाद की बेअदबी (अपमान) न हो और न ही कोई लूट खसूट या छीना झपटी हो और न ही रंग में भंग पड़े ।इस प्रकार बड़ा मौज मेला बनता था।

सचखण्ड वापसी :–

समस्त राजपूताने का चक्कर लगाते ,स्थान–स्थान पर गुरु सिक्खी का प्रचार करते और खुले रुप से अमृत का वितरण करते श्री दशमेश जी उदयपुर के राजनगर के बचौर (अथवा बागौर) पहुँचे तो आपको समाचार मिला कि औरंगजेब मृत्यु को प्राप्त हो गया है और उसके पुत्रों के बीच दिल्ली के तख्तोताज के लिये झगड़ा आरम्भ हो गया है।शाहजादा मुअज़म ने जो बाद में बादशाह बना ,भाई नन्द लाल द्वारा गुरु जी से आशीर्वाद और सहायता माँगी।यह शहजादा अपने पिता की अपेक्षा बहुत अच्छा और खुले दिल था।इसलिये गुरु जी ने उसकी सहायता के लिये भाई धर्म सिंह जी की जत्थेदारी के तहत एक जत्था भेजा ।8जून सन्1707 को आगरे के समीप जाजू ओर मुकाम दोनों भाईयों का युद्ध हुआ।जिसमें शहजादा मुअज़म का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाई,शहजादा आजम मारा गया, शहजादा मुअज़म जीत गया और दिल्ली का बादशाह बन गया।उसने अपना नाम बहादुर शाह रखा।

बहादुर शाह ने गुरु जी के दर्शनों की कामना की ,परंतु ऐसे समय में गुरु जी के पास पहुँचना असमर्थ था, उसने विनतीकर भेजी कि आगरा आकर दर्शन देने की कृपा करें ।गुरु जी उसको श्रावण सम्वत् 1664(जुलाई सन् 1707) में आगरे आकर मिले ।बहादुर शाह ने आपका अत्यन्त स्वागत किया।आपको सिरोया ओर आठ हजार रुपये की भेंट प्रदान की ।जब बहादुर शाह को सरहिन्द के सूबा वजीर खान की ओर से किये गये अत्याचारों का पता लगा तो उसने गुरु जी के साथ हमदर्दी जाहिर की ओर सूबा वजीर खान को सजा दिलवाने का आश्वासन दिया।

कुछ समय पश्चात बहादुर शाह ने राजपूताने से दक्षिण की ओर कूच किया।गुरु जी साथ ही चल पड़े ।आपको विश्वास था कि बहादुर शाह से विचारोपरान्त हुकूमत से समझौता हो सकेगा।रास्ते में वह सिक्खी का प्रचार करते गये और नामदान का महत्त्व बताते गये। ऐसे प्रचार के कारण आप कई–कई दिन शाही डेरे से अलग होकर नजदीक के नगरों में चले जाते।

दक्षिण पहुँचकर आप बहादुर शाह से अलग होकर सितम्बर 1708 के आरम्भ में नांदेड़(हैदराबाद) पहुँचे आप ने उधर ही टिके रहने का निर्णय किया।शीघ्र ही गुरु जी ने उधर रह रहे एक माधों दास वैरागी को अपने आत्मिक बल से जीता और नामदान देकर गदगद किया ।उसने अमृतपान किया और माधोदास वैरागी से बंदासिंह बहादुर बन गया।गुरु जी ने उसको शस्त्र प्रदान करके पाँच सिक्खों सहित खालसा का जत्थेदार बनाकर पंजाब की ओर भेजा।

बहादुर शाह के साथ गुरु जी की बढ़ रही मित्रत्रा को देखकर सरहिन्द के सूबेदार वजीर खान की छाती पर साँप लोटने लगे। उसने गुरु जी को इतने कष्ट दिये थे और साहिबजादों को शहीद करवाया था।उसको हर समय यही डर सताता रहता कि यदि गुरु जी और बहादुर शाह का आपस में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझौता हो गया तो मेरी खैर नहीं ।उसकी गुरु जी के विरुद्ध की गई सख्ती, अत्याचारों का हाल सुनकर तो औरंगजेब जैसे कट्टरपंथी बादशाह ने भी यह आदेश जारी कर दिये थे कि गुरु जी को तंग न किया जाये और उनकी जब्त की गई समस्त जायजाद में से उन्हें खर्च दिया जाये। बहादुर शाह ने भी सरहिन्द के सूबेदार को आदेश भेजा था कि गुरु जी को प्रतिदिन 300 रुपये का खर्चा दिया जाये इन सब कारणों से वजीर खान को अपनी जान की चिन्ता पड़ गई ।उसको याद था कि जहाँगीर के आदेश से गिरफतार होकर शहीद किये गये श्री गुरु अर्जुन देव जी को कष्ट देने वाले चन्दू को उसी जहाँगीर ने श्री हरगोबिन्द साहिब के हवाले कर दिया था और आज्ञा दी थी कि जो आपका मन करे , इसका वह हाल कीजिए, चाहे मारो , चाहे रखो ।इसलिये वजीर खान के मन को यह पूरा यकीन था कि जब तक गुरु जी जीवित रहेंगे, उसे हर समय खतरा बना रहेगा ।इस विचार के अधीन उसने गुरु जी का कत्ल करवाने का निर्णय किया।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने दो पठान गुरु जी के पीछे भेजे ,वे नांदेड़ पहुँचकर गुरु जी के श्रद्धालु बनकर प्रतिदिन गुरु जी के दरबार में हाजिर हो जाया करते थे। वे अपने निश्चित किये गये कार्य के लिये अवसर तलाशते रहे ।एक दिन रहिरास(सायंकाल के समय किया जाने वाला पाठ) के दीवान के पश्चात गुरु जी विराजमान थे ।आपके पास केवल एक सिक्ख था ।वो भी सो रहा था ।ये दोनों पठान आकर गुरु जी के पास बैठे हुए थे ।एक ने अचानक उठकर गुरु जी छाती की दायीं ओर छुरा घोंप दिया ।वह दूसरा आक्रमण करने ही वाला था कि गुरु जी उसे अपनी तलवार से समाप्त कर दिया ।दूसरा पठान भागने का प्रयत्न करने लगा। तो सिक्खों ने उसे भी समाप्त कर दिया

गुरु जी के जख्मों को सीया गया और जख्म धीरे–धीरे भरने लगा। ।कुछ दिन पश्चात आप एक सख्त कमान(धनुष) पर डोरी चढ़ाने लगे ,आपके जख्मों के टाँके टूट गये और लहु की धारा बह निकली। आपने अनुभव कर लिया कि आपका सचखण्ड जाने का समय आ गया है ।आपने पाँच पैसे और नारियल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के आगे रखकर माथा टेका और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरुता प्रदान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ।खालसा पंथ को गुरुता आप चमकौर साहिब से चलने के उपरान्त दे आये थे ।इसलिये आपने आज्ञा दी कि आगें से गुरु ग्रन्थ साहिब ही गुरु होंगे कोई भी शरीर धारी गुरु नहीं होगा।

अगले दिन कार्तिक शुक्ला 5(6 कार्तिक)सम्वत् 1765, मुताबिक 7 अक्टूबर सन् 1708 को आप परमामा के चरणों में विलीन हो गये ।उस स्थान पर श्री हुजूर साहिब जी अबिचल–नगर गुरुद्वारा है, जो सिक्ख पंथ का चौथा तख्त साहिब है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आठवाँ अध्याय

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के शिक्षा संबंधी विचार

शिक्षा ज्ञान को क्रियात्मक रुप से जीवन में ढ़ालने के कौशल की प्राप्ति है । शिक्षा जीवन जीने की कला है।व्यक्ति की शक्तियों और ताकत का खजाना है। शिक्षाके इन विशाल अर्थों के अनुसार श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का सम्पूर्ण जीवन अपने शिष्यों को शिक्षित करने का क्रियात्मक प्रयास है।उन्होंने अपने शिष्यों का केवल बाह्य स्वरुप ही नहीं बदला उनकी चिन्तन, विचारशक्ति भावनात्मक स्वरुप सदैव के लिये परिवर्तित कर दिया।संत सिपाहियों ,स्वाभिमानी, शूरवीरों को जन्म दिया ।पराजित परतन्त्र कौम की सुप्त शक्तियों को जागृत कर सवा लाख से एक को लड़ा दिया।देशकौम के लिये हँसते– हँसते प्राण न्यौछावर करना सिखाया।उनका शैक्षणिक मार्गदर्शन और महान व्यक्तित्व का स्थायी प्रभाव आज भी हमारे मन पर इस प्रकार अंकित है कि समय के तूफान भी उसको मिटा नहीं सकते।

गुरु गोबिन्द सिंह जी एक महान योद्धा ,वीर और संत सिपाही थे परंतु वह एक महान साहित्यकार विद्वान और शिक्षा शास्त्री भी थे।उन्होंने पुरातन साहित्य का अध्ययन, अध्यापन शुरु किया और भाषा और साहित्य को भरपूर किया।उन्होंने आनन्दपुर साहिब ,पावंटा साहिब और दमदमा साहिब में शिक्षा केंद्र स्थापित किये।दमदमा साहिब को आज भी गुरु की काशी कहा जाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है।उन्होंने पाँच सिक्खों को बनारस संस्कृत पढ़ने के लिये भेजा परम्परा यह बताती है कि गुरु जी दमदामा साहिब की विभिन्न दिशाओं में कलमें बिखरते थे ताकि वहाँ के लोग सुन्दर लिखाई लिख सकें – पढ़ना– लिखना सीख सकें। गुरु महाराज के प्रयासों के फलस्वरुप आनन्दपुर साहिब में एक भी अशिक्षित व्यक्ति नहीं रहा। गुरु जी कहा करते थे कि जो पढ़ लिख नहीं सकता वह गधे के समान है।

अधर कछु न पढ़े तिन गरधव इक वारी।।

जो कोई भी आनन्दपुर साहिब आता उसे गुरु मुखी अक्षर सिखलाकर भेजा जाता ।गुरुवाणी कण्ठ करवाने के लिये विशेष प्रबन्ध किये जाते ।मेलों पर गृरुवाणी के गुटके बाँटे जाते।गुरु जी के हुक्मनामें के शब्द थे ' जो गुरु का सिक्ख बढ़िया पोथी, बढ़िया घोड़ा और शस्त्र लेकर उपस्थित होगा उस पर हमारी असीम अनुकम्पा होगी ।' घोड़े और शस्त्र के साथ बदियां पोथी की माँग उनके शैक्षणिक प्रचार ओर प्रसार को दर्शाती है।गुरु जी के शिक्षा प्रसार के इन क्रियात्मक प्रयासों के द्वारा आनन्दपुर साहिब ,पावंटा साहिब और दमदमा साहिब शिक्षा, साहित्य ओर संगीत के केंद्र बन गये ।

गुरु गोबिन्द सिंह अपनी शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी के व्यक्तित्व के चतुमुर्खी विकास पर बल देते हैं।सिक्ख या शिष्य आत्मिक रुप से बलवान ,मानसिक रुप से सजग और शारीरिक रुप से फौलादी भुजाओं वाला हो सामाजिक रुप से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' में विश्वास रखने वाला और कड़े परिश्रम द्वारा जीविका अर्जन करने योग्य होना चाहिये।

1.शिक्षा आत्म तत्व की पहचान के लिये :–

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के काव्य में मुख्य स्वर एक योद्धा और वीर सैनिक का है परंतु वह विचित्र नाटक में स्पष्ट लिखते हैं कि वह तपस्या कर रहे थे जब कि गुरुदेव परमात्मा ने उन्हें संसार में दुष्टों के दमन और संतों की रक्षा के लिये आदेश दिया।उनकी वाणी में आध्यात्मिक विकास पर बल बार–बार मिलता है।शिष्य की आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत और विकसित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करने की इस प्रक्रिया में गुरु जी की सहायता की आवश्यता है और उनका गुरु कोई और नहीं परम पुरुख परमात्मा है।

2.ग्यानहि की बदनी मनु हाथ लैः–

गुरु गोबिन्द सिंह जी शिक्षा को शरीर मन और आत्मा को रोशन करने वाली शक्ति मानते हैं।जैसे दिया जलाने से अन्धेरा दूर हो जाता है ,उसी प्रकार ज्ञान प्राप्ति द्वारा मन की अज्ञानता दूर हो जाती है और ज्ञान के प्रकाश का प्रसार होता है।गुरु जी ज्ञान को गुरु मानते हैं जिसके द्वारा आत्मतत्त्व और आत्म अनुभूति प्राप्त होती है।ज्ञान शक्ति है इसीलिये गुरु जी ज्ञान की बढ़नी(झाड़ू) को हाथ में लेकर कातरता को कमजोरी को दूर करने के लिये कहते हैं क्योकि ज्ञान के प्रकाश के बिना आध्यात्मिक ग्रन्थों के पठन–पाठन कों भी समझा नहीं जा सकता। ज्ञान के द्वारा मन का विकास होता है और मन को गुरु द्वारा विद्या की प्राप्ति होती है।

3.भारी भुजान को भारी भरोसोः–

'भारी भुजान को भारी भरोसो'। सत्य ही गुरु जी के इस कथन में सार्वभौमिक सत्य छिपा हुआ है।गुरु जी शक्तिशाली वीर स्वरुप,जंगी बाड़ा, चमकती कलगी , सफेद बाल अस्त्र–शस्त्र ,तीर–कमान, नेजा, बरछाढ़ाल नीला घोड़ा उनकी शारीरिक शक्ति के चिन्ह हैं, जो हमें आज भी प्रेरणा देते हैं।उनकी शारीरिक शक्ति और बल को दर्शाते हैं ।गुरु जी खेलों और कसरतों के भारी संरक्षक थे ।उन्हें स्वाभिमान की रक्षा के लिये ,दुष्टों के दमन के लिये ,देश कौम और धार्मिक स्वतंत्रता के लिये , शारीरिक दृष्टि से मजबूत सैनिकों की आवश्यकता थी।

गुरु जी विद्यार्थी की शिक्षा में खेलों को अत्यन्त महत्त्व प्रदान करते थे और शिक्षा की इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने अनेकों क्रियात्मक सार्थक पग उठाये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

4.सैनिक शिक्षाः–

गुरु हरगोबिन्द साहिब द्वारा चलाई सैनिक सिखलाई को गुरु गोबिन्द सिंह ने सिक्खों की शैक्षणिक और धार्मिक शिक्षा का अंग बनाकर पंजाब को सदा–सदा के लिये एक स्थायी धरोहर के रुप में दे दिया। उन्होंने प्रथम पाँच प्यारों का चुनाव खंडे की नोंक पर किया। उन्होंने पाँच प्यारों को पाँच ककार धारण करवाकर ,सिकखों को आदेश दिया' कि गुरुओं द्वारा रचित शब्दों का पाठ करो , प्रभु का ध्यान करो ,रोजाना जीवन के कर्तव्यों का निर्वाह करो और हथियारों का अभ्यास करो । .

गुरु जी संत सिपाही थे।अतः उनकी शिक्षा प्रणाली में भक्ति और शक्ति का सुन्दर समिश्रण मिलता है।उन्होंने पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ हथियारों की सिखलाई को सिक्खों की शिक्षा प्रणाली का आवश्यक अंग बना दिया ।

डॉ० रोशन लाल आहूजा और डॉ० हरबंश सिंह के अनुसारः नकली युद्धो के द्वारा सिक्खों को सैनिक शिक्षा दी जाती ।दिन का अधिकांश समय सिक्खों को सैनिक शिक्षा प्रदान करने में व्यतीत होता ।इस सैनिक सिखलाई द्वारा गुरु जी ने एक विशाल सेना तैयार करके राजाओं और मुगलों के विरुद्ध चौदह लड़ाईयाँ लड़ी।(1) 'ग्रीनलेस डक्कन' के अनुसार पढ़ाई–लिखाई के साथ सैनिक सिखलाई सिक्खों की शिक्षा का अनिवार्य अंग बन गई।(2)

डॉ०हरबंश सिंह के अनुसार–इस सैनिक शिक्षा ने जस्सासिंह अहलूवालिया, नबाब कपूर सिंह, बाबा आल्हा सिंह, हरि सिंह नलवा, अकाली फूला सिंह,श्याम सिंह अटारी वाला और महाराज शेरसिंह जैसे योद्धाओं को जन्म दिया।(3)

5.सैनिक शिक्षा के लिये साहित्य की प्रेरणाः–

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी संत सिपाही के साथ महान साहित्यकार भी थे।जिन्होंने अपने वीर काव्य निर्माण के द्वारा और संगीत की शक्ति के द्वारा निर्जीव निष्प्राण कौम में नवीन जोश और प्राणों का संचार किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(1) सिक्ख गुरुओं की शैक्षणिक देनः डॉ॰ रोशन लाल आहुजा और डॉ॰हरबंश सिंह,पृष्ठ–157

(2) वही,ग्रीन लेस डक्कन, पृष्ठ–158

(3) वही, डॉ॰हरबंश सिंह,पृष्ठ–158

डॉ॰ गोकुल चंद्र नारंग के अनुसारः–युद्ध के वातावरण की सर्जना के लिये गुरु जी ने साहित्य का सहारा लिया ।उनके दरबार में 52 कवि और लेखक थे। जिनकी सहायता से उन्होंने राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के लिये राष्ट्रीय उत्साह पैदा करने के लिये रामायण, महाभारत, श्री मद्भगवत गीता और पुराणों की कहानियों को हिन्दी में अनुवाद करवाया।(1)

चंडी की वार दीवान में विशेष रुप से एकत्रित संगत में गाई जाती।चंडी की वार का एक–एक पद ,एक–एक पंक्ति,एक–एक शब्द श्रोताओं में नवीन प्राणों और उत्साह का संचार करता और उन्हें युद्ध करने की प्रेरणा देता ।वह बार–बार प्रभु के सम्मुख शत्रु से लड़ते हुए शहीद होने की प्रार्थना करते हैं।

गुरु जी संस्कृत ,हिन्दी, पंजाबी, फारसी, के ज्ञाता और प्रकांड पंडित थे। उन्होंने दशम् ग्रन्थ ब्रज भाषा में लिखा।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–दशम् ग्रन्थ को भारतीय साहित्य कला ,संस्कृति और ब्रजभाषा शब्दावली का लोककोश मानते हैं।(2)

6. सुन्दर लिखाई की शिक्षाः–

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने भाई मनी सिंह की सहायता से श्री ग्रन्थ साहिब का संस्करण तैयार करवाया और उसकी चार प्रतियाँ बनवाई ।डॉ॰ हरबंश सिंह के अंनुसार – दमदमा साहिब और अमृतसर हस्तलिखित कला के विशेष केंद्र बन गये जहाँ गुरु ग्रन्थ साहिब की बड़ी मनोयोग से हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार की जातीं और गुरु वाणी की पोथियॉ तैयार कर संगतों में बाँटी जातीं।(3)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'डॉ॰रोशन लाल आहूजा' के अनुसार निरमले साधुओं के मठों के बुगों में इस कला की विशेष सिखलाई दी जाती थी।(4)

(1) वहीं, डॉ॰गोकुल चंद्र नारंग,पृष्ठ–159

(2) वहीं, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी,पृष्ठ–160

(3) वहीं, डॉ॰ हरबंश सिंह, पृष्ठ–161

(4) वहीं, डॉ॰रोशन लाल आहूजा, पृष्ठ–161

7.शिक्षा चरित्र निर्माण और नैतिक विकास के लिये :–

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सदैव संयम रखने पर ही बल दिया। काम, क्रोध, लोभ ,मोह, अहंकार इन पाँच विकारों पर नियन्त्रण प्राप्त करके ही आत्मतत्व की अनुभूति और परमसुख की प्राप्ति की जा सकती है।इसके नियन्त्रित करके आत्मतत्व की अनुभूति करके परमसुख परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है।,पापों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

गुरु जी परमात्मा के सम्मुख सदैव शुभकार्य करने का वरदान माँगते हैं।शुभकर्म, नैतिक और सदाचार जीवन के आधार है।उन्होंने अपने हुक्मनामे में तम्बाकू–शराब आदि नशों के विरुद्ध आदेश दिये हैं।

8क्रियात्मक जीवन के लिये शिक्षाः–

गुरु साहिबान गीता के कर्मयोग में विश्वास रखते हैं।सिक्ख धर्म क्रियात्मक जीवन जीने का ढ़ग बताता है।काम करना सिक्ख धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है। साहिबान पलायनवादी तपस्वी जीवन के विरुद्ध हैं।बंदा बहादुर का उदाहरण प्रसिद्ध है।वह समाज से दूर तपस्वी जीवन व्यतीत करता था।गुरु जी ने उसे उपदेश दिया कि वह अपनी ताकत को व्यर्थ न गँवाकर मानवता की सेवा में लगाये।इसप्रकार वह माधोसिंह बैरागी से वह बंदा बहादुर बन गया।अकर्मण्यता से उसके जीवन को गुरु जी कर्म की ओर ले गये ।

गुरु साहिबान ने इस क्रियात्मक जीवन दर्शन और परिश्रम के जीवन के सिद्धान्त ने पंजाब और पंजाबियों की कायाकल्प कर दी है।पंजाबियों ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने कड़े परिश्रम के द्वारा न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान और स्थान बना लिया है।

9गुरु शिष्य का संकल्पः–

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पाँच प्यारों का खण्डें की नोंक पर चुनाव किया था।वह अपने शिष्यों को अपने बेटों से भी अधिक प्यार करते थे।उन्होंने अपने शिष्यों के लिये अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया।उन्होंने अपने चारों बेटों को देश और धर्म की खातिर कुर्बान कर दिया।

वह अपने शिष्यों को असीम प्रेम करते थे।तभी तो वह कौम और देश पर प्राण न्यौछावर करने वाले सैनिक तैयार कर सके ।उन्हें अपने शिष्यों की सेवा द्वारा अद्वितीय प्रसन्नता प्राप्त होती थी।

10.नारी के सम्मान की शिक्षाः–

सिक्ख धर्म ने नारी के मान सम्मान को ऊँचा उठाने में क्रांतिकारी भूमिका अदा की है।सम्पूर्ण गुरु साहिबान ने नारी का जीवन सुखमय बनाने के लिये अहम् कदम उठाये ।गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा औरत के वीरांगना रुप को चित्रित किया गया है।

चंड़ी के वीर चरित्र द्वारा जहाँ स्त्री का वीरांगना रुप उभरता है,वहाँ पुरुषों को प्रेरणा मिलती है कि यदि अकेली चंड़ी हाथ में तलवार लेकर उतने दुष्टों का विनाश कर सकती है तो वे मुगल सम्राट के दैत्यों को क्योंनहीं भूमिसात कर सकते।गुरु जी ने शूरवीर दुर्गा के प्रसंग द्वारा भारत की स्त्री को प्रेरणा दी है।

गुरु जी ने स्त्री को पुरुष के बराबर करवाकर सिंहनी बनने का अधिकार प्रदान किया।उनके समय औरतें बिना परदे के संगत और पंगत की सम्पूर्ण क्रियाओं में सक्रियता से भाग लेती और पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती दिखाई देती हैं गुरु जी को उनकी माताजी ने बचपन से लेकर जवानी तक संरक्षण प्रदान किया।उन्होंने छोटे साहिबजादों को धर्म छोड़ने की अपेक्षा शहीद होने की प्रेरणा प्रदान की है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

11.भावनात्मक ,कलात्मक,सांस्कृतिक विकासः—

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी एक महान कवि और साहित्यकार थे,जिनके काव्य का आधार संगीत हैं वह विद्यार्थी के भावनात्मक , कलात्मक,,सांस्कृतिक विकास के लिये संगीत और साहित्य के विकास पर बल देते हैं।

अपने पूर्वजों की भाँति गुरु जी कवि दरबार लगाते थे।प्राचीन वीरों के वीरता पूर्ण कार्यों का वर्णन करते थे।गुरु जी ने असहाय हिन्दुओं को वीररसी काव्य के गायन द्वारा शूरवीर बना दिया।गुरु जी का अभीष्ट जन सामान्य में अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करने की भावना भरना था।

गुरु जी केवल संत–सिपाही नहीं थे ,महान साहित्यकार भी थे ।जिन्होंने भाषायी प्रान्तीय भेदभावों के ऊपर उठकर भारतवासियों को साहित्य और भाषा के माध्यम से एक भावनात्मक लड़ी में पिरोने का प्रयास किया।श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अध्ययन अध्यापन को सिकखों का धार्मिक कर्तव्य बना दिया।

सैनिक सिखलाई के द्वारा सिक्खों की मानसिकता बदल गई।चढ़दी कला ओर युद्ध भावना के प्रतीक अनेक नये शब्द सिक्ख संस्कृति और सभ्यता के अंग बन गये "सिंह" कौर, वाहे गुरु जी का खालसा,वाहे गुरु जी की फतेह,बोले सौ निहाल,सत् श्री अकाल,खालसा जी की बोल बाले,खालसा जी की फतेह,कम को सवाया,एक को सवा लाख, गुरु जी की लाड़ली फौजें आदि शब्द पंजाबी शब्दकोष में शामिल हो गए।

सामाजिक विकास और देश निर्माण की शिक्षा'—

मनुष्य की सेवा भगवान की सेवा है।"साचु कहौ सुन लेहु सभै जिन प्रेमु कियो तिन ही प्रभ पायो।"भाई कन्हैया का उदाहरण उनकी इस शिक्षा को क्रियान्वित करता है, जो बिना किसी भेद भाव के रण में धायल सिंहों को पानी पिलाता था।गुरु जी ने अपने व्यक्तिगत उदाहरणों केद्वारा अपने शिष्यों को मानवता की सेवा करनी सिखलाई।देश और धर्म की रक्षा के लिये सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनके द्वारा सुसज्जित पाँचों सिक्ख विभिन्न जातियों और प्रान्तों के थे परंतु उन्होंने सम्पूर्ण भेद भावों से ऊपर उठकर उन्हें एक बाटे से अमृतपान कराकर एकसूत्र में पिरोया और साथ ही उनके हाथों अमृतपान करके गुरु–शिष्य के भेदभाव को मिटा दिया।

सभी इन्सान एक हैं,इस कथन के द्वारा हिन्दू धर्म की पौराणिक –क्लासिकल साहित्य के अनुवाद और अध्ययन ,अध्यापन द्वारा सम्पूर्ण भारत को भावनात्मक एकता में पिरोने का प्रयास किया।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान है।उनका शिक्षा दर्शन व्यक्ति के चतुमुर्खी विकास में सहायक सिद्ध होता है।उन्होंने शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिये अनेक क्रियात्मक पग उठाए।शिक्षा केंद्र स्थापित किए।शिष्यों के साहित्यिक ,सांस्कृतिक विकास के उपाय किए।उनके शरीरों को हृष्ट– पुष्ट बनाने के लिये खेलों ,व्यायामों का प्रबंध किया।सैनिक सिखलाई द्वारा आत्मसम्मान, देश और राष्ट्र के लिये मर मिटने वाली अकाल पुरुख की फौज की सिरजना की।सत्य ही गुरु जी की शैक्षणिक देन बहुमूल्य है, जो इस दिशा में विद्वानों की खोज की माँग करती है।

मानस की जात सबै ऐकै पहचानवोः–

'मानस की जात सबै एकै पहचानवो' गुरु गोबिन्द सिंह जी का यह अमर सन्देश पंचनंद की पुण्यभूमि से उत्सरित होकर समूचे विश्व में परिव्याप्त हो गया।प्राणी मात्र को करुणा ,सहनशीलता, संवेदना, तथा आत्मीयता का मंगल संदेश देने वाला यह गीत भारत भूमि के लिये आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है,जितना गुरुसाहिब के युग में था।' मानस की सब जात एक सी है' बात ऊपरी पर नितान्त सामान्य होने पर भी भावना के धरातल पर शुद्ध मानवतावादी संकल्प की ओर संकेत करती है,प्रश्न संदेश या संकल्प का नही है,प्रश्न है हममें से कितने लोग इस मूल वाक्य को सच्चे अर्थों में आत्मसात कर पाते हैं,बाह्य विषमताओं तथा अलगाव के दर्शन को तिलांजलि देकर कहाँ तक आन्तरिक एकरसता ,भावात्मक तद्रुपता तथा विश्वजनीय सहज संवेदना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को अपने व्यक्तित्व का श्रृंगार बना पाते हैं।जिस देश की पावन धरती का अन्न ,जल, पवन आदि से न करके इस शरीर में विकसित ,उत्तप्रेरित हुए हैं क्या उस ममतामयी माँ की अखण्डता ,दृढ़ता पवित्रता की रक्षा में मात्र शुद्ध जाल बुनकर ही सन्तोष पा लेंगे या व्यावहारिक दृष्टि से कृत संकल्प होकर ' हम एक हैं सदा एक रहेंगे' इस शंखनाद को राष्ट्रीय गान में भी स्वरबद्ध करेंगे।इसीलिये प्रश्न प्रतीक्षा का नहीं ,संकल्प निष्ठता का है,सच्चे मन से गुरु साहिबान के मंगलगान को प्रगति चरणों की सहज थाप प्रदान करने का है। जो फिर आओ ऋषियों की इस तपोभूमि पर हम फिर से देश की एकता और अखण्डता का श्रीसंकल्प लें। कुछ करें,आगे बढें ताकि यह क्षणभंगुर जीवन सार्थक हो पाये।

कहा गया है कि जीवन जल की लहर है, इसे हर पल बहना हैपरंतु यह बहाव यह प्रवाह लक्ष्यहीन तो नहीं होना चाहिए।विद्यार्थी जीवन आने वाले कल की नीवं है। नींव दृढ़, नहीं पक्की नही तो भव्य भवन की कामना रेत का ढ़ेर बनकर रह जायेगी।

कालिज के दिनों की यह चहल–पहल व्यर्थ हैयदि इस अनुभव से किसी ठोस क्रियात्मक जीवन गति का आलोक नहीं फूटता।कच्ची गीली मिट्टी से कुशल कुंभकार सुन्दर आकृतियाँ बना पाता है, मिट्टी सूख जाए, घड़ा पक जाए,समय बीत जाए तो कहीं कुछ नहीं हो पाता–मिट्टी सहज मिट्टी रह जाती है कोई आकृति नहीं बन पाती ।इसीलिये सरस्वती मन्दिर के अनन्य उपासकों ! अपने भीतर की गीली मिट्टी में छिपी सुन्दर आकृतियों को पहचानो,इनके आकृति रंग रुप और मर्यादा की रक्षा करो ।जीवन रुपी कच्चे घड़े को सूखने से पहले इसपर इन्द्रधनुषीय रंगों का रजत कलश उड़ेल दो , समय की कद्र करो ,गहरी नींद में भी जागते रहो , कल को उगने वाला सूर्य तुम्हारे उजले भाल पर किरणों का भव्य समारोह देखने स्वयं नीचे चला आयगा।लेकिन–

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह सब इतना सरल नहीं है।इसे पाने के लिये कंचन की तरह तपना है, देश क संतों ,सिद्धों, शास्त्रियों के बताए मार्ग का अनुसरण करना है।कबीर की वाणी में यह जानना है' कि आदमी के खून का रंग लाल है,चाहे वह ब्राह्मण हो ,चाहे शुद्र ।महात्मा गाँधी के शब्दों में यह सीखना है 'सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं तथा अहिंसा से बड़ा कोई शस्त्र नहीं 'और आज के सुप्रसिद्ध उर्दु कवि बशीर बदर के अंदाज में यह सोचना है'देश बँट गया तो क्या हुआ, अभी दिल तो नहीं बँटे।दोनों तरफ अगर ऊँची दीवार बन भी गई है तो क्या हुआ हम खिड़कियाँ तो बना सकते हैं।' ' हाँ मेरे साथी युवको ! आप जहाँ भी जाओ,खुली साँस के लिये खिड़की की गुंजाइश जरुर रखने देना, खिड़की होगी तो नये विचार शुद्ध संकल्प,नयी भावनाऐं अपने आप उमड़ती सिमटती चली आयेगी ।' वेद की भी एक ऋचा है, तपस्वी मन कहता है–

' प्रभु मेरे मस्तिष्क की सारी खिड़कियाँ खोल दो ताकि हर प्रकार के सुविचार चारों ओर से इसमें प्रवेश करते रहें।'ऐसा होना भी चाहिए।पश्चिम के सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री रॉस का कहना है,परिस्थितियों और परिवेश के अनुरुप व्यक्तित्व की साधना ही शिक्षा है ।प्रिय युवाओं आज के संदर्भ में आपके लिये शिक्षा के इस चरण का यही अर्थ है कि अनुशासन पूर्वक स्वयं को वर्तमान स्थिति के अनुरुप ढ़ालते हुए आने वाले कल की सफल ,मंगल एवं क्रियात्मक साधना में जुटे रहें। आज का युग भले ही आपके इस पुण्य संकल्प को अनदेखा कर दें। किन्तु आने वाला इतिहास आपके इन चरण चिन्हों को कभी न कभी जरुर खोज लेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।'

परंतु यह सब कर पाना ,जुटा पाना बहुत कठिन है।जीवन का कोई भी विश्वास अर्जित करने के लिये तप, त्याग, तथा मानवीय मूल्य के प्रति दृढ़ आस्था की आवश्यकता है।अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत है' महान विचार महान आत्माओं से ही उत्प्रेरित होते हैं।' इसीलिये जीवन के प्रत्येक मोड़ पर महान आत्माओं के अलौकिक संस्पर्श की उदभावना सजग रहनी चाहिए। महान आत्माओं का संसर्ग पाने के लिये , हे!युवा पीढ़ी ! तुम्हें फिर से अपने देश प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा के आंतरिक स्वर को परखना पहचानना तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आत्मसात करना है ।शेष संसार कुछ भी कहता रहे , कोई भी राग अलापता रहे किंतु आंतरिक सहज आलोक में स्थित होकर अपने देश के लिये 'वंद–वंद कटवाना', 'तपती रेत'और 'तती तवी'' पर अपने नश्वर शरीर को भून डालना' या फिर इन्द्रिरा गाँधी के स्वर में यह कह पाना , देश की अखण्डता के लिये यदि मेरे रक्त की अन्तिम बूँद भी बह जाए तो सह मेरा सौभाग्य होगा '–ऐसे देश प्रेम सिक्त सहज उदगार केवल भारतीय भूमि पर ही अमरत्व पा सकते हैं ।हमें अपनी जननी पर,जननी के उत्प्रेरक दर्शन पर सदा ही गर्व रहा है और रहेगा ।कहाँ मिलेगा ऐसा सहनशील धर्म उद्‌गार जो एक साथ बाईबिल, कुरान, गीता, तथाग्रन्थ साहिब की संहज आंतरिक मर्यादा को अपने श्वास प्रश्वास में रस गंधित करता हुआ समूचे विश्व के लिये भावात्मक एकता का आलोक स्तम्भ दर्शाता हो। धन्य है वे लोग जो ऐसे आलोकमय कीर्तिस्तम्भ के श्री चरणों में नतमस्तक हो अपनी आराधना को सफल किया करते हैं।

हर पल,हर क्षण कुछ न कुछ बनता और मिटता रहता है ।प्रगति और परिवर्तन प्रकृति के नियम हैं ।उन्नतिके लिये सतत् प्रयत्नशील रहना मानव का धर्म है ।चिर चिन्तन सत्य की खोज खबर में संसार के शेष प्राणी भले ही इध ार से उधर भटक गये हों , लेकिन भारत भूमि का यह आर्यपुत्र आज भी आत्मा के अमरत्व का भेद नहीं भूल पाया है, शायद इसीलिये हमारी संस्कृति सदैव ऊर्ध्वगामी है हमारे संस्कार सदा शुद्ध और अन्तर्मुखी रहे हैं। भौतिक की अपेक्षा यहाँ सदा अध्यात्म का सहज ज्ञान परिव्याप्त रहता है ।छोटे– बड़े कीट पतंगे ,जीव–जंतु,पेड़– पर्वत आदि में कहीं भेद का भुलावा नजर नहीं आता है,वितर्क का दंश प्रकट नहीं होता है ।यही कारण है किइस देश के समूचे जीव जगत का सुख एक है,दुख एक है, मान सम्मान एक है,समर संग्राम की चुनौती एक है ।राम कथा का वह सागरसेतु अध्याय इस दर्शन के आलोक में कितना भव्य और सुन्दर बन जाता है ।पाप का घड़ा भर चुका है ।रामत्व की रक्षा के लिये सागर पर पुल बाँधना है,भागीरथ कार्य है,अनेकता को पुनः एकता में ही विलीन होना है ।एक दो के लिये नहीं समूची आर्य जाति के लिये चुनौती है,ललकार है ।ऐसी कर्तव्यनिष्ठता की घड़ी में भला पीछे कौन रहता,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभी आते हैंजल से ,थल से , नभ से –सब ओर से ,जिन्हें लड़ना है वे शस्त्र सहित आते है,जिन्हें उड़ना है, वे पंख सजाये आते हैं– नर– नारी, पशु– पक्षी, गिद्ध–सिद्ध,बानर–भालू,कीट–किटाणु सभी तो आ जुटते हैंउस अहंनिष्ट सागर की मर्यादा बाँधने ।यहाँ तक कि पत्थर भी तैर जाते हैं राम का नाम लेकर ।इसी क्षण एक नन्ही गिलहरी भी स्वामी के श्री चरणों के पास खेल आती है,नतमस्तक हो वह कह उठती है,'प्रभु! पपा–पुण्य के इस महासागर में एक आहुति मेरी भी। 'स्वामी का घ्यान उस ओर आकृष्ट होता है,ओठों पर आलोक रंजित विश्वस्त मुस्कान विराज आती है,सरस योग निष्ठ ब्रह्म वाणी फूटती है,स्वामी कहते है,' अरे तुम तो बहुत छोटी हो ,एक महायज्ञ में—— ।'स्वामी कह नहीं पाते ,नन्ही गिलहरी का संकल्प और अधिक दृढ़ हो आता है,वह कहती है," बहुत छोटी हूँ तो क्या हुआ, हूँ तो आप की ही ना —— प्रभु इस तुच्छ को निराश मत करें,बस श्री चरणों के साथ–साथ रहने दें,इस महासमर में पुण्य की ही विजय हो यह मंगल कामना कोई छोटी बात तो नहीं है——" ।तत्क्षण एक दिव्य आलोक ओर–छोर में परिव्याप्त हो जाता है,प्राणी मात्र की अमर साधना किरण जालबनकर नन्ही गिलहरी को अलंकृत कर जाती है ।सागर की मर्यादा बाँधने वाला स्वामी खुद रो उठता है,छलकते नयन आकाश में झांकते हैं ।नर और नारायण का अन्तराल मिटने को है,स्वामी भाव विह्वल है , वाणी तरल है,उद्गार एक नितान्त दिव्य एवं अलौकिक शब्द–साधना रचते हैं

"यहाँ प्रभु कौन है ?इसका निर्णय बहुत कठिन है–परंतु आर्य भूमि का ऐसा आत्मीय एवं अखण्ड प्रेम पाकर यह राम आज सचमुच धन्य हुआ ,धन्य हुआ, धन्य हुआ——— ।"

समदर्शी गुरु गोबिन्द सिंहः–

गुरु गोबिन्द सिंह जी एक समदर्शी महापुरुष थे , जिन्होंने गुरु नानक देव जी के दशवें रुप में प्रकट होकर इधर–उधर चारों तरफ फैली हुई भेदभाव की रुचियों को समाप्त किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु साहिब का जन्म मानवता के कल्याण के लिये हुआ, यह तथ्य उनके जीवन की प्रत्येक गतिविधि से स्पष्ट होता है।उनके समदर्शी होने का अहसास सबसे पहले सैयद् हजरत भीखण शाह को हुआ ।उन्होंने अपनी आत्मिक शक्ति से यह अनुभव कर लिया कि अल्ला ताला ने अपना एक प्रतिनिधि मानवीय रुप में प्रकट किया है।यह परखने के लिये दिव्य ज्योति हिन्दुओं की पक्षपाती होगी अथवा मुसलमानों की,भीखड शाह नजराने के रुप में पेश करने के लिये मिठाईयों के दो मटको पर रखकर पीर भीखण शाह का यह संदेह दूर कर दिया कि वह पक्षपात से ऊपर उठकर सच्चे मानव धर्म की स्थापना करने हेतु प्रकट हुए हैं ।'विचित्र नाटक' के 'पनी कथा' प्रसंग में उन्हें प्रभु द्वारा इस संसार में भेजने के मूल कारण को स्पष्ट किया गया है:–

"मैं अपना सुत तोहि निवाजा ।पंथ प्रचुर करबे कऊ साजा।।
जाह तहा तैं धरमु चलाई। कबुधि करने ते लोक हटाई।।
जिन तिन कही तिनै तिम कहि हो।अऊर किसू ते बैरन गहि हो।।"

नौ वर्ष की छोटी आयु में ही उन्होंने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी को धर्म की रक्षा करने हेतु महाबलिदान करने हेतु प्रेरित किया।मानव ध र्म की स्थापना करने केलिये शुद्ध भावना वाले दोनों हिन्दुओं तथा मुसलमानों का उन्हें सहयोग मिलता रहा ।उनकी फौज में सिक्ख,मुसलमानों का उन्हें सहयोग मिलता रहा।भंगाणी की लड़ाई में पीर बुद्ध शाह ने अपने चार पुत्रों , दो भाईयों तथा सात सौ अनुयायियों की बलि देकर गुरु साहिबान की पक्षपात रहित धार्मिक भावना को स्पष्ट किया।

सैनिक कार्यवाही करने के पीछे गुरु जी का उद्‌देश्य हत्यायें करने का नहीं था,अपितु मनुष्यों में परस्पर वैर विरोघ की प्रवृत्ति को समाप्त करके समभाव से जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाने का था।दानों धर्मों के दुष्ट, पक्षपाती, आततायी शासकों से युद्ध करके उनके द्वारा किये गये पापों का समूल नाश करना था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पठन–पाठन के समय भी गुरु साहिब ने किसी विशिष्ट भाषा के प्रति न तो मोह ही प्रकट किया है और न ही किसी के प्रति अरुचि ही ।उन्होंने जहाँ एक ओर भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया ,वहा दूसरी और सभी भाषाओं में भी निपुणता प्राप्त की ।संस्कष्त का अध्ययन करने के लिये उन्होंने अपने सिक्खों को विशेष तौर पर काशी भेजा और धर्मयुद्ध के चाव के सिलसिले में दूर–दूर से कवियों तथा लेखकों को आमन्त्रित करके अपने पास सृजन करने के लिये शरण दी।

उन्होंने स्वयं काव्य की रचना करके भेदभाव की प्रवृत्तियों से ऊपर उठने की प्रेरणा दी।'अकाल उस्तति' में धार्मिक झगड़ों को समाप्त करने के लिये वतलाया कि मनुष्यों की केवल एक ही जाति है, राम और रहीम एक ही परमात्मा के सूचक हैं ।वैरागी, संयासी,योगी, ब्रह्मचारी,जती, सती, शीया, शुन्नी,राफजी,,इमाम सभी को एक परमात्मा ने ही पैदा किया है ।उन्होंने शिक्षा दी कि हमें इनमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं ढूँढ़ना चाहिए–

हिंदु तुरक कोउ,राफजी, इमाम,शाफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो।

इसी प्रसंग में गुरु जी ने फरमाया कि मंदिर तथा मसीत पूजा एवं नमाज सब एक ही बात है देवता, दैत्य, यक्ष, गंधर्व,मुसलमान और हिन्दु भिन्न–भिन्न देशों के वेषों का प्रभाव मात्र हैं ।इन सभी के शरीर अंग आदि एक ही प्रकार के पांच तत्वों से बने हुए हैं।

गुरु जी ने खालसा पंथ का सृजन करते समय भी किसी विशेष गुट, सम्प्रदाय, प्रदेश को विशेष महत्त्व नहीं दिया,अपितु शुद्ध भाव से सफल होने वालों को पाँच प्यारों का गौरवशाली महत्त्व प्रदान किया जो भिन्न–भिन्न प्रदेशों एवं विभिन्न सामाजिक पृष्ठ भूमि वाले थे ।उन्होंने अमृतपान कराया तथा उनसे स्वयं अमृतपान किया । इस प्रकार उन्होंने गुरु शिष्य का भेदभाव समाप्त किया। साधारण जन जीवन से अपना सम्पर्क स्थापित करते हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोषणा की–

'इनही की क्रिया के सजै हम हैं

नही मो सो गरीब करोर परे।'

युद्ध भूमि में भी उन्होंने केवल अपने शिष्यों को ही आगे नहीं भेजा,अपितु स्वयं आगे बढ़कर अपने युद्ध कौशल का अहसास भी करवाया।अवसर पड़ने पर अपने मासूम बच्चों तक को भी युद्ध की ज्वाला में झोंक दिया और उनकी शहीदी होने पर अपने परिवार तथा अनुयायियों को तसल्ली देते हुए फरमाया कि धर्म तथा जनता की रक्षा के लिये चारों पुत्रों का बलिदान किया है।उन चारों को बलि बेदी पर चढ़ा दिया गया ताकि हजारों अन्य गौरव सहित जीवन व्यतीत करने में सक्षम हो सकें।

उनकी इस समदर्शी प्रवृत्ति का प्रभाव उनके सिक्खों पर भी उसी रुप तथा परिणाम में पड़ा।युद्ध भूमि में भाई कन्हैया आहत व्यक्तियों को पानी पिलाते समय समदर्शी रुचि के अधीन किसी घड़े का पक्षपात क़िए बगैर ,सभी को समान रुप से पानी पिलाने की सेवा में संलग्न था।उसके विरुद्ध शिकायत होने पर गुरु जी ने जख्मी व्यक्तियों घावों पर मरहम लगाने के लिये भी उसे दी।श्री गुरु नानक देव जी के बेई से निकलने के बाद 'न तो कोई हिन्दू न कोई मुसलमान' की समदर्शी वाणी, गुरु अर्जुन देव जी ' न को बैरी नहीं बिगाना सगल सगि हम कऊ बनि आई' की सब को समान समझने की भावना और गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्पादन के समय अपनाई गयी समन्यवादी प्रवृत्ति की परम्परा में गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपनी कथनी तथा करनी के द्वारा समदर्शिता की भावना को स्थापित करते समय भेदभाव की उठी हुई आँधी को शांत कर दिया और खालसा के रुप में एक ऐसे आदर्श पुरुष को प्रस्तुत किया जिसके आचरण एवं स्वरुप के द्वारा गुरु साहिब की समदर्शिता का बिम्ब सहज ही उजागर हो उठा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु गोबिन्द सिंह जी की महान विजय यात्रा :-

सन् 1765 में अपने पिता गरु तेग बहादुर जी की शहीदी के पश्चात गुरु गोबिन्द सिंह पांऊटा साहिब में माखेवाल से चले गये ।इन्द्र भूषण बैनर्जी गुरु साहिब के गुरु काल को दो भागों में बाँटता है।

1.खालसा की स्थापना से पूर्व का काल 1675 से 1699 तक।

2.खालसा की स्थापना के पश्चात् का काल,1699 से 1708 तक

पाऊंटा साहिब यमुना नदी के तट पर हिमाचल प्रदेश का एक सुन्दर स्थान है ।यमुना तट पर उन्होंने तप करना आरम्भ किया ।वह अस्त्र–शस्त्र विद्या में भी निपुण हो गये । उन्होंने फारसी भाषा भी सीखी और हिंदू धर्म के ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। उनका स्वार्थत्याग और आत्मत्याग अपूर्व था। वह दृढ़ता स्वार्थत्याग, आत्मत्याग और वीरता की खान थे वह क्रियाशील और विचारशील दोनों थे। उन्होंने सिक्खों को श्री गुरु नानक के धर्म संबंध ी गहन विचार समझाये और उनको शस्त्र विद्या भी सिखलाई।

गुरु साहिब की बढ़ती शक्ति को पहाड़ी राजा सहन नहीं कर सके। श्री नगर के राजा फतेह शाह और अन्य पहाड़ी राजाओं ने मिलकर पाऊँटा साहिब मे गुरु जी पर आक्रमण कर दिया ।गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं की सम्मिलित सेना को परास्त करके उनके गर्व को चूर किया ।गुरु जी ने 'विचित्र नाटक' में स्वयं लिखा है कि किस तरह उन्होंने अपनी सेना की अगुवाई की और शत्रु के दो जनरैल मार दिये जिनके नाम भीखण खान और हरीचंद्र थे ।इन सेनापतियों के मारे जाने के पश्चात शत्रु की सेना भाग गई। यह भंगाणी की लडाई सितम्बर सन्1688 में हुई ।इस लड़ाई का बहुत महत्त्व है ।इस जीत के कारण सिक्खों का मनोबल बढ़ा और उनको यह निश्चय हो गया कि अच्छी तरह से संगठित और शस्त्रों की शिक्षा प्राप्त करके वह हर तरह के अत्याचार का सामना कर सकते हैं।

भंगाड़ी की जीत के पश्चात गुरु जी आनन्दपुर साहिब चले गये ।उन्होंने आनन्दपुर में चार दुर्ग बनवाये –आनन्दगढ़, लोहगढ़, केशगढ़ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फतेहगढ़। कहलूर के राजा भीमचंद्र और दूसरे पहाड़ी राजाओं ने उनसे संधि ा कर ली और उनकी शक्ति के भरोसे उन्होंने निष्क्रिय प्रतिरोध करना आरम्भ कर दिया और सम्राट के पास अपना वार्षिक कर भेजना बंद कर दिया।औरंगजेब दक्षिण के युद्धों में व्यस्त था, इस कारण उसने किसी राजा के साथ झगड़ा नहीं किया।दक्षिण से लौटते ही औरंगजेब ने एक बड़ी सेना अलफ खां के अध ीन राजाओं से पिछले वर्षों के कर उगाहने के लिये भेज दी।नादौन के निकट राजाओं ने गुरु जी की सहायता से मुगल सेना को परास्त कर दिया। इस पराजय से कागड़ा के फौजदार दिलावर खान को बड़ा क्रोध आया और उसने एक बड़ी सेना लेकर राजाओं पर आक्रमण कर दिया। पहाड़ी राजाओं ने फौजदार से समझौता कर लिया।दिलावर खां ने अपने पुत्र रुस्तम को राजाओं की सहायता करने के अपराध में गुरु जी को काबू में करने के लिये भेजा। रुस्तम खां को गुरु जी ने पराजित किया।मुगल फौजदार ने दो बार सेना हुसैन खां औा जुझार सिंह के अधीन भेजी ।हरबार गुरु ने उन्हें पराजित किया।

औरंगजेब ने जब यह अत्याचार सुने तो आगबबूला होकर उसने शहजादा मुअज्जम को पहाड़ी राजाओं से कर वसूलने और गुरु जी को काबू में करने के लिये भेजा। शहजादा लाहौर आया और उसने मिरजा बेग के अधीन एक बड़ी सेना पहाड़ी राजाओंके विरुद्ध भेजी ।शहजादे का मंत्री नन्दलाल गुरु जी के अनुयायियों में से था, उसने शहजादे को गुरु जी की ओर समझा–बुझा दिया ।इसमें गुरु जी को तो उसने कुछ नहीं कहा, परंतु शाही सेनापति मिरजा बेग ने राजाओं का दमन कर दिया।

भाई नन्दलाल के रसूख के कारण गुरु जी को चैन से रहने के लिये कुछ समय मिला।उन्होंने आनन्दपुर के स्थान पर सन्1699 में वैसाखी के अवसर पर खालसा पंथ की सिरजना की।गुरु जी ने अपने चरित्र बल से खालसा में कुछ ऐसी विलक्षण, विद्युत शक्ति संचारित कर दी थी जिससे खालसा महाबली हो गया था।उनके महायंत्र से सिक्ख मंडली सजीव हो उठी थी जिससें वह मुसलमानी शक्ति को खत्म करने में समर्थ हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आनन्दपुर में वैसाखी के अवसर पर आपने सभा को सम्बोधित किया कि क्या कोई धर्म के नाम पर बलिदान देने के लिये तैयार है।सिर्फ एक दया राम नामक व्यक्ति आगे बढ़ा। गुरु जी उसका हाथ पकड़कर अन्दर ले गये , जहाँ पहले से ही एक बकरा बँधा हुआ था, गुरु जी ने दयाराम को डेरे में बैठझ दिया और अपने हाथ से बकरे को मारकर उसके लहु में सनी हुई तलवार को लेकर बाहर आये और पुनः बलिदान देने के लिये कहा।इस पर एक और व्यक्ति आगे बढ़ा। फिर इसके बाद तीसरा, चौथा और पाँचवा व्यक्ति बढ़ा। इसके बाद वह उन पाँच सिक्खों को जीते–जागते ,स्वस्थ और प्रसन्न सभा में ले आये। जो लोग गुरु जी का तलवार के सामने सिर झुकाने को तैयार हुए थे उनमें से एक खत्री था और बाकी के वो लोग थे जिनको वैश्य और शूद्र कहा जाता है।गुरु.जी ने उहें 'पंच प्यारे' कह कर पुकारा और खंड़े से अमृत पिलाया ।इसके बाद उन्होंने उनसे स्वयं अमृतपान किया।गुरु जी ने उनको अपने नाम के साथ'सिंह' लगाने का आदेश दिया। उन्होंने उन्हें केश, कच्छा, कड़ा, कृपाण और कंघा रखने का आदेश दिया ।गुरु जी ने जाति–पाति से होने वाले पक्षपात को मिटाया और धर्म संबंधी समता को स्थापित किया।

खालसा की सिरजना ने गुरु जी के अनुयायियों को महाबली बना दिया। प्रिंसीपल तेजा सिंह लिखते हैं कि गुरु जी ने समाज के निम्न वर्ग के लोगों को जो उच्च वर्ग के लोगों के गुलामों की तरह कई शताब्दियों से रह रहे थे ,वीर बना दिया , जो कभी मृत्यु से नहीं डरते थे और अपने गुरु जी के आदेश पर मर मिटने के लिये तैयार थे।

खालसा की सिरजना पहाड़ी राजाओं को पसंद नहीं थी ।जाति–पाति और मूर्ति पूजा का निषेध उनके धर्म पर सीधा आक्रमण था।उन्होंने गुरु जी की लोकतांत्रिक शिक्षा और अपने अनुयायियों को सैनिक शिक्षा देना अपनी सत्ता के लिये खतरा समझा।उन्होंने गुरु जी पर आनन्दपुर में सन् 1701 में आक्रमण किया।आनन्दपुर के पास लड़ाई हुई ।राजाओं की सम्मिलित सेना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु जी की सेना के सामने ठहर न सकी खालसा सेना से पराजित होकर पहाड़ी राजाओं ने बादशाह औरंजगेब की सेना में एक प्रार्थना पत्र भेजा। इस प्रार्थना पत्र पर औरंगजेब ने सरहिंद के सूबेदार वजीर खां को आदेश दिया। औरंगजेब की इस आज्ञा के कारण सरहिंद के सूबेदार ने सारे पहाड़ी राजाओं की सहायता से गुरु जी पर आनन्दपुर में सन् 1705 में आक्रमण कर किया। गुरु जी आनन्दपुर के किले में ठहरे हुए थे ।शाही सेना दुर्ग को चारों तरफ से घेरे रही और बाहर से दुर्ग के भीतर जाना आना बंद हो गयां गुरु जी ने आक्रमण करने वालों को आक्रमण का उत्तर दिया। विशाल सेना के सामने थोड़े से सिक्ख कब तक लड़ सकते थे। किले में धिर जाने से भोजनादिसामग्री भी नहीं पहुँच सकती थी।इससे सिक्खो को विशेष कष्ट होने लगा।गुरु जी एक दिन अंधरी रात में अवसर पाकर किले से बाहर निकले।उन्होंने चमकौर के दुर्ग में आश्रय लिया।गुरु जी ने मुट्ठी भर अनुयायियों के साथ मुगलों से युद्ध किया। इस लड़ाई में उनके दो ज्येष्ठ पुत्र औंर उनके प्यारे अनुयायी मारे गये। केवल पाँच अनुयायी ही बच पाये ।गुरु जी भेष बदलकर किले में से निकलने में सफल हुए।

आनन्दपुर के किले को छोड़ने के पश्चात् सरसा नदी को पार करते समय गुरु जी के दो पुत्र और माता गुजरी देवी उनसे बिछुड़ गये थे। गुरु जी के एक विश्वासघातक नौकर के कारण दोंनों छोटे साहिबजादे बंदी बना लिये गये ।वजीर खां ने उन दोनों साहिबजादों को इस्लाम धर्म न कबूलने के कारण दीवार में जिन्दा चिनवा दिया। इस पाशविक अत्याचार को सुनकर माता गुजरी की सदमे से मृत्यु हो गई।

गुरु जी ने माछीवाड़े के वनों में आश्रय लिया।उनके शत्रु वजीर खां ने वहाँ भी शान्ति से रहने नहीं दिया ।गुरु जी के दो मित्रों नबीं खां और गनी खां ने उसकी बड़ी सहायता की ओर मुगलों के हाथों से बचाया। गुरु जी ने अनेक कष्ट सहन करके भी औरंगजेब की अधीनता स्वीकार नहीं की।अपने चारों साहिबजादों की मृत्यु के पश्चात भी अपने व्रत का परित्याग नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया ।उन्होंने औरंगजेब को पत्र'जफरनामा' लिखा ।इस पत्र में उन्होंने औरंगजेब को उनके अधर्मी कार्यों के कारण धिक्कारा और उनके विरुद्ध अपनी लड़ाई को उचित ठहराया।

मुगलों के विरुद्ध गुरु जी की अन्तिम लड़ाई खिदराना, जिसको अब मुक्तसर कहते है, के स्थान पर सन्1706 में हुई ।यहाँ पर 40 सिक्खों ने , जो गुरु जी को आनन्दपुर साहिब में छोड़कर चले गये थे मुगल सेना का डटकर सामना किया और शहीद हो गये ।गुरु जी उनकी वीरता से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उनके पहले अपराध को क्षमा कर दिया और उनको 'मुक्ति का दान' दिया इसी से इस स्थान को मुक्तसर कहते हैं।

मुक्तसर की लड़ाई श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की अन्तिम लड़ाई थी इसमें कोई सन्देह नहीं कि शक्तिशाली सम्राट औरंगजेब के राज्य का पतन करने में गुरु गोबिन्द सिंह जी का महत्वपूर्ण योगदान है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाँ अध्याय

गुरु जी का हिन्दी साहित्य

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का हिंदी साहित्यः—

गुरु गोबिंद सिंह जी हिंदी साहित्य के तृतीय काल अर्थात रीति काल के अन्तर्गत आते हैं।क्रम से चली आ रही भक्ति धारा का प्रवाह इस काल में मंद पड़ गया था।श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने समय को दृष्टि में रखते हुए जनता के लिये भक्ति और वीर काव्य की रचना की ।इसके द्वारा उन्होंने प्रजा को फिर से प्राचीन भारतीय संस्कृति और गौरव का स्मरण कराया।

गुरु गोविंद सिंह जी सन्त सिपाही थे ,इसीलिये उनकी रचनाओं में शान्त एवं वीर रस का समावेश है।भक्ति काव्य द्वारा उन्होंने जनता को आध्यातिमक शिक्षा दी और वीर काव्य द्वारा उन्होंने भयभीत जनता में वीर भावों का संचार किया। गुरु जी का दृष्टिकोण था कि जिस राष्ट्र की जनता में संत और सिपाही के भाव होंगे उस राष्ट्र का साहित्य सदा के लिये सुरक्षित तथा समृद्ध रहेगा।विषय के आधार पर गुरु गोविंद सिंह जी की रचनाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता हैः—

भक्ति— जापु, अकाल स्तुति, विचित्र नाटक,ज्ञान प्रबोध, तैंतीस सवैये, शब्द हजारे।

शक्ति (वीर काव्य)— चंडी चरित्र उक्ति विलास, चंडी चरित्र (द्वितीय) ,चंडी दी वार (हिंदी अंश). चरित्रोपाख्यान(कुछ कथाओं में वीर रस हैं) चौबीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवतार कथा, सर्वलोह प्रकाश,शस्त्रनाममाला।

गुरु जी 'जापु' रचना का अर्थ जपना अर्थात परमात्मा के विभिन्न गुणों का स्मरण करना है। इस रचना में परमात्मा के गुणों एवं विशेषताओं का वर्णन है। इसमें 199 छन्द हैं।

अकाल स्तुतिः–

इस रचना में गुरु जी ने निर्गुण ईश्वर की वीर रस पूर्ण शब्दावली में स्तुति की है और इसके साथ ही चंडी के पराक्रमों का भी वर्णन है।इसमें छन्दों की कुल संख्या 271 है।

विचित्र नाटकः–

इसमें गुरु जी की अधूरी आत्मकथा है।इस रचना में निर्गुण विचारध ारा, पहाड़ी राजाओं से युद्ध,शस्त्रों के प्रति आस्था,अन्य सिक्ख गुरुओं आदि का वर्णन उपलब्ध है।छन्दों की कुल संख्या 471 है।

चण्डी चरित्र उक्ति विलासः–

इसमें देवी चण्डी की वीरता की कथा है।इसमें महाबली महिषासुर, धूम्रनैन,चंड,मुंड, रक्तबीज,शुंभ,निशुंभ जेसे असुरों का देवी द्वारा संहार किये जाने का वर्णन हुआ है।इस रचना में छन्द संख्या 233 है। इस कृति का आधार मार्कण्डेय पुराण है।

चण्डी चरित्र(द्वितीय):–

इसका कथानक भी चंडी चरित्र उक्ति विलास जैसा ही है।चंडी का मुख्य उद्देश्य सुरों की रक्षा के लिये असुरों का संहार करना था।इसमें कुल 262 छन्द हैं।

ज्ञान प्रबोधः–

इस रचना में निराकार ईश्वर की व्यापकता का ज्ञान कराया गया है।इसके अन्तर्गत महाभारत के अनुसार प्राचीन राजाओं की ओर संकेत सहित ईश्वर की प्रशंसा की है।इसमें 336 छनद हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौबीस अवतारों की कथाः–

इसमें पौराणिक रुप में विष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन तथा ब्रह्मा के 7 और रुद्र के 2 अवतारों का वर्णन हुआ है। इनका क्रम इस प्रकार है–मत्स्य,कच्छप,नर–नारायण, महामोहनी ,वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम,ब्रह्मा,रुद्र, जलन्घर, विष्णु – चौदहवाँ अवतार,अरहन्त, मनुराजा, धन्वतरि,सूर्य,चंद्र,राम ,(834 छन्द),कृष्ण(2492 छन्द) नर बुद्ध ,कल्कि अवतार

रामकली पतशाही :–10

इसमें 34 छनद हैं।

सवैयाः–

इसमें 33 सवैये हैं।

शस्त्रनाममालाः–

इसमें तत्कालीन प्रचलित शस्त्रों के नामों का उल्लेख हुआ है।साथ ही गुरु जी ने शस्त्रों के महत्त्व को बतलाया है।इसमें 1318 छनद हैं।

चरितोपाख्यानः–

इसमें 404 कथाओं का वर्णन हुआ है।ये कथायें त्रिया चरित्र से संबंधित हैं। इसमें7555 छनद हैं।

सर्वलोह प्रकाशः–

इसमें सर्वलोह अवतार की कथा है। जिसमें इस अवतार द्वारा राक्षसों के संहार का वर्णन हुआ है।यह एक स्वतंत्र ग्रंथ हैं।इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति गुरु द्वारा श्री सचखण्ड हुजूर साहिब नांदेड़(महाराष्ट्र) में उपलब्ध है।

सुनीति. प्रकाशः–

यह नीतिपरक ग्रन्थ है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम सुमार्गः–

इसमें खालसा पंथ के सिद्धातों का वर्णन है।तथा यह गुरु जी के जीवन के बारे में प्रकाश डालता है।

बुद्धि सागरः–

इसमें ईश्वर संबंधी भजन हैं।

विद्या सागर :–

कहा जाता है कि इस ग्रन्थ का भार एक मन था परंतु तत्कालीन शत्रुओं द्वारा यह साहित्य नष्ट कर डाला गया।सम्भवतः इसे नदी में डुबो दिया गया था।इसमें अधिकांश रचनायें गुरु जी के दरबारी कवियों की है।संभव हैइसमें गुरु जी का भी साहित्यिक अनुदान हो।

गुरु जी की अधिकांश रचनायें ब्रज भाषा में हैं।जिसका प्रथम साहित्यिक रुप भक्तिकालीन कवि सूरदास की रचनाओं में उपलब्ध है।गुरु जी के दशम् ग्रन्थ में केवल 50 पृष्ठों में पंजाबी और फारसी भाषा का प्रयोग हुआ है, शेष हिन्दी में है।

दशम ग्रन्थ की कुछ रचनाओं के अन्त में उनका रचनाकाल दिया गया है। ऐसा भी मत है भाई मनी सिंह ने गुरु जी की रचनाओं का संकलन 1734 ई. में किया परंतु उन्होंने 'दशम ग्रन्थ' शीर्षक नहीं दिया।

संभवतः इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता के पश्चात इसे दशम ग्रन्थ की संज्ञा प्राप्त हुई है। दशम ग्रन्थ की प्रामाणिकता के संबंध में भी मतभेद है।चंडी–चरित्र, चौबीस अवतारों की कथा और चरितोपाख्यान उनके द्वारा रचित नहीं माने जाते बल्कि किसी समकालीन कवि राम, श्याम,काल आदि द्वारा लिखी गई है। यदि उनकी रचनाओं में कहीं श्याम, गोबिन्द, राम और काल नाम आए भी है तो वे उस अकाल पुरुष सर्वशक्तिमान ईश्वर के पर्याय एवं सूचक हैं। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तो ईश्वर द्वारा ही रचनाओं को रचा स्वीकार कर इनकी समाप्ति अकाल पुरुष की कृपा से ही मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दार्शनिक भावना:–

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का दर्शन अद्वैतवाद पर आधारित है। गुरु जी ने ईश्वर अर्थात् अकाल पुरुष को अरुप, अखंड, अजन्मा तथा सर्वव्यापी,सर्वशक्तिमान माना है।वह सब का रक्षक है। वह ही संहार करने वाला तथा बचाने वाला है।काल से वह परे है।

गुरु जी ने सर्वशक्तिमान निराकार ब्रह्म के प्रति आस्था प्रकट कर ईश्वर

एक है,पर बल दिया ।

गुरु जी ने ईश्वर को सच्चिदानन्द माना है।गुरु जी के मतानुसार परमात्मा के कोई माता–पिता नहीं हैं।वह सर्वत्र व्याप्त है। गुरु जी के मतानुसार जीव और ईश्वर वास्तव में एक ही रुप है।जीव ईश्वर से ही उत्पन्न हो अन्त में उसी में विलीन हो जाता है।

गुरु गोबिन्द सिंह जी और भक्त नामदेव की दार्शनिक विचारधारा में भी समानता पाई जाती है।दोनों के मतानुसार जीव और ईश्वर अभिन्न हैं।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पाखंडों और बाह्याडम्बरों का खंडन किया है। प्रभु नाम स्मरण पर गुरु जी ने अधिक बल दिया है।ईश्वर प्राप्ति के लिये श्रृद्धा और प्रेम को भी महत्त्व दिया है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जाति–पाँति में विश्वास न रखकर सभी मानवों की एक ही जाति मानी है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने दार्शनिक काव्य में निर्गुण एवं सगुण दोनों पक्षों को लिया है।किंतु प्रधानता निर्गुण भक्ति को ही दी है।

वीर काव्य:–

गुरु जी के वीर काव्य की रचना का मुख्य कारण उस समय के अर्थात रीतिकालीन लोंगों में वीररस के भावों का संचार करना था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का मुख्य लक्ष्य दुर्बल राष्ट्र में क्षत्रियोचित भावना का निर्माण करना था तथा इसी उद्देश्य से उन्होंने वीरकाव्य की रचना की है।उनके मुख्य वीर काव्य हैं–चंडी चरित्र, उक्ति विलास ,चंडी चरित्र द्वितीय, चंडी दी वार ,सर्वलोह प्रकाश, शस्त्रनाम माला, विचित्र नाटक और चौबीस अवतारों की कथा में भी वीर रस का वर्णन हुआ है।

गुरु जी के वीर–काव्य चंडी चरित्र में देवी और असुरों के युद्ध द्वारा अलौकिक उद्देश्य की पूर्ति होती है।इसमें अदैवी शक्तियों पर दैवी शक्तियों की विजय बतलाई है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के उपलब्ध यदि समस्त काव्य को दृष्टि में रखा जाये तो लगभग 1200 पृष्ठ वीर–रस से सम्बद्ध हैं। उनका उपलब्ध वीर काव्य इतना विशाल है कि रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में अपना एक विशिष्ट

तथा महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गुरु जी के 'कृष्णावतार' का उद्देश्य धर्मयुद्ध को प्रोत्साहन देना था। अधर्म पर धर्म की विजय बतलाना ही उनका एक मात्र उद्देश्य था। गुरु जी ने चौबीस अवतारों का वर्णन करके तत्कालीन श्रृंगारिक कथाओं मे डूबी हुई जनता को अवतारों की वीर गाथाओं द्वारा प्रेरित कर उन्हें राष्ट्र के प्रति सच्चे कर्तव्य का ज्ञान दिया।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने राम की कथा का वर्णन कर राम शक्ति का संदेश दिया है।गुरु जी ने लिखा है युग–युग तक राम कथा का महत्त्व और आदर रहेगा। यह रचना उनकी मौलिकता और विशिष्टता की परिचायक है और हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

गुरु जी ने चरितोपाख्यान रचना के अन्तर्गत 404 त्रिया चरित्र लिखे तथा इस उद्देश्य से कि समाज बुरे चरित्रों से बच सके। गुरु जी की रचनाएँ प्रबंध और मुक्तक हैंउनकी रचनाओं में काव्य के सभी रसों की अद्भुत छटा दिखाई देती है,परंतु उनकी रचनाओं में प्रमुख रस वीर रस है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की मातृभाषा पंजाबी थी फिर भी उन्होंने अपने अधिकांश काव्यों की रचना ब्रज भाषा में की है।गुरु जी का जन्म बिहार में हुआ था।बिहार में उस समय हिन्दी का प्रचलन अधिक था।इस भाषा के प्रसार का कारण मध्य युग में संत कवि भी थे।मध्य युग में ब्रज भाषा अपने साहित्य और धार्मिक महत्त्व के कारण भारत के बहुत के बहुत बड़े भाग में काव्य और संस्कृति का माध्यम थी। साधु–संतों ने भी इस भाषा में भक्ति पूर्ण विचारों को व्यक्त किया।

संस्कृत, अपभ्रंश और इतर भाषाओं के शब्द ,छन्द, अलंकारों के प्रयोग से स्पष्ट है कि उनका संस्कृत अपभ्रंश, प्राकृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं पर अच्छा अधिकार था। जहाँ गुरु जी ने प्रचलित छन्दों का प्रयोग किया है,वहाँ उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में अनेक मौलिक छन्दों का भी प्रयोग किया है।गुरु जी की भाषा में भाषा के तीनों गुण मिलते हैं ओज, माधुर्य और प्रसाद परंतु प्रधानता ओज गुण की है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की रचनाओं में कबीरदास के रहस्यवाद, जायसी की प्रेमभावना, तुलसी की दास्य भावना ,सूर की भाषा, चंद्रवरदायी और भूषण की ओजपूर्ण शैली के दर्शन होते हैं।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की रचनाऐं न केवल बीते हुए कालों की कड़ियों को जोड़ती हैं बल्कि अपने भावी युग अर्थात आधुनिक युग के लिये भी अत्यन्त प्रेरणा और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन का संदेश देती हैं।

युग पुरुष श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने शस्त्र और शास्त्र और भक्ति के समन्वय की कल्पना की और पतनोन्मुख भारतीय समाज और लोक हृदय को उन्होंने अपने काव्य द्वारा नवीन दृष्टि दी । श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के साहित्य में भक्ति और शक्ति(वीर काव्य) का अद्भुत सामंजस्य है।इनकी रचनाऐं हिन्दी साहित्य की समृद्धि में अपना एक विशेष गौरव और महत्त्व रखती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की भारतीय संस्कृति को देनः–

भारतीय संस्कृति को एक निश्चित परिभाषा में बाँध सकना भी संभव नहीं है। यह भूमि खंड न जाने कितने वर्षों से निरन्तर मानव प्रवाह का साक्ष्य रहा है।

सभी के संस्कार लोक विश्वास,मान्यताएँ , विधि विधान मिलकर जिस संस्कृति का निर्माण करते रहे , वही भारतीय संस्कृति है। वेदों में इस संस्कृति के मूल उद्गम की बात कही जाती है।लेकिन अब नये अनुसंधानों ने सिद्ध कर दिया है कि यह प्रवाह उससे भी कहीं पूर्व काल में प्रवाह मान था। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा काल का उत्खनन हमारी इस बात की पुष्टि करता है ।

आदि काल से ही भारत का संबंध अन्य नये देशों और जातियों से होता रहा है।भारतीय ज्ञान विज्ञान के यूरोप तक जाने के जितने भी साक्ष्य उपलब्ध होते हैं, वे सभी अरबों के माध्यम से ही हैं। परस्पर सामंजस्य भारतीय संस्कृति की आंतरिक विशेषता रही है।नकारने के स्थान पर सकारने एवं

स्वीकारने की परम्परा ही भारतीय परम्परा रही है।

चिन्तन की जितनी स्वतंत्रता भारतीय संस्कृति में उपलब्ध होती है,उतनी शायद विश्व के किसी भी चिंतन में नहीं।भारतीय संस्कृति में किसी भी मत को अन्तिम घोषित नहीं किया।यहाँ तक कि विरोधी स्वर का भी स्वागत किया।संशोधन की सर्वदा गुंजाइश रखी।विरोधी स्वर को दबाने के बजाए उसे प्रोत्साहन ही भारतीय संस्कृति के विकास का मूल आधार रही है।यहाँ तक कि भारतीय संस्कृति ने दर्शन के नास्तिक विचारों तक का स्वयं में समावेश किया।अतः भारतीय संस्कृति की मूल संरचना लोक तांत्रिक चिन्तन एवं व्यक्ति स्वतंत्रता के सम्मान पर आधारित है।

मध्यकालीन भक्ति युग ने इसका सामना संस्कृतियों के 'इंटरएक्शन' की प्रक्रिया को बल प्रदान करके किया। सामना करने का यह एक मोर्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था अत्यन्त सार्थक लेकिन मानना पड़ेगा कि इस नये समैंटिक प्रहार का मुकाबला करने में यही पर्याप्त नहीं था।यही आकर हमें श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की विशिष्ट भूमिका का विश्लेषण करना होगा, जिनका कार्यकाल उत्तरमध्य काल तक फैला हुआ है। सम्पूर्ण गुरु परम्परा में जिसका विस्तार श्री नानक देव जी से लेकर गुरु गोबिन्द सिंह तक होता है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की जीवन यात्रा भारत के इसी सांस्कृतिक ऐक्य को समर्पित रही है। बाल्यकाल पाटली पुत्र में ,कार्यस्थल पंचनन्द प्रदेश और इहलीला सुदूर दक्षिण में।

आनन्दपुर में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की खालसा पंथ की स्थापना इस चुनौती का सामना करने का सार्थक पग था।इस परम्परा में श्री गुरु अर्जुन देव जी और श्री गुरु तेग बहादुर जी को अपना जीवन होम करना पड़ा।चिरकाल से पराभूत होते आ रहे राष्ट्र में एक बार पुनः आत्मबल का संचार हुआ था,जब खालसा पंथ की स्थापना हुई।''चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ'' की यह घोषणा उन तमाम सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने के संकल्प की भी घोतक है, जिनका विकास भारत भूमि में हुआ।

उनकी सार्वभौमिक राष्ट्रीय दृष्टि की परिचायक है।उन दिनों गुरु जी ने राष्ट्र की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता का एक साथ शंखनाद

किया। मत–मतान्तरों के नाम पर प्रचलित रुढ़ियों,अन्धविश्वासों का तो उन्होंने तीव्र खंडन किया है।गुरु जी की धोषणा भारत के तीव्र अभ्युत्थान की घोषणा थी और इसी घोषणा को मूर्त रुप देने के लिये उन्होंने खालसा पंथ को जन्म दिया।खालसा पंथ हरावल दस्ता बना। गुरु जी के इस सांस्कृतिक अभ्युत्थान अभियान का।खालसा पंथ दुष्ट दमन हेतु है,बलात मत परिवर्तन हेतु नहीं।

यह संकल्प एक साथ दो दिशाओं में विकासशील हैं।व्यक्ति और समाज के संबंधों की दिशा में और दूसरे व्यक्ति के स्वविकास की दिशा में । स्वविकास की यह दिशा मोक्ष तक ले जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु जी ने युगीन समस्याओं का सामना समाज से भागकर स्वमोक्ष की चिंता तक स्वयं को सीमित रखकर नहीं किया।समाज की मुक्ति के बिना भला एक प्राणी की मुक्ति का क्या प्रयोजन ?उन्होंने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कियांसमाज से पलायन कर मोक्ष हेतु अरण्यवासी नहीं हुए। यह समाज ही उनकी साधना भूमि बना।

एक ओर उनकी यह नितान्त वैयक्तिक साधना, दूसरी ओर रण क्षेत्र में चमक रही उनकी खड़ग।दुष्ट दमन के लिये उनका भीषण संकल्प। इतना भीषण कि उसकी पूर्ति हेतु उन्होंने अपने चारों पुत्र सहर्ष अर्पित कर दिये। चेहरे पर शिकन तक नहीं छाई।

कुछ विद्वान मानते हैं कि भारतीय पराधीनता का एक कारण बल प्रयोग के निषेध की चेतना थी। परंतु गुरु जी ने भारतीय संस्कृति के सारतत्त्व को सूत्र शैली में उद्घोषित किया।

गुरु जी की यह शक्ति साधना स्वसुख हेतु नहीं थी और न ही सांसारिक सुख उन्हें काम्य थे।वे तो इस जगत तमाशे में माध्यम मात्र थे।

मानव के एकात्म स्वरुप की कल्पना एवं उसके विकास की आदर्श व्याख्या हमें गुरु गोबिन्द सिंह जी की जीवन यात्रा में उपलब्ध होती है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने भारतीय संस्कृति में आये विकार को दूर करने का प्रयास किया।विकास मार्ग में जम आये शैवाल को प्रयत्नपूर्वक साफ किया।इस्लाम मत को भी भारतीय संस्कृति एवं पराम्परा में खपाने का उनका प्रयास युगान्तककारी माना जाएगा।

उन्होंने इस्लाम के प्रर्वतक हजरत मुहम्मद को भी भारत में उत्पन्न हुए अनेक महापुरुषों की परम्परा में स्थापित कर विषमता समाप्त करने का प्रयास किया। ब्रह्मा ने चार वेद बनाये दत्तात्रेय, गुरु गोरखनाथ,रामानन्द को विश्व में भेजा।सभी ने अपने–अपने ढ़ंग से विश्व में अपने पंथ चला दिये।फिर इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परम्परा ने ब्रह्मा ने हजरत मुहम्मद को विश्व में भेजा ओर इसी कड़ी में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को ।

गुरु जी का उद्‌देश्य किसी पंथ को चलाना नहीं था बल्कि उनका उद्‌देश्य तो मध्यकालीन संत्राससे मूर्छित हो रहे भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति का पुनरुत्थान था ।वास्तव में पहले से चले आ रहे पंथों उपपंथों का संश्लेषण ही उनका उद्‌देश्य था ।अकाल पुरुष का स्पष्ट आदेश था।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मध्यकाल की हताश हिन्दु जाति में नव प्राण ,नव उत्साह एवं नव चेतना का संचार किया । उन्होंने समाज के उन वर्गों और जातियों को सुसंगठित किया जो शताब्दियों से हिन्दू समाज की आन्तरिक अवस्था से प्रताड़ित थे ।उनको उन्होंने समाज के अन्य वर्गों के बराबर लाकर खड़ा कर दिया। जन्म जाति,वर्णव्यवस्था का विरोध ही गुरु जी की नवीन सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख स्तम्भ था ।खालसा पंथ की स्थापना के समय जो पांच व्यक्ति जो उनकी आज्ञा पर आत्मबलिदान को तत्पर हो गये थे उनमें अधिकांश तथाकथित निम्न वर्ग से थे,खालसा पंथ का संबंध केवल पंचनन्द प्रवेश से ही नहीं , बल्कि सम्पूर्ण भारत से था ।पाँच आत्म बलिदानी भारत के सभी भौगोलिक खंडों से सम्बन्ध रखते थे।

गुरु जी ने हिन्दू जाति में स्फूर्ति एवं प्रेरणा हेतु भारतीय संस्कृति की पौराणिक आस्था का स्तवन किया ।जन भाषा में जन आस्थाओं का श्रष्द्धा भाव से उन्होंने गान किया ।शक्ति संचार हेतु चंडी की उपासना एक ओंकार श्री वाहि गुरु जी की फतेह के बाद वे भी भगवती से सहायता की कामना करते हैं।

भारतीय परम्परा के अनुकूल ही गुरु गोबिन्द सिंह जी ने निर्गुण—सगुण का समयानुकूल सामंजस्य स्थापित किया ।ब्रह्म साधना का प्रथम सोपान सगुण साधना है एवं दूसरा सोपान निर्गुण साधना हैं। दोनों सोपान परस्पर विरोधी नहीं,बल्कि निरन्तरता से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।एक—दूसरे के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूरक। दूसरे ,गुरु जी के सामने प्रमुख समस्या निर्गुण–सगुण की दार्शनिक व्याख्या करने की नहीं थी।न ही वह समय,जब खड़ग म्यान में अंगड़ाईयाँ ले रही हो , इसी के लिये उपयुक्त था।गुरु जी का उद्देश्य तो दोंनों प्रकार के आस्थावानों को एक सूत्र में जोड़ने का था।

सम्पूर्ण भारत इतिहास में बलिदान के अनेक उदाहरण मिलते हैं।राष्ट्र का कार्य एवं सांस्कृतिक यज्ञ साधना हेतु स्वयं अपनी अस्थियों का दान करने वाले महर्षि दधीचि भी भारतीय इतिहास की ही थाती है,परंतु स्वयं अपने पिता श्री को हिन्दू संस्कृति के रक्षार्थ उत्सर्ग का उदाहरण अत्यन्त दुर्लभ है।

श्री गुरु तेग बहादुर चिन्तन मुद्रा में नेत्र निमीलित बैठे हैं।बालक गोबिन्द राय को निर्णय लेने में क्षण भर भी नहीं लगा।भारतीय अस्मिता को आज किसी के बलिदान की आवश्यकता नहीं है।गुरु परम्परा में मुगल अनुदारता गुरु अर्जुन देव की शहादत रुप में विद्यमान थी जिन्हें अग्नि तप्त लौह पर जीवित बैठना पड़ा था।श्री गुरु तेग बहादुर जी की दुविधा समाप्त हो गई ।वे मुगल सत्ता के केंद्र की ओर चल पड़े।

अवसर आने पर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने चारों पुत्रों का भी बलिदान कर दिया।यह भारतीय दतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है जिन्हें श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने वंशरक्त से लिखा है।सांस्कृतिक अनुष्ठान में इससे बड़ी आहुति भारतीय इतिहास में शायद ही किसी ने दी हो ।

संत–सिपाही:गुरु गोबिन्द. सिंह–

क्या संत होना और साथ ही सिपाही का योद्धा होना किसी विरोधाभास को व्यक्त करता है ? भारत के प्राचीन इतिहास में दोनों प्रकार की परम्परायें मिलती हैं।परशुराम और द्रोणाचार्य आदि कुछ ऐसे चरित्र हैं, जिन्हें उस युग का संत–सिपाही कहा जा सकता है।रामायण युगीन विश्वामित्र और राम से लेकर ऐतिहासिक काल के चाणक्य ,चंद्रगुप्त तथा समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी के उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

परंतु ईसा पूर्व की तीन–चार शती से लेकर आज तक सन्त, महात्मा या संन्यासी के रुप में जिस व्यक्ति की कल्पना निरंतर विकसित होती रही है वह पूरी तरह अहिंसक ,युद्ध कार्य से विरत शान्त स्वभाव तो है ही इसी के साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योद्धा या सिपाही कर्म को भी हीन कर्म मानने वाला है।मध्य युगीन भक्ति आन्दोलन द्वारां पुष्ट वैष्णव आचार विचार ने हिंसा, रक्तपात और युद्ध का पूरी तरह निषेध किया। इसीलिये एक वैष्णव संत तो हो सकता है सिपाही नहीं हो सकता ।

परंतु बाह्य जगत में शूरवीरता और सैनिक कर्म की आवश्यकता उस समय अनुभव होती है जब मानवीय प्रतिष्ठा संकट में पड़ जाती है।कुछ आक्रामक और शोषक शक्तियां अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये व्यापक मानव समाज का शोषण करती है,उसे अपमानित करती है और उनका जीवन नरकवत् बना देती है।

युद्ध–हत्या,रक्तपात ये नकरात्मक मूल्य है।मानवीय यात्रा का हर पड़ाव प्रयत्न करता है कि मनुष्य को इन नकारात्मक मूल्यों से निकालकर उसे शान्ति ,प्रेम ,सद्भाव जैसे सकारात्मक मूल्यो की ओर प्रेरित किया जा सके। जिस प्रकार की अवस्था में मनुष्य जीता आ रहा है, जिस प्रकार के मनोविकार और प्रवृत्तियाँ मनुष्य पर हावी होकर उसे अनेक प्रकार के गर्हित कार्य करने के लिये उद्दीप्त करती है, उसमें मानव समाज का अधिसंख्य वर्ग पीड़ित होता है और सम्पूर्ण मानवीयता संकट में पड़ जाती है।इस मानवीयता की रक्षा के लिये सिक्ख परम्परा में अभ्यन्तर जगत की युद्ध भावना का बाह्य जगत तक ले जाना आवश्यक और अनिवार्य समझा गया।

इसी मानवीयता की रक्षा में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का संत–सिपाही रुप चरितार्थ होता है।

तीन सौ वर्ष पूर्व श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इन बातों की जिस तरह प्रतिष्ठा की और बहुत मुखर और आग्रहशील होकर इन मूल्यों पर जितना बल दिया,वह आश्चर्य में डालने वाली बात है।सन्1699 की वैशाखी के दिन उन्होंने देश के विभिन्न भागों से आए हुए अपने शिष्यों को आनन्दपुर में एक नया रुप दिया–'खालसा'।श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित सिक्ख परम्परा उस समय तक लगभग 200 वर्ष पुरानी हो चुकी थी इस परम्परा ने अपने व्यापक प्रभाव –क्षेत्र में धार्मिक ठेकेदारों ,सामाजिक अगुआवों और राजनैतिक सत्ताधारियों का निरन्तर विरोध सहना पड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु साहिब ने अनुभव किया कि अत्याचारों , अनाचारों ,अन्याय का विरोध करने के लिये सिक्ख को सिंह बनाना अनिवार्य है।तब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने वैशाखी वाले दिन पांच सिक्खों को अमृतपान कराया और स्वयं उनसे अमृतपान किया और अन्ततः आप गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह बन गए।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने देखा था, एक प्रभावशाली धार्मिक नेता कुछ ही समय में अपने अनुयायियों द्वारा ,,भगवान बना दिया जाता है । वह स्वयं इस स्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लेता हैं और अपने तथा अनुगामियों के बीच आकाश और धरती का भेद पैदा कर देता हैं ।एक दाता दूसरा याचक बन कर श्री गुरूगोबिन्द सिंह जी ने कहा–यह स्थिति ईश्वर और जीव के बीच तो हो सकती हैं ,मनुष्य और मनुष्य के बीच नही । मनुष्य की चरम उपलब्धि उसके मनुष्य बनने में हैं ,भगवान बनने में नही ।श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी आज होते तो देखते की मनुष्य को भगवान बनाने का चकमा देकर कितने लोग स्वयं भगवान बन गए हैं और मनुष्य को निरन्तर छोटा बनाते जा रहें हैं।

परन्तु ऐसा लगता हैं कि श्रध्दातिरेक में आकर कुछ लोगों ने गुरू गोबिन्द सिंह को भगवान कहना शुरू कर दिया होगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा मैं भगवान नही हूँ। जो मुझे भगवान कहेगा वह नरक पायेगा। मैं तो एक सेवक हूँ और उसी के निर्देशानुसार काम करने आया हूँ।

उनके पंज प्यारो में चार ऐसे थे ,जिन्हे इस देश की रूढ. समाज – व्यवस्था शूद्र कहकर नीची श्रेणी का व्यक्ति घोषित कर रही थी। श्री गुरूगोबिन्द सिंह जी की खुली हुई बाहों में सभी सिमट रहे, परन्तु उनमे से अधिक निम्न जाति के कहें जाने वाले लोगों की संख्या अधिक थी । ऊँची जाति के लोगों ने गुरू जी के सम्मुख आपत्ति की ,गुरू जी , यह आप क्या कर रहे हैं?

ये नीची जाति के लोग भला आपको क्या देगें?

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी उस समय अनेक युध्दो में विजय हो चुके थे। बहुत सी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उन्होने बडीं विनम्रता से कहा – जिन्हे आप नीचे कह – रहे हैं , मैंने सभी युध्द उनकी कृपा से ही जीते हैं मेरे सारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योद्धा या सिपाही कर्म को भी हीन कर्म मानने वाला है।मध्य युगीन भक्ति आन्दोलन द्वारा पुष्ट वैष्णव आचार विचार ने हिंसा, रक्तपात और युद्ध का पूरी तरह निषेध किया। इसीलिये एक वैष्णव संत तो हो सकता है सिपाही नहीं हो सकता ।

परंतु बाह्य जगत में शूरवीरता और सैनिक कर्म की आवश्यकता उस समय अनुभव होती है जब मानवीय प्रतिष्ठा संकट में पड़ जाती है।कुछ आक्रामक और शोषक शक्तियां अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये व्यापक मानव समाज का शोषण करती है,उसे अपमानित करती है और उनका जीवन नरकवत् बना देती है।

युद्ध–हत्या,रक्तपात ये नकरात्मक मूल्य है।मानवीय यात्रा का हर पड़ाव प्रयत्न करता है कि मनुष्य को इन नकारात्मक मूल्यों से निकालकर उसे शान्ति ,प्रेम ,सद्भाव जैसे सकारात्मक मूल्यो की ओर प्रेरित किया जा सके। जिस प्रकार की अवस्था में मनुष्य जीता आ रहा है, जिस प्रकार के मनोविकार और प्रवृत्तियाँ मनुष्य पर हावी होकर उसे अनेक प्रकार के गर्हित कार्य करने के लिये उद्दीप्त करती है, उसमें मानव समाज का अधिसंख्य वर्ग पीड़ित होता है और सम्पूर्ण मानवीयता संकट में पड़ जाती है।इस मानवीयता की रक्षा के लिये सिक्ख परम्परा में अभ्यन्तर जगत की युद्ध भावना का बाह्य जगत तक ले जाना आवश्यक और अनिवार्य समझा गया।

इसी मानवीयता की रक्षा में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का संत–सिपाही रुप चरितार्थ होता है।

तीन सौ वर्ष पूर्व श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इन बातों की जिस तरह प्रतिष्ठा की और बहुत मुखर और आग्रहशील होकर इन मूल्यों पर जितना बल दिया,वह आश्चर्य में डालने वाली बात है।सन्1699 की वैशाखी के दिन उन्होंने देश के विभिन्न भागों से आए हुए अपने शिष्यों को आनन्दपुर में एक नया रुप दिया–'खालसा'।श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित सिक्ख परम्परा उस समय तक लगभग 200 वर्ष पुरानी हो चुकी थी इस परम्परा ने अपने व्यापक प्रभाव –क्षेत्र में धार्मिक ठेकेदारों ,सामाजिक अगुआवों और राजनैतिक सत्ताधारियों का निरन्तर विरोध सहना पड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु साहिब ने अनुभव किया कि अत्याचारों , अनाचारों ,अन्याय का विरोध करने के लिये सिक्ख को सिंह बनाना अनिवार्य है।तब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने वैशाखी वाले दिन पांच सिक्खों को अमृतपान कराया और स्वयं उनसे अमृतपान किया और अन्ततः आप गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह बन गए।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने देखा था, एक प्रभावशाली धार्मिक नेता कुछ ही समय में अपने अनुयायियों द्वारा ,,भगवान बना दिया जाता है । वह स्वयं इस स्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लेता हैं और अपने तथा अनुगामियों के बीच आकाश और धरती का भेद पैदा कर देता हैं ।एक दाता दूसरा याचक बन कर श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी ने कहा–यह स्थिति ईश्वर और जीव के बीच तो हो सकती हैं ,मनुष्य और मनुष्य के बीच नही । मनुष्य की चरम उपलब्धि उसके मनुष्य बनने में हैं ,भगवान बनने में नही ।श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी आज होते तो देखते की मनुष्य को भगवान बनाने का चकमा देकर कितने लोग स्वयं भगवान बन गए हैं और मनुष्य को निरन्तर छोटा बनाते जा रहें हैं।

परन्तु ऐसा लगता हैं कि श्रध्दातिरेक में आकर कुछ लोगों ने गुरु गोबिन्द सिंह को भगवान कहना शुरु कर दिया होगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा मैं भगवान नही हूँ। जो मुझे भगवान कहेगा वह नरक पायेगा। मैं तो एक सेवक हूँ और उसी के निर्देशानुसार काम करने आया हूँ।

उनके पंज प्यारो में चार ऐसे थे ,जिन्हे इस देश की रूढ. समाज – व्यवस्था शूद्र कहकर नीची श्रेणी का व्यक्ति घोषित कर रही थी। श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी की खुली हुई बाहों में सभी सिमट रहे, परन्तु उनमे से अधिक निम्न जाति के कहें जाने वाले लोगों की संख्या अधिक थी । ऊँची जाति के लोगों ने गुरु जी के सम्मुख आपत्ति की ,गुरु जी , यह आप क्या कर रहे हैं?

ये नीची जाति के लोग भला आपको क्या देगें?

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी उस समय अनेक युध्दो में विजय हो चुके थे। बहुत सी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उन्होने बडीं विनम्रता से कहा – जिन्हे आप नीचे कह – रहे हैं , मैंने सभी युध्द उनकी कृपा से ही जीते हैं मेरे सारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योद्धा या सिपाही कर्म को भी हीन कर्म मानने वाला है।मध्य युगीन भक्ति आन्दोलन द्वारा पुष्ट वैष्णव आचार विचार ने हिंसा, रक्तपात और युद्ध का पूरी तरह निषेध किया। इसीलिये एक वैष्णव संत तो हो सकता है सिपाही नहीं हो सकता ।

परंतु बाह्य जगत में शूरवीरता और सैनिक कर्म की आवश्यकता उस समय अनुभव होती है जब मानवीय प्रतिष्ठा संकट में पड़ जाती है।कुछ आक्रामक और शोषक शक्तियां अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये व्यापक मानव समाज का शोषण करती है,उसे अपमानित करती है और उनका जीवन नरकवत् बना देती है।

युद्ध–हत्या,रक्तपात ये नकरात्मक मूल्य है।मानवीय यात्रा का हर पड़ाव प्रयत्न करता है कि मनुष्य को इन नकारात्मक मूल्यों से निकालकर उसे शान्ति ,प्रेम ,सद्भाव जैसे सकारात्मक मूल्यो की ओर प्रेरित किया जा सके। जिस प्रकार की अवस्था में मनुष्य जीता आ रहा है, जिस प्रकार के मनोविकार और प्रवृत्तियाँ मनुष्य पर हावी होकर उसे अनेक प्रकार के गर्हित कार्य करने के लिये उद्दीप्त करती है, उसमें मानव समाज का अधिसंख्य वर्ग पीड़ित होता है और सम्पूर्ण मानवीयता संकट में पड़ जाती है।इस मानवीयता की रक्षा के लिये सिक्ख परम्परा में अभ्यन्तर जगत की युद्ध भावना का बाह्य जगत तक ले जाना आवश्यक और अनिवार्य समझा गया।

इसी मानवीयता की रक्षा में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का संत–सिपाही रुप चरितार्थ होता है।

तीन सौ वर्ष पूर्व श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इन बातों की जिस तरह प्रतिष्ठा की और बहुत मुखर और आग्रहशील होकर इन मूल्यों पर जितना बल दिया,वह आश्चर्य में डालने वाली बात है।सन्1699 की वैशाखी के दिन उन्होंने देश के विभिन्न भागों से आए हुए अपने शिष्यों को आनन्दपुर में एक नया रुप दिया–'खालसा' ।श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित सिक्ख परम्परा उस समय तक लगभग 200 वर्ष पुरानी हो चुकी थी इस परम्परा ने अपने व्यापक प्रभाव –क्षेत्र में धार्मिक ठेकेदारों ,सामाजिक अगुआवों और राजनैतिक सत्ताधारियों का निरन्तर विरोध सहना पड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु साहिब ने अनुभव किया कि अत्याचारों , अनाचारों ,अन्याय का विरोध करने के लिये सिक्ख को सिंह बनाना अनिवार्य है ।तब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने वैशाखी वाले दिन पांच सिक्खों को अमृतपान कराया और स्वयं उनसे अमृतपान किया और अन्ततः आप गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह बन गए।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने देखा था, एक प्रभावशाली धार्मिक नेता कुछ ही समय में अपने अनुयायियों द्वारा ,,भगवान बना दिया जाता है । वह स्वयं इस स्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लेता हैं और अपने तथा अनुगामियों के बीच आकाश और धरती का भेद पैदा कर देता हैं ।एक दाता दूसरा याचक बन कर श्री गुरूगोबिन्द सिंह जी ने कहा–यह स्थिति ईश्वर और जीव के बीच तो हो सकती हैं ,मनुष्य और मनुष्य के बीच नही । मनुष्य की चरम उपलब्धि उसके मनुष्य बनने में हैं ,भगवान बनने में नही ।श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी आज होते तो देखते की मनुष्य को भगवान बनाने का चकमा देकर कितने लोग स्वयं भगवान बन गए हैं और मनुष्य को निरन्तर छोटा बनाते जा रहें हैं।

परन्तु ऐसा लगता हैं कि श्रध्द्धातिरेक में आकर कुछ लोगों ने गुरू गोबिन्द सिंह को भगवान कहना शुरू कर दिया होगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा मैं भगवान नही हूँ। जो मुझे भगवान कहेगा वह नरक पायेगा। मैं तो एक सेवक हूँ और उसी के निर्देशानुसार काम करने आया हूँ।

उनके पंज प्यारो में चार ऐसे थे ,जिन्हे इस देश की रूढ. समाज – व्यवस्था शूद्र कहकर नीची श्रेणी का व्यक्ति घोषित कर रही थी। श्री गुरूगोबिन्द सिंह जी की खुली हुई बाहों में सभी सिमट रहे, परन्तु उनमे से अधिक निम्न जाति के कहें जाने वाले लोगों की संख्या अधिक थी । ऊँची जाति के लोगों ने गुरू जी के सम्मुख आपत्ति की ,गुरू जी , यह आप क्या कर रहे हैं?

ये नीची जाति के लोग भला आपको क्या देगें?

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी उस समय अनेक युध्द्धो में विजय हो चुके थे। बहुत सी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उन्होने बडीं विनम्रता से कहा – जिन्हे आप नीचे कह – रहे हैं , मैंने सभी युध्द्ध उनकी कृपा से ही जीते हैं मेरे सारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संकट इनकी कृपा से ही टलते हैं , इनकी कृपा से ही मेरा लुटा हुआ घर फिर से भर जाता हैं ,मेरी विद्या इन्ही की कृपा का प्रसाद है। ,मेरे शत्रु इन्ही की कृपा से नष्ट हुए हैं। मैं इन्हीं की कृपा से हूँ। नही तो मेरे जैसे करोडो. इस संसार में हैं,कौन पूछता हैं।

गुरू गोबिन्द सिंह ने अपने मूल्यों की रक्षा के लिए अपना सब कुछ होम कर दिया। माता –पिता चारों पुत्र ,अनेक निकट सम्बन्धियों का तथा अन्त में अपने प्राणों का भी उत्सर्ग कर दिया। घर –बार छूट गया संगी –साथी बिछुड. गये ,राजाओ को प्रलोभित करने वाला वैभव भी नष्ट हो गया ।

एक स्थिति तो ऐसी आई जब माछीवाडे. के जंगल में नंगे पैर चलना पडा. और आक के पत्ते खाकर उदराग्नि शांत करनी पडी. । परन्तु एक ही बात सदैव सामने रही –मैं अपने इन पद –दलित पीाड़ित। उपेक्षित और पराजित बंधुओं के लिए ही हूँ। मेरा घर ,तन ,मन, धन सब इन्ही का है। दिखने वाला सम्पूर्ण मानवीय अन्तर जलवायु , परिवेश और वातावरण इन्हीं की उपज है।

उसमे मूलभूत कुछ भी नही हैं यह बड़ी आधुनिक सी लगने वाली दृष्टि लगती हैं परन्तु इस बात को गुरू गोबिन्द सिंह ने तीन शताब्दी पूर्व कहा ही नही था,उसे अपने जीवन कार्यो में घटित करके दिखाया भी था।मुंडा संन्यासी होने या योगी बनने से , ब्रह्मचारी या यति बनने से ,हिन्दु या तुर्क होने से मानवीय स्वरूप तो नही बदल जाता ,उन्होने कहा –इन सभी में एक मनुष्य को ही पहचानता हूँ। उनके अन्दर एक ही ज्योति का निवास है, इसलिए भूलकर भी मैं किसी अन्य भेद को स्वीकार नही करता।

वे एक सम्प्रदाय के धर्म गुरू थे सन्त थे । इसके साथ ही तत्कालीन अन्ययी शासन के विरूध्द्व उभरते हुए आंदोलन के नेता थे।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी सैनिक ही नही थे ,सेनापति भी थे । ऐसी स्थिति में शत्रुओ को पराभूत करने ,स्वपक्ष का नैतिक बल ऊपर उठाने के लिए शत्रु पक्ष को हीन दिखाने की प्रवृत्ति स्वाभाविक हैं यही पर जाग्रत विवेक की आवश्कता अनुभव्र होती हैं।

जो यह बता सके कि युद्व भूमि में शत्रु दिखने वाला व्यक्ति भी संदर्भ बदलते ही मनुष्य मात्र दिखाई देता हैं और हमारे स्नेह का अधिकारी बन जाता हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक सैनिक के रूप में श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने ईश्वर से अपने पक्ष की विजय और शत्रु पक्ष की पराजय की कामना की हैं। स्वपक्ष की विजय और शत्रु पक्ष की पराजय की कामना उनके अंन्दर के सैनिक की कामना है। शत्रु पक्ष उनके लिए उन अन्यायियों का वर्ग है। जो अपने स्वार्थी ,संकीर्णताओ और शोषण के लिए सामान्य जन को पीड़ित कर रहा था । ऐसे पीड़ित और पराधीन जन के सम्मान –रक्षा के लिए गुरू गोबिन्द सिंह जी को तलवार उठानी पडीं. थी । औरंगजेब को लिखे अपने फारसी पत्र,जफरनामा, में उन्होने लिखा था कि औरगंजेब नाम तुम्हे शोभा नही देता क्योकि राज सिंहासन को शोभा यमान करने वालो के लिए दगा फरेब उचित ऩही हैं। तुम्हारे हाथ की माला एक धोखा हैं क्योंकि तुम माला के मनकों को दानों और धागे को जाल बनाकर निपराध व्यक्तियों को फंसा लेते हों। तुमने अपने पिता की मिट्‌टी दुष्कृत्यों द्वारा अपने भाई के लहू से गूँथी हैं और इस से अपने नश्वर राज्य के महल की नींव रखी हैं।

धर्म की रक्षा ,सन्तों का उद्धार ,दुष्टो का विनाश उनके सम्पूर्ण जीवन का समन्वित आधार बन गया था।

अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए लोगों में जिस शक्ति संचार की आवश्कता थी उसके लिए श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने अपने पूर्ववर्ती गुरूओ की भक्ति पद्धति में वीर रूपकों को प्रमुखता दी।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने साहित्य में परमेश्वर के निर्माण एवं पोषण गुणो के साथ ही उसके विनाशकारी रुप का बडें मनोयोग से चित्रण किया है। अनेक स्थानों पर वह कहते हैं कि जिस ,कालपुरूष , ने बडें. –बडे. देवताओ ,दैत्यो ,सम्राटों को क्षण भर में समाप्त कर दिया उसके सम्मुख कोई

टिक सके ,ऐसी किस में शक्ति है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के सम्पूर्ण साहित्य में परमात्मा के अगणित नामो का प्रयोग हुआ है। भक्ति साहित्य के परमेश्वरवाची नाम अधिकांशता सन्त मानसिकता के नाम है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह सन्त भी हैं और सिपाही भी। इसलिए उनके साहित्य में सन्त मानसिकता के नाम का तो हैं ही , सिपाही मानसिकता के नामां को प्राधान्य हैं इस दृष्टिसे काल उनका सर्वधिक प्रिय नाम है। काल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कों उन्होने अकाल ,सर्वकाल ,महाकाल ,श्री काल आदि अनेक नामो स पुकारा हैं काल के रुप में। उन्होंने परमेश्वर के वीर रुप और उग्र रुप की प्रतिष्ठा की है। डमरू बजाते , फणिधर के समान , फुफकारते ,बांघ के समान दहाडते, दामिनी के समान हँसते, रक्त पीते ,अष्टायुद्ध धारण किये ,सिह पर सवार ,अपनी दाढ़ में सभी को चबाते हुए ,भयावह रुप का चित्रण उनके साहित्य में अनेक स्थानो पर हुआ हैं।

श्री गुरु , गोबिन्द सिंह जी आत्माकथा ,विचित नाटक में काल के इस रौद्र रूप का उल्लेख मात्र उदाहरण के लिए प्रस्तुत है। अन्यथा ऐसे रूप चित्रो का दशमग्रन्थ में कोइ अभाव नही हैं।

श्री गुरू गोबिन्द सि.ह के सम्मुखं काल के साकार रूप की कल्पना भी अस्त्र–शस्त्र युक्त हैं। अब तक जनता के सम्मुख बंशी बजाते , गाय चराते मक्खन चुराते हुए अपने इस्ट देव का रुप ही प्रमुख था उन्होंने उसके सम्मुख खड्गपाणी, कृपाणपाणि वाणपाणि ,दंडधारी , चकपाणी ,असिपाणि असिध्वज , खड्गकेतु ,धनुष – बाणधारी आदि अनेक वीर रुप रखे ।

ईश्वर के वीर रूप और अस्त्र –शस्त्र के प्रति उनकी दृष्टि में शस्त्र और शस्त्रधारी में कोई अंन्तर ही नही था । स्वयं खड्ग ही खड्गपाणि का प्रतीक बन गया था ।

वीर कार्यो के प्रसंग में शस्त्र पूजा इस देश की प्राचीन परम्परा हैं। गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने व्यक्तित्व और साहित्य ,द्वारा इस परम्परा को और मुखर किया ।

उनकी स्पष्ट घोषणा हैं । की स न्तो के सुख का दुष्टो के दलन का संसार की स्थिति का सृष्टि के उद्धार का और भारी प्रतिज्ञा के पालन का एक मात्र साधन ,तेंग हैं, उसी की जय हो ।

श्री गुरु गोबिन्द जी सिंह जी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व और उसका सााहित्य उसके संत होने का साक्ष्य भरता हैं ब्रज तेज और क्षात्र तेज का संयोग प्रदर्शित करने वाले कुछ उदाहरण भारतीय इतिहास में मिल जायेगे ,परन्तु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी जैसा व्यक्तित्व ,जिस में ब्रह्म क्षात्र तेज के साथ ही अदभुत कवित्व शक्ति का भी संयोग हैं विश्व साहित्य में सचमुच अनोखा और अद्वितीय है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दसवाँ अध्याय

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी– विद्वानों की दृष्टि में

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी का समस्त जीवन त्याग , बलिदान ,परिश्रम, सैनिक , योग्यता ,अद्वितीय शूरवीरता , सफलता ,अथाह प्रेम ,एवं बेमिसाल हिम्मत की एक अनोखी कहानी हैं।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जैसी सुझबूझ,हिम्मत ,दृढता तथा योग्यता रखने वाले पुरूष इस संसार में रोज –रोज जन्म नही लेते ।

ऐसी कौन सी कुर्बानी थी ,जो इस ,मदैखुदा, ने नही दी? पहले पिता का बलिदान दिया ,फिर अपनी ऑखो के तारो को शहिदी कां प्याला पिलाया ।

अपने प्रिय साथियों को जो उन्हे पुत्रों से भी अधिक प्रिय थे –उनको भी कुर्बानी किया देश तथा धर्म के लिये अड़ जाने तथा ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी से न डरने का जज्बा दिया ,गुरुगोबिन्द,सिंह जी को याद उन्हे प्रेरणा देती रहेगी ।

डॉ0 जाकिर हुसैन, भूतपूर्व राष्ट्रपति

गुरु गोबिन्द सिंह जी भारत –माता के महान और शक्तिशाली सपूत थे। पंजाब के इतिहास में उनका विशेष स्थान हैं उनके दृढ; विश्वास ,देश पर सर्वस्व न्यौछावर कर देने की भावना ,अद्वितीय वीरता ,सहकारिता ,मानवीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वतंन्त्रता और समता के लिए किये संघर्ष ने पड़ौसी राज्यो, में भी उनकी अमिट छाप अंकित कर दी है। ऐसे महान युग–पुरुष की पावन स्मृति को ह्रदय में बसाये रखना हमारा कर्तव्य हैं।

वी0वी गिरि, भूतपूर्व राष्ट्रपति

गुरुगोबिन्द सिंह जी हमारे इतिहास के एक महान युग पुरुष हैं। अपनी आध्यात्मिक शक्ति और दृढ़ विश्वास से उन्होने पंजाब के इतिहास को एक नया मोड़ प्रदान किया। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध तलवार उठाकर उन्होंने वीरता की ऐसी परम्परा स्थापित की जो समस्त भारत वासियों के लिए प्रेरणा –स्रोत हैं। इन्दिरा गाँधी "भूतपूर्व प्रधानमंत्री" महान गुरु ने समस्त मानवता को एक समझा और जाति ,धर्म एंव रंग के भेद–भाव का खण्डन करके मनुष्य को आदर का पात्र बनाया । वास्तव में वह कवि और देश –भक्त होने के साथ –साथ पैगम्बर भी थे। जिनके पावन स्पर्श से मिटटी के पुतले राष्ट्रीय चेतना ग्रहण करके जीवित हो उठे ।

गुरुजी का बताया संदेश और मार्ग हमारे अनेक सामाजिक ,आर्थिक और नैतिक रोगों का उपचार है। उनके उपदेशों का प्रचार आज के समय में राष्ट्रीय एंव भावनात्मक एकता कायम करने में सहायक हो सकता हैं।

एम0एम0 चौधरी, भूतपूर्व राज्यपाल,पंजाब

जितनी बडी; कुर्बानी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी और उनके परिवार ने देश – धर्म के लिए दी हैं, वह सारी दुनिया की तारीख में बेमिसाल हैं।

लाला जगतनारायण, भूतपूर्व मंत्री,पंजाब

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के उसूलो के अनुसार सच्चा, धर्म यही हैं कि हम जुल्म ,जबर और बेइमानी के खिलाफ आवाज उठाए ,जनता की सेवा करें ,आपस में प्रेम मुहब्बत से रहे और एक दूसरे की सेवा करें ।

रैवरिड़ जारज हरीश

उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपने सम्पूर्ण परिवार की आहुति देकर आने वाली पीढ़ियों के लिए नया मार्ग प्रस्तुत किया। यह मार्ग सत्य ,सेवा और बलिदान का मार्ग है।

हित अभिलाषी

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी 42 वर्ष जिये। इतनी थोड़ी आयु में उन्होंने साहित्य समाज और राजनीति के क्षेत्र में जो कार्य किए उनकी संगति गुरुजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की स्वल्प जीवितावधिके साथ बैठानी कठिन है। संन्देहहीन वे युग पुरुष थे। वे अपने समकालीन मनुष्यों के हृदय की धंडकन सुन सकते थे ,उनकी बाधाओं का निर्दलन कर सकते थे , उनकी आशा – आकांक्षाओं को रुपायित कर सकते थे ,जो उनकी मनुष्यत्व के आसन पर प्रतिष्ठित करने में रुकावट पैदा कर सकती थी।

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

वे सिक्खों के दशम और अन्तिम गुरु थे। पूर्ण सिपाही होते हुए भी बड़ें साहित्य– प्रेमी थे ।

गुलाब राय

गोबिन्द सिंह के हृदय पर अपने पूज्य पिता के त्याग का अत्यन्त गहन प्रभाव पड़ा। देश की विपिन दशा को सुधारने के लिए बालक गोबिन्द सिंह ने अपने अनुयायियों को ऐसे सूरमाओ में बदल दिया जो शेर की माँद में जाकर उसको ललकार सकने की जुर्रत रखते थे। निम्न से निम्न भी उच्च से उच्च के बराबर हो गए ,सारे एक हो गए।

जे0डी0 कनिघम

गुरु महाराज की शिक्षा में जादू का सा प्रभाव था। आपने जन्म – जन्मांतर से दुत्कारे जा रहे मनुष्यों को दृढ़ – निश्चयी तथा शूरवीर बना दिया। आपका प्रभाव इतना गहरा था कि जिसे न तो प्राचीन हिन्दु मतो का –कट्टरता ही रोक सकी। वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु की फ़तह ,के सिख जयकारे तथा दशमेश जी की जादु भरी शिक्षा ने उनकी काया कल्प ही कर दी और उन्हें भी ऐसा बहादुर बना दिया कि उनकी वफादारी तथा शक्ति पर स्वयं गौरव होने लगा।

मैकालिफ

लोकतंत्र का संन्देश देने वाले आप पहले भारतीय महापुरुष थे , जिन्होंने पंचो में परमेश्वर की विचार धारा का प्रचार करके गुरुमते द्वारा काम निपटाने की प्रथा –आरम्भ की ।उन्होने धीवरो ,धोबियो ,चमारो को भी ऐसा सेनापति बना दिया जिनके आंतक से बडे. –बडे. राजा भी भयभीत होने लगे ।गुरु जी की मेहबानियों के विषय में गोकुलचंद लिखते हैं: –

1.कथनी और करनी के सूरमा दास गुरु साहिबान ने भारत की मुर्दाजाति में नयी आत्मा डाल दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

2. गुरुगोबिन्द सिंह जी लोकतंत्र का संदेश देने वाले प्रथम महापुरुष थे ।

डॉ0 गोकुलचंन्द नारंग

गुरु गोबिन्द सिंह जी की महानता अद्वितीय हैं। जीवन के धोर संकट के समय ईश्वर की होनी को संघर्ष स्वीकारते हुए जिस तरह आप विचरण कर रहे हैं वैसे कोइ आध्यात्मिक शक्ति वाला साधक ही विचरण कर सकता हैं। कोई मनुष्य इस प्रकार मुसीबतों के पहाडों से टकराने का साहस नही कर सकता अपना घर संसार शत्रुओं को सौप कर आप आनन्द पुर गमन करते हैं। संग परिवार बिछुड. जाता हैं यह सभी कुछ शांत स्वभाव एंव स्वभाविकता से स्वीकार कर लेते हैं। आप श्री गुरु ग्रन्थ साहिब सुदृढ. करने में जुट गए, निःसंन्देह यह काम कोइ साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता था।

इन्दु भुषण बैनर्जी

गुरू गोबिन्द सिंह हिन्दुओ का सच्चा मुहिब्ब, हिन्दु कौम का सच्चा बही ख्वाह। देश का प्रेमी ,गमगुसार ,आहिब–ए– हिन्दु का प्रिय यूनिस –ओ –मददगार हकीकी हमदरद ,असली खैर –ख्वाह था जिसने अपनी हडिडयों की खाद और खून का पानी देकर कौमियत का पौधा लगाया जो आखिर फल लाया।

दौलतराय

गुरू गोबिन्द सिंह न केवल धार्मिक नेता ही थे ,अपितु इस देश के उच्चमकोटि के राजनीतिज्ञ ,देशभक्त ,चिन्तक ,प्रबन्धक तथा कवि थे वह किसी एक धर्म अथवा सम्प्रदाय के न होकर समूची मानवता के है आप ऐसे महापुरूष थे ,जिन्होने अपने चिन्तन तथा बुद्धि के बल–पर नये युग का आरम्भ किया । इस देश में यदि उनका जन्म न होता और वे एक नये युग का श्री गणेश न करते तो सम्भवतः यह युग अभी और एक हजार वर्ष तक स्वतंन्त्र न होता

रणवीर

गुरू गोबिन्द सिह जी के बड़प्पन के बारे में सभी इतिहासकार सहमत हैं आप सन्त भी थे और सिपाही भी। धर्म के क्षेत्र में आपने नियम निर्धारित किए,युद्धभूमि में शूरवीरता का उदाहरण प्रस्तुत किया। गद्दी पर बैठे हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप बादशाह लगते थे तथा खालसा पंथ में फकीरी का वेश धारण किए थे। उस समय ऐसे ही नेता की आवश्यकता थी ।

सैयद् मुहम्मद लतीफ

इतिहास के महर्षियों में गुरू गोबिन्द सिंह को अंसदिग्ध स्थान प्राप्त हैं। उन्होने अपने अनुयायियों को मात्र कथनी का ही उपदेश नही दिया । वरन उन्हे निर्भीक , स्वाभिमान तथा धर्म निष्ठ होकर जीवन में अग्रसर होने की शिक्षा दी हैं गुरूगोबिन्द सिंह ऐसे महापुरूष थे जिस पर न केवल पंजाब ही अपितु समुचा भारत ही गर्व कर सकता है उनके रामाअवतार एवं कृष्णावतार भारत को जिजीविषा के संस्कार देते हैं।

डॉ0ओम प्रकाश भारद्वाज

हिन्दी में वीर रस के वे एकमात्र कवि हैं। जिनकी रचनाओ की पृष्ठभुमि पर कोइ सांसारिक आकांक्षा नही हैं। जिन्हें अपनी कवित्व शक्ति का प्रयोग जीविकोपार्जन के लिए नहीं करना है। साहित्य –सृजन के लिए उनकी एकमात्र वासना , धर्मयुग का चाव है।

डॉ0महीम सिंह

वे स्वयं हिन्दी के अच्छे कवि थे । हिन्दी की शिक्षा देने के लिए उन्होने कई पाठशालाएं खोलीं थीं।

डॉ0 रामनरेश त्रिपाठी

स्वामी महेश्वरानंद ,स्वामी रामतीर्थ के समकालीन विद्वान थे । उन्होंने संस्कृत में एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था चातुर्वण्य भारत समीक्षा „। पुस्तक में उन्होंने गुरू गोबिन्द सिह साहिब के अमृतपान करवाकर जाति–पाँति के कलंक को खत्म करने की व्यवस्था पर खुशी प्रगट की है। गुरू गोबिन्द सिंह जी ऐसी पवित्र ज्योति हैं जिन्होने हमे केवल लोकतंत्र ढंग से जीवन व्यतीत करने का उपदेश ही नही दिया बल्कि स्वयं भी उस पर अमल कर दिखाया।

स्वामी महेश्वरा नंद महामण्डलेश्वर

मुगल सरकार के अत्याचारों ,जुल्मों को जिस असरदार ढंग से श्री गुरू गोबिन्द सिंह ने रोका , उनसे मुसलमान सूफी कवि बुल्लेशाह बहुत अंधिक प्रभावित हुआ ,और उसकी निम्न पंक्तियाँ समस्त इतिहास आँखो के समक्ष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ला देती हैं या प्रंस्तुत करती है,जिसमें चिडिया.पक्षी बाज हावी हुई दिखाई देतीहैं:–

„न कहुँ कब की ,न कहूँ तब की
बात कहुँ मै अब की
गर न होते गुरू गोबिन्द सिंह
तो सुन्नत होती सब की।

बुल्लेशाह

गुरू गोबिन्द सिंह जी की शक्ति ,इत्तफाक, स्व हौसले वाले राष्ट्रीय सिद्धांतों पर अमल करने के सदके ही सम्भव हो सकता है जो उन्होंने हिन्दुओं में आमतौर पर और सिक्खों में विशेष तौरपर सिंचित किए थे। गुरू का दर्जा देकर उनको गुरू –गद्दी सौपी जो बिना किसी भेदभावके समूची मनुष्य जाति के गुरू बन गए।

के0ए0म0पानीकर

प्रत्येक हिन्दु परिवार के घर एक व्यक्ति गुरू गोबिन्द सिंह जी का सिंह बनाना चाहिए,ताकि वह परिवार की रक्षा कर सके । परिवार से उनका भाव निजी परिवार से ऊपर उठाकर समूचा भारतीय परिवार होना स्वाभाविक है,क्योंकि वह राष्ट्रीय स्तर के नाम वर नेता थे ,जिनके लिए समस्त भारत एक परिवार के समान था।

पण्डित मोहन लाल मालवीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

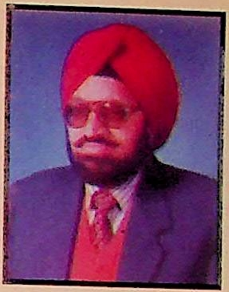

डॉ. ज्ञान सिंह मान

(शिरोमणि हिंदी साहित्यकार, पंजाब सरकार) हिंदी जगत् का एक अत्यंत चर्चित, प्रख्यात एवं प्रबुद्ध साहित्यकार तथा वरिष्ठ शिक्षा-शास्त्री। विभिन्न विधाओं एवं विषयों पर लेखक की साठ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित।

पूर्व प्रिंसिपल गवर्नमेंट कॉलिज लुधियाना, डॉ. मान यूनिर्वर्सिटी की उच्चतम उपाधियों-पी-एच. डी. तथा डी. लिट् से विभूषित।

'मृग-तृष्णा' तथा 'सूना अम्बर' उपन्यासों तथा 'कथा एक मछंदर की' नाटक पर तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार।

'नानक अर्चन' (काव्य), 'एक रथ छह पहिये' (उपन्यास), 'बैरी मीत समान' (नाटक लेखन प्रकाशन एवं निर्देशन) के लिए चार स्टेट अवार्ड।

'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान' तथा 'हिन्दी गरिमा सम्मान' (उ.प्र.) द्वारा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पन्द्रह से अधिक पुरस्कारों द्वारा अभिनंदित एवं आई.बी.सी. कैम्ब्रेज (इंग्लैड) तथा अमेरिकन वायोग्राफिक इंस्टीच्यूट (अमेरिका) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से अलकृत डॉ. मान ने अमेरिका, कनाडा, इंग्लैड, फ्रांस तथा नेपाल आदि देशों के भ्रमण के दौरान भारतीय संस्कृति, अध्यात्म तथा ज्योतिष आदि विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

सम्प्रति : सदस्य-हिंदी सलाहकार समिति (भारत सरकार)

सम्पर्क : 1658, चौक करीम पुरा, लुधियाना (पंजाब) 141008

दूरभाष : 0161-2721161, 2408472

मोबाईल : +91 9814330472

ट्रस्टी : दिवश्री फाउंडेशन, लुधियाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE